परिष्कार : शिक्षण संस्थान

शिक्षा मनोविज्ञान

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र

REET

(Level-I & II के लिए)

(नवीन संस्करण–2020)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों सहित

परिष्कार : शिक्षण संस्थान

एस–3, मंगल मार्ग, बापू नगर, जयपुर एवं
साँखला टॉवर, रिद्धि–सिद्धि, गोपालपुरा, जयपुर
Mob. : 9928097277, 8875008871, 8875008872

मनोविज्ञान का सम्प्रत्यय

- मनोविज्ञान की उत्पत्ति **दर्शनशास्त्र** से मानी गई है।
- इसका प्रारंभिक अध्ययन अरस्तू ने 'आत्मा के विज्ञान' के रूप में किया।
- मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र से अलग करने का श्रेय संरचनावादी मनोवैज्ञानिक **विलियम जेम्स** को जाता है।
- मनोविज्ञान की प्रथम प्रयोगशाला की स्थापना **विलियम वुंट** द्वारा **1879** में जर्मनी के **लिपजींग** शहर में की गई।
- **साइकोलॉजी** दो शब्दों से मिलकर बना है, जिसे निम्न प्रकार से समझा जा सकता है–

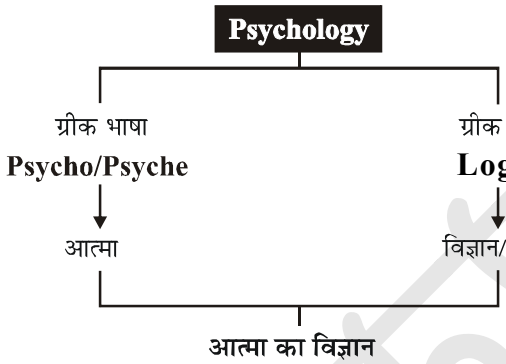

- मनोविज्ञान के अर्थ परिवर्तन क्रम को निम्न सारणी के माध्यम से समझा जा सकता है।

➲ **मनोविज्ञान के अर्थ विकास क्रम की सारणी–**

क्र.सं.	अवस्था	संबंधित शताब्दी	समर्थक मनोविज्ञान
1.	आत्मा का विज्ञान	ई. पू. चौथी सदी से 16वीं	अरस्तू, प्लेटो, **देकार्ते**, रूडोल्फ गोईक्ले
2.	मन / मस्तिष्क	17वीं सदी से 19 वीं सदी	जॉन लॉक, पॉम्पोनॉजी
3.	चेतना	19वीं	विलियम जेम्स, विलियम वुंट, चेडविक, जेम्स ली, टिचनर
4.	व्यवहार का विज्ञान	20वीं–आज तक	वाटसन, वुडवर्थ, मेक्डूगल, स्कीनर, मन, बोरिंग, हल

➲ **मनोविज्ञान के विकास क्रम की परिभाषा–**

- **वुडवर्थ** के अनुसार–''मनोविज्ञान ने सर्वप्रथम अपनी आत्मा का त्याग किया, फिर मन को त्यागा और फिर चेतना को त्यागकर वर्तमान में व्यवहार के ढंग को अपनाता है।''

➲ **मनोविज्ञान की परिभाषाएँ–**

- **वुडवर्थ** के अनुसार–''मनोविज्ञान वातावरण के सम्पर्क में होने वाले व्यवहार का अध्ययन है।''
- **वाटसन** के अनुसार–''मनोविज्ञान व्यवहार का धनात्मक / सकारात्मक विज्ञान है।''
- **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार–''मनोविज्ञान मानव एवं पशु दोनों के सभी प्रकार के व्यवहारों का अध्ययन करता है।''
- **स्कीनर** के अनुसार–''मनोविज्ञान व्यवहार का आधारभूत विज्ञान है।''
- **मेक्डूगल** के अनुसार–''मनोविज्ञान आचरण एवं व्यवहार का यथार्थ विज्ञान है।''
- **वाटसन** ने सर्वप्रथम मनोविज्ञान को व्यवहार का धनात्मक विज्ञान कहा था।

➲ **मनोविज्ञान की प्रकृति / विशेषताएँ–**

- **मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान है**–क्योंकि मनोविज्ञान में मानव एवं पशु के सभी प्रकार के व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है।
- **मनोविज्ञान धनात्मक विज्ञान है**–क्योंकि मनोविज्ञान में व्यवहार का अध्ययन करने के लिए विभिन्न विधियों व प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है तथा परिणाम ज्ञात किये जाते हैं।
- **मनोविज्ञान मनोसामजिक विज्ञान है**–क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा मनोविज्ञान में इस प्रकार के सामाजिक प्राणी के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।

☞ **मनोविज्ञान जीव विज्ञान है**–क्योंकि मनोविज्ञान के माध्यम से व्यक्ति के विकास का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है, इसलिए मनोविज्ञान को जीव विज्ञान माना जाता है।

☞ **मनोविज्ञान कला है**–क्योंकि मनोविज्ञान के माध्यम से व्यक्ति के व्यवहार में निपूर्णता एवं सौन्दर्यता आती है।

☞ **मनोविज्ञान विकास का विज्ञान है**–क्योंकि अनुसंधानों के माध्यम से मनोविज्ञान के नवीन आयाम प्रकट होते जा रहे हैं इसलिए मनोविज्ञान का विकास का विज्ञान है।

शिक्षा मनोविज्ञान

☞ शिक्षा अंग्रेजी के शब्द Education का हिंदी रुपांतरण है जो लेटिन भाषा के Educatum शब्द से बना है जिसे निम्न प्रकार से समझा जा सकता है–

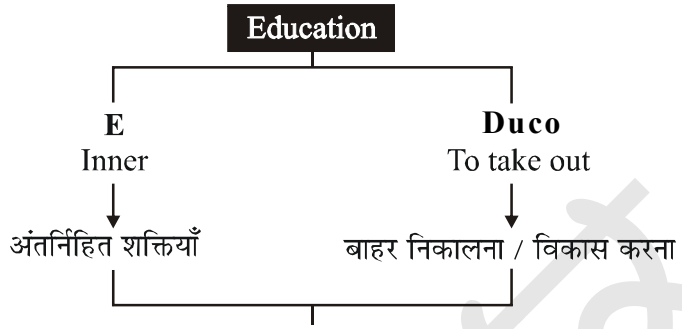

शिक्षा अंतः शक्तियों का विकास करती है / व्यवहार का परिमार्जन करती है।

➲ **शिक्षा की परिभाषाएँ–**

☞ **अरस्तू** के अनुसार–''स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण शिक्षा का कार्य है।''

☞ **फ्रोबेल** के अनुसार–''शिक्षा व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों को बाह्य शक्तियों का रूप देता है।''

☞ **गाँधीजी** के अनुसार–''शिक्षा से मेरा अभिप्राय मनुष्य के **शरीर**, **आत्मा** व **मस्तिष्क** के **सर्वांगीण** एवं **सर्वोत्तम** विकास से है।''

☞ **स्वामी विवेकानंद** के अनुसार–''शिक्षा बालक की **पूर्व निहित पूर्णता** को **अभिव्यक्त** करती है।''

☞ **पेस्टोलॉजी** के अनुसार–''शिक्षा बालक में आंतरिक शक्तियों का स्वभाविक, समरस व प्रगतिशील विकास करती है।''

➲ **शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषाएँ–**

☞ **कॉलसनिक** के अनुसार–''मनोविज्ञान के सिद्धांतों एव परिणामों का शिक्षा के क्षेत्र में अनुप्रयोग शिक्षा मनोविज्ञान है।''

☞ **क्रो एंड क्रो** के अनुसार–''शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धा अवस्था तक सभी प्रकार के सीखने के अनुभवों का वर्णन एवं व्याख्या करता है।''

☞ **स्कीनर** के अनुसार–''शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो अधिगम एंव शिक्षण से संबंधित है।''

☞ **स्कीनर** के अनुसार–''शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्तित्व के सभी पहलुओं से संबंधित है।''

➲ **शिक्षा मनोविज्ञान के उपयोग–**

⇨ वंशक्रम तथा वातावरण का पता लगाने में सहायक।

⇨ अभिवृद्धि तथा विकास को जानने में सहायक।

⇨ व्यक्तिगत भेद को समझने में उपयोगी।

⇨ व्यक्तिगत को जानने में सहायक।

⇨ बौद्धिक क्षमताओं का पता लगाने में उपयोगी।

⇨ अधिगम स्तर को जानने में सहायक।

⇨ शिक्षण विधियों प्रविधियों व सहायक सामग्री का चयन करने में उपयोगी।

⇨ अभिप्रेरणा एवं पुनर्बलन प्रदान करने में सहायक।

⇨ निर्देश एवं परामर्श में सहायक।

⇨ बालक की अभिरुचि, अभिवृत्ति, अभिक्षमताओं का विकास करने में सहायक।

⇨ मूल्यांकन में उपयोगी।

ध्यातव्य रहे–शिक्षा मनोविज्ञान के माध्यम से अध्यापक को उसकी **योग्यताओं** अथवा **क्षमताओं** से परिचित कराया जाता है, ताकि वह विद्यार्थी के स्तरानुसार शिक्षण करवा सके।

☞ वर्तमान में प्रचलित **बाल केन्द्रित शिक्षा** की **शिक्षा मनोविज्ञान** के बिना कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

बाल मनोविज्ञान / विकास

बाल मनोविज्ञान के माध्यम से बालक के सभी प्रकार के व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है।

- **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार–''बाल मनोविज्ञान बालक के जन्म से लेकर परिपक्वता तक के सभी व्यवहारों का अध्ययन करता है।''
- **क्रो एंड क्रो** के अनुसार–''बाल मनोविज्ञान गर्भाधान काल से लेकर पूर्व किशोरावस्था तक सभी प्रकार के व्यवहारों का अध्ययन करता है।''
- बाल मनोविज्ञान का जनक **पेस्टालॉजी** को माना जाता है।
- बाल विकास के आन्दोलन का जनक **स्टेनली हॉल** है।

➲ **शिक्षा मनोविज्ञान एवं बाल मनोविज्ञान के अध्ययन क्षेत्र–**

1. वंशक्रम तथा वातावरण।
2. मनोविज्ञान की अध्ययन विधियाँ
3. अभिवृद्धि तथा विकास।
4. व्यक्तिगत भेद।
5. व्यक्तित्व
6. बुद्धि।
7. अधिगम।
8. विशिष्ट बालक।
9. अभिरूचि, अभिवृत्ति, अभिक्षमता।
10. सृजनात्मकता।
11. आदतें।
12. निर्देशन एवं परामर्श
13. मानसिक स्वास्थ्य
14. संज्ञान, स्मृति, विस्मरण
15. संवेगात्मक बुद्धि
16. संवेदना, प्रत्यक्षण, सम्प्रत्यनिर्माण।

बाल विकास का इतिहास

- बाल विकास बाल मनोविज्ञान का आधुनिक या विस्तृत रूप है। बालक की शारीरिक मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, बौद्धिक आदि पक्षों में **परिपक्वता बाल विकास** कहलाती है। 17वीं सदी तक बालक के विकास के अध्ययन को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता था परन्तु प्राचीन दार्शनिक बालक के विकास के अध्ययन के लिए निरन्तर प्रयासरत रहे।
- **प्लेटो (427-344 ई.पू.)** ने अपनी पुस्तक **'Republic'** में इस तथ्य को स्वीकार किया कि बाल्यावस्था के प्रशिक्षण का प्रभाव बालक के बाद की व्यावसायिक दक्षताओं पर और समायोजन पर पड़ता है।
- **बालक के विकास का प्रथम बार वैज्ञानिक विवरण** 18वीं शताब्दी (1774 ई.) में **'पेस्टोलॉजी'** ने प्रस्तुत किया। इनका यह विवरण अपने स्वयं के साढ़े तीन वर्षीय पुत्र पर **'बेबी बायोग्राफी' (Baby Biography)** पर आधारित था। जर्मनी के चिकित्सक **डॉ. टाइडमैन** ने भी 1784 ई. में अपने बच्चों के मानसिक एवं शारीरिक विकास का निरीक्षण कर एक विवरण दिया था।
- 19वीं शताब्दी में अमेरिका में **'बाल-अध्ययन'** आन्दोलन की शुरूआत हुई। **'स्टैनली हॉल'** (इस आन्दोलन के जन्मदाता) ने 1893 ई. में इस आन्दोलन की शुरूआत की थी। इन्होंने ही **'बाल अध्ययन समिति'** (चाइल्ड स्टडी सोसायटी) एवं **'बाल वेलफेयर संगठन'** जैसी संस्थाओं का गठन कर बाल विकास सम्बन्धी अध्ययनों में **'प्रश्नावली विधि'** का प्रयोग किया।

नोट– *भारत में बाल विकास के अध्ययन की शुरुआत लगभग 1930 में हुई।*

बाल विकास की परिभाषाएँ

- **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार, ''विकास प्राणी में होने वाला प्रगतिशील परिवर्तन है जो निश्चित रूप से किसी लक्ष्य की ओर लगातार निर्देशित होता रहता है। उदाहरण के रूप में किसी भी जाति में भ्रूण अवस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक परिवर्तन है।''
- **हरलॉक** के अनुसार, ''विकास की सीमा अभिवृद्धि तक ही नहीं है अपितु इसमें प्रौढ़ावस्था के लक्ष्य की ओर प्रगतिशील क्रम निधि रहता है। विकास के परिणामस्वरूप व्यक्ति में अनेक नवीन विशेषताएँ एवं नवीन योग्यताएँ स्पष्ट होती हैं।
- **क्रो एवं क्रो** के अनुसार, ''बाल विकास वह वैज्ञानिक अध्ययन है जिसमें गर्भावस्था के प्रारम्भ से किशोरावस्था के प्रारम्भ तक होने वाले विकास का अध्ययन किया जाता है।''
- उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर निष्कर्ष निकलता है कि बाल विकास वह शाखा है जिसमें गर्भावस्था से परिपक्वावस्था तक होने वाले विकास का अध्ययन किया जाता है।

बाल विकास को प्रभावित करने वाले कारक

- **जन्म क्रम**–बालक के विकास पर परिवार के जन्म-क्रम का प्रभाव पड़ता है। जैसे प्रथम बालक की अपेक्षा दूसरे व तीसरे बालक का विकास तीव्र गति से होता है। क्योंकि बाद के बालक अपने पूर्व में जन्में बालकों से अनुकरण द्वारा अनेक बातें शीघ्रता से ग्रहण कर लेते हैं।

- **भयंकर रोग एवं चोट**–भयंकर रोग एवं चोट बालक के विकास में बाधा डालते हैं। जैसे लम्बी बीमारियों एवं गम्भीर चोट के कारण बालक का विकास अवरूद्ध हो जाता है।
- **खेल एवं व्यायाम**–नियमित खेल एवं व्यायाम बालक के शारीरिक विकास में सहायता देते हैं, शरीर व मस्तिष्क स्वस्थ रहता है। कहावत है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। इस प्रकार शारीरिक व मानसिक विकास में खेल और व्यायाम की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।
- **वातावरण**–व्यक्ति के चारों ओर जो कुछ भी है वही उसका परिवेश/वातावरण/पर्यावरण है। बालक जिस परिवेश/वातावरण में निवास करता है वहाँ का सम्पूर्ण वातावरण बालक के विकास पर पूर्ण प्रभावशाली रहता है–ये **आन्तरिक** व **बाह्य** प्रकार के होते हैं।
- **पोषाहार**–सन् 1955 में वाटरलू में अफ्रीका व भारत के बालकों के विकास पर कुपोषण के विकास का अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला है कि कुपोषण से बालकों का शारीरिक व मानसिक विकास अवरूद्ध हो जाता है।
- **प्रजाति**–प्रजाति प्रभाव के कारण भी बालकों के विकास में विभिन्नताएँ पाई जाती हैं। जैसे उत्तरी यूरोप की अपेक्षा भूमध्यसागरीय बच्चों का विकास तेजी से होता है।
- **बुद्धि**–कुशाग्र बुद्धि वाले छात्रों का शारीरिक व मानसिक विकास मन्द बुद्धि वाले छात्र के शारीरिक एवं मानसिक विकास की अपेक्षा तेज गति से होता है। कुशाग्र बुद्धि वाले बालक, मन्द बुद्धि वाले बालकों की अपेक्षा शीघ्र बोलने व चलने लगते हैं।
- **अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ**–बालक के शरीर में अनेक अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ होती हैं जिनमें से विशेष प्रकार के रस का स्राव होता है। यही रस बालक के विकास को प्रभावित करता है। यदि ये ग्रन्थियाँ इस का स्राव ठीक प्रकार से न करें तो बालक का विकास अवरूद्ध हो जायेगा।
- **आयु**–बालक में आयु वृद्धि के साथ-साथ शारीरिक विकास की गति एवं स्वरूप में भी परिवर्तन होते हैं। छोटे बच्चे का शरीर लचीला होता है। धीरे-धीरे यह कठोर हो जाता है। साथ ही बालक का मानसिक विकास भी आयु से प्रभावित होता है।
- **वंशानुक्रम कारक**–बालक के विकास को प्रभावित करने वाला यह पहला प्रमुख कारक है। अपने पूर्वजों या माता-पिता से गर्भाधान के समय बालक को जो गुण प्राप्त होते हैं उसे '**वंशानुक्रम या आनुवांशिकता**' कहते हैं। प्रायः देखा जाता है कि जिसके माता-पिता लम्बे होते हैं तो उनकी सामान्यतः सन्तानें भी लम्बी होती हैं।
- **लिंग**–बालक के शारीरिक एवं मानसिक विकास में लिंग भेद का प्रभाव पड़ता है। जन्म के समय बालकों का आकार बड़ा होता है किन्तु बाद में बालिकाओं के शारीरिक विकास की गति अपेक्षाकृत तीव्र होती है। इसी कारण बालिकाओं में मानसिक एवं यौन परिपक्वता बालकों से पहले आ जाती है।

अभ्यास प्रश्न

1. मनोविज्ञान को दर्शन शास्त्र से अलग करने का श्रेय प्राप्त है–

(अ) प्रयोजनवादियों को (ब) संरचनावादियों को (स) मनोविश्लेषणवादियों को (द) सभी को (ब)

2. मनोविज्ञान की प्रथम प्रयोगशाला की स्थापना किसके द्वारा तथा कब की गई?

(अ) विलियम वुंट, 1879 (ब) वाटसन, 1879 (स) स्कीनर, 1879 (द) मैस्लो, 1879 (अ)

3. Psychology में Psyche शब्द का अर्थ है–

(अ) चेतना (ब) आत्मा (स) व्यवहार (द) अध्ययन (ब)

4. Psyche व Logos शब्द यूनान की किस भाषा से लिए है–

(अ) लेटिन (ब) अंग्रेजी (स) संस्कृत (द) ग्रीक (द)

5. मनोविज्ञान के विकास का सही क्रम है–

(अ) मन, चेतना, आत्मा, व्यवहार (ब) चेतना, मन, आत्मा, व्यवहार

(स) आत्मा, चनेता, मन, व्यवहार (द) आत्मा, मन / मस्तिष्क, चेतना, व्यवहार (द)

6. मनोविज्ञान ने सर्वप्रथम अपनी आत्मा का त्याग किया फिर मन का त्याग किया, चेतना खोई, तथा वर्तमान में व्यवहार के रूप में जाना जाता है–यह कथन है–

(अ) वाटसन (ब) स्कीनर (स) वुडवर्थ (द) पेस्टालॉजी (स)

7. निम्न में से आत्मा के विज्ञान का समर्थक मनोवैज्ञानिक है–

(अ) विलियम वुंट (ब) वाटसन (स) जॉनलॉक (द) अरस्तू (द)

8. **'मन के विज्ञान' से पहले मनोविज्ञान का अध्ययन किस रूप में किया जाता था–**
(अ) आत्मा (ब) मस्तिष्क (स) चेतना (द) सभी (अ)

9. **आधुनिक मनोविज्ञान है–**
(अ) मन (ब) प्रेम (स) बाल केन्द्रित (द) व्यवहार का विज्ञान (द)

10. **व्यवहारवाद का प्रणेता माना जाता है–**
(अ) स्कीनर (ब) विलियम जेम्स (स) वाटसन (द) वुडवर्थ (स)

11. **संस्कृति, आदर्श, नैतिकता की शिक्षा दी जाती है–**
(अ) आदर्शवाद में (ब) प्रकृतिवाद में (स) मूल्य शिक्षा में (द) कोई नहीं (स)

12. **वर्तमान में शिक्षा प्रणाली है–**
(अ) अध्यापक केन्द्रित (ब) मनोविज्ञान केन्द्रित (स) बाल केन्द्रित (द) संविधान केन्द्रित (स)

13. **शिक्षा मनोविज्ञान ने वर्तमान स्वरूप धारण किया–**
(अ) 1905 ई. (ब) 1920 ई. (स) 1900 ई. (द) 1911 ई. (स)

14. **शिक्षा मनोविज्ञान का सर्वोच्च कार्य / उपयोगिता है–**
(अ) बालक के विकास को जानना (ब) वंशक्रम का पता लगाना
(स) बौद्धिक स्तर को जानना
(द) अध्यापक को योग्यताओं क्षमताओं से परिचित कराना ताकि वह बाल केन्द्रित शिक्षा प्रदान कर सके। (द)

15. **बाल विकास का कार्य है–**
(अ) शिक्षा प्रदान करना (ब) बालक के संपूर्ण विकास का अध्ययन करना
(स) नैतिक शिक्षा (द) बालक को स्वस्थ बनाना (ब)

16. **बाल मनोविज्ञान का जनक है–**
(अ) श्रीमती हरलॉक (ब) पेस्टालॉजी (स) पीन (द) फ्रायर्ड (ब)

17. **मनोविज्ञान के प्रारूप है–**
(अ) सैद्धांतिक मनोविज्ञान (ब) मनोविज्ञान वैधानिक मनोविज्ञान
(स) शिक्षा मनोविज्ञान (द) अ व ब दोनों (द)

18. **शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व के समस्त पहलुओं से संबंधित है–यह कथन किस मनोवैज्ञानिक का है–**
(अ) कॉलसनिक (ब) मेक्डूगल (स) स्कीनर (द) वाटसन (स)

19. **शिक्षा मनोविज्ञान जन्म से वृद्धावस्था तक सीखने के सभी अनुभवों का वर्णन एवं व्याख्या करता है–**
(अ) क्रो एंड क्रो (ब) वुडवर्थ (स) वाटसन (द) ड्रेवर (अ)

20. **मनोविज्ञान को आचरण का यथार्थ विज्ञान किसने माना है?**
(अ) ड्रेवर (ब) थॉर्नडाइक (स) नन (द) मेक्डूगल (द)

21. **मनोविज्ञान विज्ञान है, क्योंकि–**
(अ) इसमें मानव एवं पशु के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।
(ब) इसमें व्यवहार का अध्ययन करने के लिए विभिन्न परीक्षणों, विधियों, प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।
(स) क्योंकि मनोविज्ञान विकास की सभी अवस्थाओं का क्रमबद्ध अध्ययन करता है।
(द) इसमें विभिन्न अनुसंधान हो रहे हैं। (ब)

22. **मनोविज्ञान मानव एवं पशु के सभी व्यवहारों का अध्ययन करता है–किसके अनुसार–**
(अ) वाटसन (ब) मिलर (स) प्याजे (द) ड्रेवर (द)

23. **शिक्षा–**
(अ) नैतिक एवं आदर्श की भावनाओं का विकास करती है। (ब) निर्णय लेने की क्षमता है।
(स) अंत: निहित शक्तियों का विकास करती है। (द) शिक्षण करने को तैयार करती है तथा रोजगार देती है। (स)

24. **किस वाद के समर्थकों का मानना है कि मन की संरचना को जानना इतना जरूरी नहीं, जितना इसके कार्यों को–**
(अ) संरचनावाद (ब) प्रकार्यवाद (स) मनोविश्लेषणवाद (द) व्यवहारवाद (ब)

25. **संरचनावाद का अध्ययन विषय था–**
(अ) संवेदना (ब) अधिगम (स) व्यवहार (द) अंत:दृष्टि (अ)

वंशक्रम एवं वातावरण

➲ **वंशक्रम की परिभाषाएँ–**

☞ **पीटरसन** के अनुसार–''माता–पिता के माध्यम से दादा–परदादा इत्यादि पूर्वजों के गुणों का संतानों में संक्रमित होना वंशक्रम है।''

☞ **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार–''माता–पिता के शारीरिक एवं मानसिक गुणों का संतानों में संक्रमित होना वंशक्रम है।''

☞ **वुडवर्थ** के अनुसार–''वंशक्रम से तात्पर्य उन समस्त गुणों के समावेश से है जो मानव में उसकी उत्पत्ति के समय उपलब्ध थे।''

➲ **वंशक्रम की विशेषताएँ–**

☞ **संरचनात्मक विशेषता**–व्यक्ति के शरीर की संरचना संबंधी लक्षण जैसे–शरीर का लम्बा या बोना होना अंगों की माप व आकृति, बालों का रंग व आकृति, व्यक्ति का रंग रूप, अंगों की माप व आकृति इत्यादि।

☞ **क्रियात्मक विशेषताएँ**–व्यक्ति के शरीर की क्रिया प्रणालियों संबंधित लक्षण जैसे–कमजोर स्वास्थ्य, दीर्घायु, बौद्धिक क्षमता, प्रजनन क्षमता इत्यादि।

☞ **मानसिक विशेषताएँ**–वे विशेषताएँ तथा मानसिक योग्यताएँ जिनके माध्यम से व्यक्ति के व्यक्तित्व के चारित्रिक गुणों का निर्धारण होता है जैसे–बौद्धिक साहित्य, गणितीय प्रवृत्ति, कला, वैज्ञानिक प्रवृत्ति, नृत्य, संगीत इत्यादि।

☞ **असाधारण विशेषताएँ**–व्यक्ति में पाये जाने वाले असाधारण लक्षण एवं बीमारियाँ जिन्हें व्यक्ति जन्म से ही अपने माता–पिता से प्राप्त करता है। जैसे–वर्णान्धता, गंजापन, बहुअंगुलिका, मिर्गी, गर्भकेन्सर इत्यादि।

➲ **वंशक्रम के सिद्धांत–**

☞ **उत्पादन सूत्रों की निरंतरता का सिद्धांत–**

⇨ फ्रांसिस गार्टन के अनुसार संतानों में 50% लक्षण माता के पक्ष से तथा 50% पिता के पक्ष से आते हैं।

⇨ दादा–परदादा के गुण 1/2 के अनुपात में कम होते जाते हैं।

⇨ वंशक्रम के गुणों का निर्धारण करने के लिए गार्टन ने एक श्रेणीक्रम प्रस्तुत किया जिसके अनुसार–1/2, 1/4, 1/8, 1/16, 1/32 के क्रम में गुणा अगली पीढ़ी में स्थानांतरित होते हैं।

➲ **विकास के सिद्धांत–**

1. **अर्जित गुणों के हस्तांतरण का सिद्धांत**–अर्जित गुणों के हस्तांतरण से तात्पर्य है कोई भी पीढ़ी वातावरण के माध्यम से जो गुण अर्जित करती है वे अगली पीढ़ी में चले जाते हैं।

⇨ यह सिद्ध करने के लिये–लैमार्क ने जिराफ की गर्दन पर प्रयोग किया।
हैरिसन ने–कीट पतंगों पर प्रयोग किया।
मैक्डूगल ने–चूहों पर प्रयोग किया।

2. **प्रत्यागमन का सिद्धांत**–प्रत्यागमन से तात्पर्य है माता–पिता से भिन्न प्रकृति के लक्षणों का संतानों में आ जाना। प्रत्येक संतान में गुणों का निर्धारण करने में दो प्रकार के गुणसूत्र अपनी भूमिका निभाते हैं तथा संतानों में माता–पिता से **विपरित** गुण आ जाते हैँ

3. **मौलिक गुणों की ओर प्रवाह का सिद्धान्त**–

⇨ यह नियम मेण्डल ने सिद्ध किया इसलिए इसे मेण्डलवाद का नियम कहा जाता है।

⇨ मेण्डल ने यह सिद्ध करने के लिए दो प्रयोग किये–
1. छोटी मटर एवं बड़ी मटर 2. सफेद चूहों एवं काले चूहों पर

⇨ उपर्युक्त प्रयोगों के आधार पर परिणाम ज्ञात करके मेण्डल ने निष्कर्ष निकाला कि निषेचन के समय जिस भी पक्ष (माता–पिता) के गुण अधिक जागृत होते हैं संतान में उसी पक्ष के लक्षण नजर आते हैं।

4. **बीज कोष का सिद्धांत / जनन का सिद्धांत**–इस सिद्धांत के प्रवर्तक **बीजमेन** के अनुसार प्रत्येक संतान के निर्माण में दो प्रकार के कोष बनते हैं–

1. **दैहिक कोष**–देह का निर्माण कार्य
2. **उत्पादक कोष**–लिंग निर्धारण का कार्य

ध्यातव्य रहे–संतान में लिंग निर्धारण का कार्य पिता पक्ष करता है, पिता में XY गुणसूत्र तथा माता में XX गुणसूत्र पाये जाते हैं। X + X = लड़की तथा X + Y = लड़का पैदा होता है।

वातावरण

➲ **वातावरण की परिभाषाएँ–**

☞ **एनास्टसी** के अनुसार–''वातावरण वह वस्तु है जो व्यक्ति के जीन / लिंग के अतिरिक्त समस्त घटकों को प्रभावित करता है।''

☞ **बोरिंग** के अनुसार–''वातावरण उन समस्त उत्तेजनाओं का योग है जिन्हें व्यक्ति जन्म से मृत्यु तक ग्रहण करता है।''

➲ **वातावरण दो प्रकार का होता है–**

1. **आंतरिक वातावरण**–वे समस्त परिस्थितियाँ तथा घटक जो शिशु को माँ के गर्भ में प्रभावित करते हैं उन्हें आंतरिक वातावरण कहते हैं।
2. **बाह्य वातावरण**–वे समस्त परिस्थितियाँ तथा घटक जो जन्म के बाद चारों तरफ से नवजात शिशु को प्रभावित करते हैं बाह्य वातावरण की श्रेणी में आते हैं।

बाह्य वातावरण में पारिवारिक, भौगोलिक परिस्थिति, आर्थिक, सामाजिक, मनोभौतिक, विद्यालय संबंधी परिस्थितियाँ को सम्मिलित किया जाता है।

➲ **वातावरण का बुद्धि एवं व्यक्तिगत प्रभाव सिद्ध करने के लिए–**

☞ **कैण्डल ने**–फ्रांस 552 विद्वानों पर प्रयोग किया।

☞ **मॉडार्ड ने**–नाविक एवं बंजर जाति के बच्चों पर प्रयोग किया।

☞ **फ्रीमेन**–अनाथालय के वातावरण में बच्चों को रखकर प्रयोग किया तथा सिद्ध किया कि वातावरण के आधार पर बुद्धि एवं व्यक्तित्व में परिवर्तन किया जा सकता है।

☞ **वॉटसन का कथन** के अनुसार–''तुम मुझे एक नवजात शिशु दो मैं उसे वातावरण के आधार पर जो चाहुँ बना सकता हूँ।''

➲ **पोषण**–पोषण से अभिप्राय **'एक ऐसे भोजन से है जो संतुलित मात्रा में व्यक्ति के शरीर में विटामिन्स, प्रोटीन्स, कार्बोहाइड्रेट एवं खनिज लवणों की आपूर्ति करता है'** इसलिए जिस प्रकार बाल विकास में वंश क्रम की भूमिका है उसी प्रकार पोषण भी अपना विशेष महत्त्व रखता है, बालक को जब अच्छा पोषण मिलता है तो वह शारीरिक रूप से स्वस्थ रहता है। साथ ही उसके विकास की गति तेज होती है और यदि पोषण का अभाव रहता है तो उसके विकास की गति धीमी हो जाती है। शारीरिक विकास के लिए पोषण के महत्त्व को निम्न अर्थों में समझा जा सकता है–

1. पोषण शारीरिक विकास में सहायक है।
2. अनवरत विकास में सहायक है।
3. विकास की गति को तेज करता है।
4. रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।
5. रोगों के संक्रमण से बचाता है।

➲ **कुपोषण**–सन् 1955 में **वाटरलू** में **अफ्रीका** व **भारत** के बालकों के विकास पर कुपोषण का अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला गया था, कि कुपोषण से बालकों का शारीरिक व मानसिक विकास अवरूद्ध हो जाता है। यदि बालक उचित रूप से विकास नहीं कर पा रहा, तो समझना चाहिए कि वह कुपोषण का शिकार है। कुपोषण के निम्न कारण हो सकते हैं–

1. अपर्याप्त भोजन
2. खराब भोजन
3. आहार में पोषण तत्वों की कमी
4. आर्थिक स्थिति का ठीक न होना
5. भोजन संबंधित गलत आदतें
6. आहार विज्ञान के ज्ञान की कमी
7. अस्वास्थ्यकर वातावरण
8. अत्यधिक कार्य
9. परिवार की परिस्थितियाँ

उक्त परिस्थितियाँ बालकों में कुपोषण पैदा करती हैं, जिससे उनका विकास रुकता है। वर्तमान में विश्व स्तर पर कुपोषण को दूर करने के लिए कई प्रकार के प्रयास जारी हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. **माता–पिता के माध्यम से दादा–परदादा इत्यादि पूर्वजों के गुणों का संतानों में संक्रमित होना वंशक्रम है–**
(अ) एनास्टसी (ब) पीटरसन (स) वुडवर्थ (द) गार्टन (ब)

2. **जन्म से ही बालक के शरीर के अंगों का छोटा एवं बड़ा होना–वंशक्रम की विशेषता है–**
(अ) असाधारण (ब) संरचनात्मक (स) क्रियात्मक (द) मानसिक (ब)

3. **बालक के जन्म से ही किसी बीमारी का होना तथा अधिक अंगों का आना वंशक्रम की विशेषता है–**
(अ) मानसिक (ब) क्रियात्मक (स) स्वास्थ्य (द) असाधारण (द)

4. **बौद्धिक क्षमता तथा कमजोर स्वास्थ्य लक्षण है–**
(अ) संरचनात्मक (ब) क्रियात्मक (स) मानसिक (द) ब व स दोनों (ब)

5. **साहित्यकार के बेटे में जन्म से ही साहित्य संबंधित लक्षणों का पाया जाना–वंशक्रम की विशेषता है–**
(अ) मानसिक (ब) असाधारण (स) गॉड गिफ्ट (द) प्रतिभाशाली (अ)

6. **अर्जित गुणों के हस्तांतरण का नियम सिद्ध करने के लिए लैमार्क ने प्रयोग किया–**
(अ) चूहे पर (ब) जिराफ की गर्दन पर (स) मटर (द) बिल्ली (ब)

7. **बुद्धि तथा अस्तित्व पर वातावरण का प्रभाव सिद्ध करने के लिए गार्डन / गॉडार्ड ने प्रयोग किया–**
(अ) बंजर जाति के बच्चों पर (ब) विद्वानों पर (स) अनाथालय में (द) उपरोक्त सभी (अ)

8. **उत्पादक सूत्रों के निरंतरता का सिद्धांत किसने दिया–**
(अ) गॉडार्ड (ब) गावर्ड (स) गार्टन (द) वीजमैन (स)

9. **प्रत्येक संतान में माता पक्ष से लक्षण आते हैं–कितने %**
(अ) 50 + 1% (ब) 50 + 2 % (स) 50% (द) कोई नहीं (स)

10. **संतानों में लिंग निर्धारण का कार्य करता है–**
(अ) माता पक्ष (ब) पिता पक्ष (स) अ व ब दोनों (द) भगवान (ब)

11. **एक ही माता–पिता की दो संतानों में से एक में माता के तथा एक में पिता के लक्षणों का अधिक नजर आना–वंशक्रम का सिद्धांत है–**
(अ) प्रत्यागमन (ब) अर्जित गुणों का हस्तांतरण
(स) सूत्रों की निरंतरता (द) बीज कोष (अ)

12. **प्रत्येक संतान में गुणों का निर्धारण करने में कितने प्रकार के गुण सूत्र अपनी भूमिका निभाते हैं–**
(अ) 2 (ब) 46 (स) 23 (द) 22 (अ)

13. **गौरवर्ण माता–पिता की संतान का गहरा काला रंग होना–देन है–**
(अ) जागृत गुणों की (ब) उत्पादक कोष (स) देहिक कोष (द) सुप्त गुण सूत्र (द)

14. **वातावरण वह वस्तु है जो व्यक्ति के जीन के अतिरिक्त समस्त घटकों को प्रभावित करता है–**
(अ) पीटरसन (ब) बिने (स) ब्रूनर (द) एनास्टसी (द)

15. **निम्न में से वातावरण के आधार पर परिवर्तन नहीं होता है–**
(अ) लम्बाई (ब) व्यक्तित्व (स) वजन (द) लिंग (द)

16. **पूर्णतः वंशक्रम पर आधारित है–**
(अ) लम्बाई (ब) संस्कार (स) लिंग (द) आयु (स)

17. **वातावरण कितने प्रकार का होता है–**
(अ) 2 (ब) 7 (स) 6 (द) कोई नहीं (अ)

18. **वे समस्त परिस्थितियाँ जो नवजात शिशु को माँ के गर्भ में प्रभावित करती है–प्रभाव है–**
(अ) पोषण (ब) आंतरिक वातावरण (स) माँ का स्वास्थ्य (द) बाह्य स्वास्थ्य (ब)

19. **एक सम्पन्न परिवार का बालक विद्यालय में अनुशासन हीनता करता है–प्रभाव है–**
(अ) मनोशारिरिक (ब) आर्थिक (स) सामाजिक (द) पारिवारिक (ब)

20. **एक बालक जिसके पिता नहीं हैं। वह होटल पर कार्य करके विद्यालय देरी से आता है तथा विद्यालय से जल्दी पलायन कर जाता है। बालक के इस व्यवहार का कारण है–**
(अ) पारिवारिक वातावरण (ब) सामाजिक वातावरण (स) मनोशारीरिक (द) उपरोक्त में से कोई नहीं (अ)

21. **तुम मुझे एक नवजात शिशु दो में उसे डॉक्टर, भिखारी या अध्यापक बना सकता हूँ, यह कथन है–**
(अ) पियाजे (ब) स्कीनर (स) वुडवर्थ (द) वाटसन (द)

अभिवृद्धि एवं विकास

☞ अभिवृद्धि कोशिकाओं में होने वाली वृद्धि है जबकि विकास व्यक्ति के सभी पक्ष यथा शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक व नैतिक परिवर्तनों का सूचक है।

☞ अभिवृद्धि व विकास की प्रक्रियाएँ उसी समय से प्रारम्भ हो जाती हैं जिस समय से बालक का गर्भाधान होता है। ये प्रक्रियाएँ उसके जन्म के बाद भी चलती रहती हैं, इसी के फलस्वरूप वह विकास की विभिन्न अवस्थाओं से गुजरता है। जिसमें उसका शारीरिक, मानसिक व सामाजिक विकास होता है।

☞ **फ्रैंक** के अनुसार, ''अभिवृद्धि कोशिकीय गुणात्मक वृद्धि है।''

☞ **हरलॉक** के अनुसार, ''विकास, अभिवृद्धि तक ही सीमित नहीं है, इस बजाय, इसमें प्रौढ़ावस्था के लक्ष्य की ओर परिवर्तनों का प्रगतिशील क्रम निहित रहता है। विकास के परिणामस्वरूप व्यक्ति में नवीन विशेषताएँ और नवीन योग्यताएँ प्रकट होती हैं।''

☞ **अभिवृद्धि (Growth) शब्द का प्रयोग**–शरीर व उसके अंगों के भार और आकार में वृद्धि के लिए किया जाता है, इस वृद्धि को नापा व तौला जा सकता है।

☞ '**विकास (Development)**' का सम्बन्ध अभिवृद्धि से अवश्य होता है, जैसे हड्डियों की लम्बाई में वृद्धि होती है तथा ये बढ़कर या विकसित होकर मजबूत व पुष्ट हो जाती हैं।

➲ **अभिवृद्धि–**

☞ अभिवृद्धि शारीरिक अंगों में होने वाली वृद्धि की सूचक है।

☞ अभिवृद्धि निश्चित आयु तक चलने वाली प्रक्रिया है।

☞ अभिवृद्धि संख्यात्मक एवं मात्रात्मक होती है।

☞ अभिवृद्धि का मापन किया जा सकता है।

☞ अभिवृद्धि का क्षेत्र सीमित होता है।

➲ **विकास–**

☞ विकास सार्वभौमिक प्रक्रिया है।

☞ विकास जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।

☞ विकास संख्यात्मक एवं मात्रात्मक के साथ-साथ गुणात्मक पहलु का सूचक है।

☞ विकास को अनुभव किया जा सकता है।

☞ विकास का क्षेत्र व्यापक होता है।

☞ व्यक्ति के व्यवहार में नित्य होने वाले परिवर्तनों में विकास को देखा जा सकता है।

ध्यातव्य रहे–अभिवृद्धि एवं विकास आंतरिक एवं बाह्य प्रक्रिया है जो वंशक्रम तथा वातावरण से सर्वाधिक प्रभावित होते हैं।

➲ **अभिवृद्धि और विकास के सिद्धांत–**

1. **विकास की निरन्तरता का सिद्धांत**–इस सिद्धांत के अनुसार विकास जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।
2. **विकास दर की भिन्नता का सिद्धांत**–बालक में अलग-अलग अवस्थाओं में विकास की दर अलग-अलग होती है। जैसे-शैशवावस्था में मानसिक विकास का तीव्र गति से होना तथा बाद में कम होना।
3. **व्यक्तिक विकास दर की भिन्नता का सिद्धांत**–समान आयु स्तर के बालकों की विकास की दर अलग-अलग होती है।

⇨ '**श्रीमती हॉरलॉक**'-समान आयु स्तर के बालकों का बौद्धिक विकास अलग-अलग होता है।

4. **विकास की एकरूपता का सिद्धांत**–सभी प्राणियों में विकास का क्रम समान रूप से होता है।

⇨ जैसे-गर्भ में सर्वप्रथम सिर का निर्माण होना।

⇨ विकास का शारीरिक से गत्यात्मक की ओर होना।

5. **विकास का एकीकरण का सिद्धांत**–बालक पहले सम्पूर्ण अंग का संचालन करना सीखता है, उसके बाद विभिन्न भागों का।
6. **विकास का मस्तकोधमुखी सिद्धांत**–इस सिद्धांत के अनुसार बालक के शरीर का विकास निम्न अनुसार होता है।

⇨ सिर / मस्तिष्क → मुँह → गर्दन → धड़ → पैर

विकास की दिशा का सिद्धांत–

⇨ **कुप्पूस्वामी** के अनुसार-'विकास की दिशा सिर से पैर की ओर होती है।''

7. **विकास का परस्पर संबंध का सिद्धांत**–एक विकास का एक दूसरे विकास के साथ अनूठा संबंध होता है।

⇨ जैसे–शारीरिक विकास का गत्यात्मक विकास के साथ, मानसिक विकास का भाषायी के साथ, सामाजिक विकास का नैतिक विकास के साथ। एक विकास श्रेष्ठ है, तो दूसरा भी श्रेष्ठ होगा।

8. **विकास की गति का सिद्धांत**–एक विकास दूसरे विकास के साथ परिपक्वता प्राप्त करते हुए वृतुलाकार गति पैदा करता है।
अभिवृद्धि एवं विकास–वंश का तथा वातावरण का संयुक्त परिणाम है।

➲ **विकास के प्रकार**–

☞ शारीरिक विकास–गत्यात्मक विकास
☞ मानसिक विकास–भाषायी विकास
☞ सामाजिक विकास–नैतिक विकास
☞ संवेगात्मक विकास–सांवेगिक विकास

➲ **विकास की विभिन्न अवस्थाएँ**–

क्रं.सं.	अवस्था	समयावधि	कुल समय
1.	गर्भाधान काल	.....	9 माह 10 दिन (280 दिन)
2.	शैशवावस्था	0–6 वर्ष	5 वर्ष लगभग
3.	बाल्यावस्था	6–12 वर्ष	7 वर्ष लगभग
4.	किशोरावस्था	12–19 वर्ष	7–8 वर्ष लगभग

☞ **गर्भाधान काल**–गर्भ में भ्रूण सर्वाधिक माँ के पोषण से प्रभावित होता है। गर्भ में बालिकाओं के हृदय की धड़कन अधिक होती है।

⇨ गर्भाधान काल की 3 अवस्थाएँ हैं–
1. बीजकरण अवस्था 2. डिम्ब अवस्था 3. भ्रूणावस्था

A. शारीरिक अवस्था–

➲ **शैशवावस्था**–

☞ **लम्बाई**–जन्म के समय नवजात शिशु के शरीर की लम्बाई 51 सेमी (19 से 20 इंच) होती है, जो प्रारंभिक 2 वर्ष में अधिक बढ़ती है इसके बाद लम्बाई प्रतिवर्ष 5 से 7 सेमी. बढ़ते हैं।
शैशवावस्था के अंत तक लगभग 101 सेमी हो जाती है।

☞ **भार**–जन्म के समय नवजात शिशु के शरीर का भाग 3 किग्रा. लगभग (6 से 7 पौण्ड) जो प्रारंम्भिक छः माह में 2 गुना एक वर्ष में 3 गुना तथा शैशवावस्था के अंत तक लगभग 15 किग्रा हो जाता है।

☞ **सिर का आकार एवं मस्तिष्क का भार**–जन्म के समय नवजात शिशु के सिर का आकार शरीर के आकार का 1/4 भाग (22%) होता है तथा मस्तिष्क का भार लगभग 350 ग्राम होता है जो शैशवावस्था के अंत तक बढ़कर 1250 ग्राम हो जाता है।
ध्यातव्य रहे–शैशवावस्था के अंत तक बालक–बालिकाओं के सिर का आकार तथा मस्तिष्क का भार एक प्रौढ़ व्यक्ति की तुलना में 90% हो जाता है।

☞ **हड्डियों की संख्या**–नवजात शिशु में हड्डियों की संख्या लगभग 270 होती है।

☞ **मांसपेशियों के भार**–जन्म के समय नवजात शिशु को मांसपेशियों का भार शरीर के कुल भार का 23% होता है जो शैशवावस्था में अंत तक बढ़कर 25% हो जाता है।

☞ **हृदय की धड़कन**–जन्म के समय नवजात शिशु के हृदय की धड़कन प्रति मिनट लगभग 140 होती है जो शैशवावस्था के अंत तक घट कर 100 हो जाती है तथा वव्यस्क होते–होते 72 बार रह जाती है।
ध्यातव्य रहे–नवजात शिशु जन्म के समय प्रतिदिन 18–20 घण्टे सोता है।

☞ **गत्यात्मक विकास**–

क्र.सं.	समय	गति
1.	1 माह	सिर उठाना प्रारम्भ करता है।
2.	4 माह	सहारे के साथ बैठ जाता है।
3.	7 माह	बिना सहारे के बैठ जाता है।
4.	10 माह	घुटनों के बल चलना प्रारम्भ करता है।
5.	12 माह	सहारे के साथ खडा होने लगता है।
6.	14 माह	बिना सहारे के खड़ा होने लगता है।
7.	15 से 18 माह	चलने लगता है।

➲ **बाल्यावस्था–**

☞ **लम्बाई**–बाल्यावस्था के प्रारम्भ में 6 वर्ष में बालक के शरीर की लम्बाई 108 सेमी होती है जो प्रतिवर्ष 5 से 7 सेमी बढ़ती है तथा बाल्यावस्था के अंत तक 138 सेमी हो जाता है।

☞ **भार**–सामान्यतया 6 वर्ष की आयु में बालक के शरीर का भार 16 किग्रा होता है जो बाल्यावस्था के अंत तक बढ़कर 28.5 किग्रा हो जाता है।

☞ **सिर का आकार तथा मस्तिष्क का भार**–बाल्यावस्था के अंत तक मस्तिष्क का भार लगभग 1300 ग्राम हो जाता है। बाल्यावस्था के अंत तक सिर का आकार तथा मस्तिष्क का भार 1 प्रौढ़ व्यक्ति की तुलना में 95% हो जाता है।

☞ **माँसपेशियों का भार**–बाल्यावस्था के अंत तक मांसपेशियों का भार 33% हो जाता है।

☞ **हृदय की धड़कन**–बाल्यावस्था के अंत तक हृदय की धड़कन प्रति मिनट 85 हो जाती है।

☞ **श्वसन क्रिया**–बाल्यावस्था के अंत तक श्वसन क्रिया प्रति मिनट 14 से 16 हो जाती है।

☞ **दाँतों की संख्या**–बाल्यावस्था के अंत तक दाँतों की संख्या 27 से 28 हो जाता है।

⇨ चार दाँत प्रज्ञान दंत / Wisdom Teeth किशोरावस्था के अंत तथा प्रौढ़ावस्था के प्रारम्भ में आते हैं।

☞ **वय संधिकाल**–बाल्यावस्था के अंत तथा किशोरावस्था के प्रारम्भ के समय को वय संधिकाल कहते हैं, इस समय–बालिकाओं को यौन संबंधी समायोजन करने पड़ते हैं।

➲ **किशोरावस्था**–बालिकाएँ 16 वर्ष तथा बालक 18 वर्ष की आयु तक अधिकतम किशोरावस्था प्राप्त कर लेते हैं।

☞ **लम्बाई**–बालिकाओं की लम्बाई बाल्यावस्था के अंत में तथा बालकों की लम्बाई किशोरावस्था के प्रारम्भ में अधिक बढ़ती है।

☞ **भार**–किशोरावस्था के अंत तक बालकों के शरीर का भार लगभग 47–48 किग्रा हो जाता है बालिकाओं के शरीर का भार लगभग 42–44 किलोग्राम हो जाता है।

☞ **सिर का आकार तथा मस्तिष्क का भार**–16 वर्ष की आयु तक बालक–बालिकाओं के सिर तथा मस्तिष्क का लगभग पूर्ण विकास हो जाता है।

⇨ पूर्ण विकसित मस्तिष्क का भार 1300 से 1400 ग्राम हो जाता है।
वैज्ञानिकों के अनुसार मस्तिष्क का भार 1350 ग्राम हो जाता है।

☞ **हड्डियों की संख्या**–किशोरावस्था के अंत तथा प्रौढ़ अवस्था के प्रारम्भ में लगभग हड्डियों की संख्या 206 हो जाती है।

☞ **मांसपेशियों का भार**–किशोरावस्था के अंत तक मांसपेशियों का भार शरीर के कुल भार का 45% है।

ध्यातव्य रहे–किशोरावस्था के अंत तक बालक–बालिकाओं की समस्त ज्ञानेन्द्रियों तथा कमेन्द्रियों का पूर्ण विकास हो जाता है।

B. मानसिक विकास–

☞ मानसिक विकास वह प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति वातावरण का ज्ञान प्राप्त करता है। वातावरण में समायोजन स्थापित करता है। वातावरण में परिवर्तन लाने का प्रयास करता है।

☞ भाषा, चिंतन, तर्क, जिज्ञासा, व्याकरण इत्यादि मानसिक विकास के पहलू हैं।

➲ **शैशवावस्था–**

क्र.सं.	समय	क्रिया
1.	1 माह	आवश्यकता पूर्ति के लिए जोर की आवाज करना। हाथ–पैर फैंकना।
2.	2 माह	प्रकाश तथा ध्वनि की ओर आकर्षित होना तथा चमकीली वस्तुओं को ध्यान पर देखना।
3.	3 माह	बालक अपनी माँ को पहचानने लग जाता है।
4.	4 माह	अपने परिचितों को देखकर मुस्कराना तरह–तरह की आवाज करना।
5.	6 माह	अपना नाम समझने लगना तथा सुनी हुई आवाज का अनुसरण करना।
6.	8 माह	अपनी रुचि की वस्तु के साथ खेलना उसे छीनने पर रोना प्रारम्भ कर देना, जमीन पर से वस्तुओं को उठाना।
7.	10 माह	आस–पास के वातावरण को पहचानना।
8.	1 वर्ष	छोटे–छोटे शब्दों को बोलना दूसरे व्यक्ति के कार्यों का अनुकरण करना।
9.	2 वर्ष	दो–तीन शब्दों की सरल वाक्य बोलना अपना नाम बताना। शरीर के अंगों की ओर संकेत करना।
10.	3 वर्ष	पांच–सात शब्दों के वाक्य बनाना संख्याओं को दोहराना।
11.	4 वर्ष	छोटे–बड़े को समझाना, दस तक की गिनती, बोलना अक्षर लिखना।
12.	5 वर्ष	बड़े वाक्यों को बोलने लगना मुख्य रंग की पहचान करना। छोटे–बड़े भाई–बहिन में अंतर करना।

➲ **बाल्यावस्था–**

क्र.सं.	समय	क्रिया
1.	6 वर्ष	15 से 20 तक गिनती याद करना, व्याकरण की दृष्टि से सही वाक्य बोलना, सरल प्रश्न का उत्तर देना।
2.	7 वर्ष	छोटी–छोटी घटनाओं का वर्णन वस्तुओं में समानताएँ व असमानताएँ बताना।
3.	8 वर्ष	छोटी–छोटी कविताएँ व कहानियाँ याद करना, प्रतिदिन की साधारण समस्याओं का समाधान।
4.	9 वर्ष	समय, दिन, दिनांक, वार, जोड़, गुणा, बाकी, भाग संबंधित सरल समस्याओं का समाधान करना।
5.	10 वर्ष	पूर्ण गति से बोलना सही तरह से निरीक्षण करना तथा तार्किक चिंतन करना।
6.	11 वर्ष	कठिन शब्दों की व्याख्या करना जिज्ञासा एवं तर्क शक्ति का अधिकतम विकास हो जाना।
7.	12 वर्ष	तर्क के माध्यम से कठिन समस्याओं का समाधान करना।

➲ **किशोरावस्था–**

☞ बालक–बालिकाओं का मानसिक विकास 16 वर्ष की आयु तक पूर्ण हो जाता है।

☞ मानसिक विकास के आधार पर किशोरावस्था में निम्न लक्षण दिखाई देते हैं।

1. बालकों की कल्पना शक्ति अधिक हो जाती है जिसे द्विवास्वप्न देखना प्रारम्भ करते हैं।
2. शब्द भण्डार बढ़ जाता है, इसका कारण भाषा का कूटकरण करना प्रारम्भ कर देते हैं।
3. रुचियाँ व्यापक हो जाती हैं। अपनी रुचि के क्षेत्र में चुनाव करना प्रारम्भ कर देते हैं।

C. सामाजिक विकास–

⇨ सामाजिक विकास से तात्पर्य विकास की उस प्रक्रिया से है जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज में समायोजन स्थापित करता है।

⇨ परिस्थितियों के अनुसार अपनी इच्छाओं व आवश्यकताओं पर नियंत्रण करता है तथा अपने उत्तरदायित्व को समझता है।

1. **शैशवावस्था–**शैशवावस्था में सामाजिक विकास प्राथमिक अभिकरणों के माध्यम से होता है। प्राथमिक अभिकरणों के माध्यम से अनौपचारिक शिक्षा प्रदान की जाती है। प्राथमिक अभिकरणों में माता–पिता, घर–परिवार तथा आस–पड़ोस को सम्मिलित किया जाता है।
2. **बाल्यावस्था–**सामाजिक विकास द्वितीयक अभिकरणों के माध्यम से होता है। द्वितीयक अभिकरणों के अंतर्गत खेल का मैदान, विद्यालय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थान को सम्मिलित किया जाता है।

☞ **सामाजिक विकास की दृष्टि से निम्न लक्षण दिखाई देते हैं–**

1. टोली की भावना।
2. सामाजिक स्वीकृति की चाह।
3. बहिर्मुखी व्यक्तित्व।
4. यौन विवेक गुण आना प्रारम्भ हो जाते हैं।
5. उत्तर दायित्व सहयोग, सद्भावना, सहनशीलता, इत्यादि गुण आने लग जाते हैं।
6. समलैंगिक मैत्री भावना।

3. **किशोरावस्था–**किशोरावस्था में सामाजिक विकास पर बालक के शारीरिक मानसिक तथा संवेगात्मक विकास का प्रभाव पड़ता है।

1. दल की भावना।
2. विषमलैंगिक मैत्री भावना।
3. समूह के प्रति भक्ति भावना।
4. विद्रोह की भावना (किशोरावस्था में सामाजिक प्रदर्शन के अवसरों की प्रतिकूलता के कारण बालक में विद्रोह की भावना उत्पन्न होती है।)
5. सामाजिक स्थायित्व की भावना।
6. व्यवसाय चयन में रूचि।
7. सामाजिक प्रदर्शन की भावना।
8. वीर पूजा
9. मन तरंग
10. आत्म गौरव
11. आत्म सुरक्षा

D. संवेगात्मक विकास–संवेग अंग्रेजी के शब्द Emotion का हिन्दी रूपांतरण है।

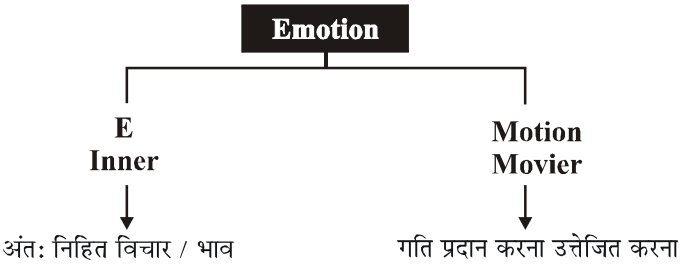

☞ **संवेग**–व्यक्ति के विचारों / भावों को गति प्रदान करते हैं।

☞ **वुडवर्थ** के अनुसार–संवेग एक गत्यात्मक प्रक्रिया है जो स्वयं व्यक्ति को महसूस होते हैं तथा सामने वाले को ज्ञानेन्द्रियों में खिंचाव के माध्यम से नजर आते हैं।

☞ **मेक्डूगल ने अपने** मूल सिद्धांत में 14 प्रकार के संवेग बताए हैं।

☞ मूल प्रवृत्तियाँ व्यक्तियों के संवेगों के विकास में सहायता प्रदान करती है।

क्र.सं.	संवेग	उत्पन्न क्रिया
1.	भय	पलायन करना, भागना
2.	क्रोध	युयुत्सा (युद्ध)
3.	घृणा	निवृत्ति / छुटकारा
4.	आश्चर्य	जिज्ञासा (बाल्यावस्था में सर्वाधिक पाया जाता है।)
5.	वात्सल्य	शिशु प्राप्ति की इच्छा / शिशु रक्षा
6.	विषाद / विवाद	शरणागति
7.	कृतिभाव	रचनात्मकता
8.	अधिकार	संचय–वृत्ति
9.	एकांकीपन	समूह की भावना
10.	कामुकता	कामभावना
11.	आत्माभिमान	आत्म गौरव की भावना (किशोरावस्था में सर्वाधिक पाया जाता है।)
12.	आत्महीनता	देन्य भाव / दीनता
13.	भूख	भोजनान्वेषण
14.	आमोद–प्रमोद	मनोरंजन / हास्य

➲ **शैशवावस्था**–जन्म के समय नवजात शिशु में कोई संवेग नहीं पाया जाता है। बालक वातावरण में परिवर्तन के कारण रोता है, वातावरण में परिवर्तन की इस क्रिया को उत्तेजना कहते हैं।

☞ **श्रीमती हॉरलॉक** के अनुसार–(1 माह में संवेग बनना प्रारम्भ होते हैं, 24 माह की आयु तक सभी प्रकार के संवेग आ जाते हैं।) 5 वर्ष की उम्र में बालक के संवेग पर वातावरण का प्रभाव पड़ना प्रारम्भ होता है।

☞ शैशवावस्था के अंत में तथा बाल्यावस्था के प्रारम्भ में बालक–बालिकाओं में दो प्रकार की ग्रंथियाँ बनना प्रारम्भ होती हैं जिनके कारण बालक–बालिकाएँ विषम लैंगिक के प्रति श्रद्धाभाव दर्शाती है।

1. **ओडीप्रस ग्रंथी**–इस ग्रंथी के प्रभाव के कारण बालक अपनी माता के प्रति श्रद्धाभाव दर्शाते हैं।
2. **एलेस्ट्रा**–इस ग्रंथी के प्रभाव के कारण बालिकाएँ अपने पिता के प्रति श्रद्धा भाव रखती हैं।

ध्यातव्य रहे–बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में ईर्ष्या अधिक पायी जाती है।

➲ **बाल्यावस्था**–

☞ इस अवस्था में बालकों के सामाजिक विकास का प्रभाव पड़ता है संवेगात्मक विकास पर संवेगात्मक, विकास की दृष्टि से इसे अस्थाई काल माना गया है।

☞ क्योंकि बाल्यावस्था में संवेग क्षणिक बनते हैं तथा क्षणिक बिगड़ते हैं।

☞ बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास की दृष्टि से निम्न लक्षण नजर आते हैं–

1. संवेगों की उग्रता में कमी
2. जिज्ञासा की प्रबलता
3. ईर्ष्या का पाया जाना। (बुद्धिमान बालक–बालिकाओं में ईर्ष्या अधिक पाई जाती है)
4. चिंता मुक्त अवस्था

➲ **किशोरावस्था–**

☞ इस अवस्था में बालक–बालिकाओं के शारीरिक विकास का उनके संवेगात्मक विकास पर प्रभाव पड़ता है। संवेगात्मक विकास की दृष्टि से किशोरावस्था में निम्नलिखित लक्षण दिखाई देते हैं–

1. भावुकता
2. विरोधी मनोदशा
3. संवेगों की भौतिकता (स्थापित)
4. कामभावना
5. स्वाभिमान की भावना
6. चिंतायुक्त अवस्था
7. स्वतंत्रता की भावना
8. नकारात्मक प्रवृत्तियों का जन्म

☞ स्टेनले हॉल का कथन है कि किशोरावस्था तनावपूर्ण, क्रांतिकारी संघर्ष की अवस्था है।

☞ **संवेगों को प्रशिक्षित करने की विधियाँ–**

1. दमन / विरोध
2. मानसिक व्यस्तता / परिश्रम शीलता
3. मार्गन्तरिकरण / शोधन
4. रेचन (वर्तमान में यह विधि सर्वोच्चय विधि है)

➲ **संज्ञानवादी विकास का सिद्धांत–**

☞ जीन पियाजे ने बालक के मानसिक विकास के विभिन्न पहलू, तर्क, चिंतन, भाषा, जिज्ञासा, निर्णय, नियंत्रण इत्यादि का अध्ययन करके अपना यह सिद्धांत प्रतिपादित किया। इनके लिए सम्मिलित रूप से स्कीमा शब्द का प्रयोग किया।

☞ जीन पियाजे ने मनोविज्ञान को जीवन विज्ञान की पृष्ठ भूमि में रखकर अध्ययन किया तथा दोनों का परस्पर संबंध एवं अंतर स्पष्ट किया।

☞ जीन पियाजे ने 1923 में एक पुस्तक की रचना की 'बाल चिंतन की भाषा'।

☞ 1976 तक विभिन्न प्रकार की 32 पुस्तकों की रचना की।

☞ जीन पियाजे ने मानसिक संरचना के निर्माण की बात कही है।

☞ मानसिक संरचना के निर्माण के लिए निम्न घटकों का होना आवश्यक है–

1. आत्मीकरण / पूर्व अनुभव
2. समायोजन
3. संतुलनिकरण

☞ मानसिक संरचनाओं के व्यवहारगत परिवर्तन की क्रिया को **स्कीमा** कहते हैं।

☞ **स्कीमा गत्यात्मक** एवं **विश्वसनीय प्रक्रिया** है।

☞ स्कीमा दो प्रकार का होता है–**1. पेशीय स्कीमा, 2. संज्ञानवादी स्कीमा**

☞ **मानसिक विकास के चार चरण / अवस्थाएँ–**

1. संवेदी पेशीये विकास अवस्था (0-2 वर्ष)–

⇨ इस अवस्था में बालक एक असहाय प्राणी की भांति व्यवहार करता है।

⇨ इस अवस्था के अंत तक बालक वस्तुओं को पकड़ने स्पर्श करने तथा वस्तुओं की ओर आकर्षित होने लग जाता है। इस अवस्था को आत्मप्रेम की अवस्था कहते हैं। यह कारण प्रवृत्ति पर आधारित अवस्था है।

2. पूर्व संक्रिया अवस्था (2–7 वर्ष)–इस अवस्था को दो भागों में बांटा जा सकता है–

(i) पूर्व प्रत्यात्मकता काल (2–4 वर्ष)–

⇨ इस अवस्था में बालक खोज की अवस्था में रहता है।

⇨ विभिन्न वस्तुओं संबंधी अनेक प्रकार के प्रश्नों के क्यों तथा कैसे का उत्तर जानने की **जिज्ञासा** रखता है।

⇨ शब्द कोष विकास की अवस्था है।

(ii) अंत: प्रज्ञ काल (4–7 वर्ष)–

⇨ इस अवस्था में बालक चिंतन की अवस्था में रहता है।

⇨ बालक किसी भी बात को मस्तिष्क द्वारा बिना तर्क किये स्वीकार कर लेता है।

⇨ इस अवस्था को खिलौनों की संग्रह की अवस्था कहा जाता है।

ध्यातव्य रहे–जॉन लॉक का कथन है बालक का मस्तिष्क एक कोरी स्लेट की भांति होता है जिस पर जैसे चाहो लिख सकते हैं। (2 वर्ष की उम्र में बालक का शब्दकोष 200 शब्द होता है। 6 वर्ष की उम्र में बालक का शब्दकोष 16,000 होता है।)

⇨ **गैसले** का कथन है कि बालक प्रारम्भिक 6 वर्ष में इतना सीख लेता है जितना आगामी 12 वर्ष में नहीं सीख पाता है।

⇨ 4–7 वर्ष की उम्र में बालक वस्तुओं के संरक्षण सिद्धांत पर आधारित कार्य करता है।

⇨ **ब्रुनर** के अनुसार बालक को किसी भी अवस्था में कुछ भी सिखाया जा सकता है।

3. मूर्त संक्रिया अवस्था–

⇨ शाब्दिक मूर्त क्रिया अवस्था / वैचारिक क्रिया अवस्था (7–12 वर्ष)

⇨ इस अवस्था में बालक कार्य कारण संबंध समझने में लग जाता है। वस्तुओं संबंधित आयतन क्षेत्रफल, परिणाम, अवबोध का बालक में विकास हो जाता है।

4. औपचारिक क्रिया अवस्था (12–18 वर्ष)–

⇨ इस अवस्था में बालक अमूर्त चिंतन करना प्रारम्भ करता है।

⇨ निष्कर्ष निकालने लगता है चिंतन मनन द्वारा सामान्य समाधान करने लगता है तथा परिकल्पनाएँ बनाने लगता है।

⇨ परिकल्पना–किसी भी समस्या का सम्भावित हल है।

⇨ **वाइगोस्टकी** ने संज्ञानवादी विकास के लिए सामाजिक वातावरण व भाषा को महत्त्वपूर्ण माना है तथा **ब्रूनर** ने सामाजिक सम्बद्धता पर विशेष बल दिया है।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्न में से विकास की विशेषता है–

(अ) निश्चित आयु तक चलने वाली प्रक्रिया (ब) शारीरिक अंगों में परिवर्तन का सूचक
(स) गुणात्मकता (द) संख्यात्मक (स)

2. किशोरावस्था को क्रांतिकारी तूफान की अवस्था किस मनोवैज्ञानिक ने कहा है–

(अ) हल (ब) वॉटसन (स) कॉल एवं ब्रस (द) स्टेनले हॉल (द)

3. विकास के संदर्भ में गलत कथन है–

(अ) सार्वभौमिक प्रक्रिया है (ब) वर्तुलाकार गति (स) दिशा सिर से पैर की ओर (द) विशिष्ट से सामान्य की ओर (द)

4. अभिवृद्धि एवं विकास प्रभावित होता है–

(अ) वंशक्रम से (ब) वातावरण से (स) दोनों से (द) उपरोक्त कोई नहीं (स)

5. गर्भाधान काल की अवस्था नहीं है–

(अ) बीजकरण (ब) डिम्ब (स) भ्रूणावस्था (द) पिम्पस (द)

6. गर्भ में संतान सर्वाधिक प्रभावित होती है–

(अ) माँ के स्वास्थ्य से (ब) माँ के पोषण से (स) पूर्वजों से (द) वंशक्रम से (ब)

7. शारीरिक विकास का अनूठा संबंध है–

(अ) मानसिक विकास से (ब) गत्यात्मक विकास से (स) सामाजिक विकास से (द) नैतिक विकास से (ब)

8. गर्भ में सर्वप्रथम निर्माण होता है–

(अ) सिर (ब) धड़ (स) पैर (द) सभी का साथ में (अ)

9. जन्म के समय नवजात शिशु का भार होता है–

(अ) 3 Kg (6-7 Pond) (ब) 12.50 Kg (स) 19.20 Pond (द) 6 Kg (अ)

10. किस आयु के बालक के समय दिन, दिनांक एवं क्षेत्रफल संबंधित अवबोध का विकास हो जाता है–

(अ) 9 वर्ष (ब) 12 वर्ष (स) 16 वर्ष (द) 6 वर्ष (अ)

11. बालक के सिर का एवं मस्तिष्क का सर्वाधिक विकास किस अवस्था में होता है–

(अ) शैशवावस्था (ब) बाल्यावस्था (स) किशोरावस्था (द) प्रौढ़ावस्था (अ)

12. अधिकांश मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बालक के मस्तिष्क का पूर्ण विकास हो जाता है–

(अ) 14 वर्ष (ब) 16 वर्ष (स) 20 वर्ष (द) 4-5 वर्ष (ब)

13. हड्डियों की संख्या सर्वाधिक पायी जाती है–
(अ) शैशवावस्था (ब) बाल्यावस्था (स) किशोरावस्था (द) उपरोक्त कोई नहीं (ब)

14. बालक अपनी माँ को पहचानना प्रारम्भ कर देता है–
(अ) 3 माह (ब) 6 माह (स) 8 माह (द) 9 माह (अ)

15. बालक जमीन पर से अपनी पसंद की वस्तु को उठा लेता है आपके अनुसार उस बालक की आयु होगी–
(अ) 5–6 माह (ब) 8-9 माह (स) 12-13 माह (द) 3-4 माह (ब)

16. एक बालक पड़ोसी के घर पर अपनी माँ की गोद में खेलता हुआ सो जाता है, उसकी माँ द्वारा बालक को पड़ोसी के यहाँ बिस्तर पर सुलाते ही वह रोना प्रारम्भ करता है, आपके अनुसार बालक की आयु होगी?
(अ) 10 माह (ब) 12 माह (स) 18 माह (द) 24 माह (अ)

17. बालक दूसरे के कार्यों का अनुकरण करने लग जाता है–वह लगभग–
(अ) 18 माह (ब) 16 माह (स) 12 माह (द) 24 माह (स)

18. बालक मुख्य रंगों की पहचान कर लेता है–
(अ) 2 वर्ष (ब) 3 वर्ष (स) 4 वर्ष (द) 5 वर्ष (द)

19. शैशवावस्था का काल है–
(अ) 0 से 5-6 वर्ष (ब) 0 से 2-3 वर्ष (स) 0 से 4-5 वर्ष (द) उपरोक्त कोई नहीं (अ)

20. निम्न में से किस घटक की ओर बालक सर्वप्रथम आकर्षित होना प्रारम्भ करता है–
(अ) ध्वनि (ब) माँ (स) प्रकाश (द) भोजन (स)

21. निम्न में से बाल्यावस्था की विशेषता नहीं है–
(अ) संवेगों की उग्रता (ब) उत्तरदायित्व की भावना (स) सामाजिक स्वीकृति की चाह (द) जिज्ञासा की प्रबलता (अ)

22. टोली की अवस्था है–
(अ) शैशवावस्था (ब) बाल्यावस्था (स) किशोरावस्था (द) उपरोक्त में कोई नहीं (ब)

23. निम्न में से सामाजिक विकास का सर्वोच्च प्राथमिक अभिकरण है–
(अ) घर (ब) परिवार (स) आस–पड़ौस (द) खेल का मैदान (अ)

24. किशोरावस्था में सामाजिक विकास प्रभावित होता है–
(अ) शारीरिक विकास से (ब) मानसिक विकास से (स) संवेगात्मक विकास (द) उपरोक्त सभी (द)

25. चिंता मुक्त अवस्था है–
(अ) शैशवावस्था (ब) बाल्यावस्था (स) किशोरावस्था (द) वृद्धावस्था (ब)

26. बालक–बालिकाओं को सर्वाधिक समायोजन करना पड़ता है–
(अ) शैशवावस्था (ब) बाल्यावस्था (स) वय संधिकाल (द) किशोरावस्था (स)

27. सर्वाधिक सामाजिक विकास होता है–
(अ) बाल्यावस्था (ब) शैशवावस्था (स) वय संधिकाल (द) प्रौढ़ावस्था (अ)

28. सामाजिक स्थायित्व एवं प्रदर्शन की भावना पायी जाती है–
(अ) शैशवावस्था (ब) बाल्यावस्था (स) किशोरावस्था (द) कोई नहीं (स)

29. बालिकाएँ एवं बालक अधिकतम किशोरावस्था प्राप्त कर लेते हैं–
(अ) 18, 16 वर्ष (ब) 16, 18 वर्ष (स) 14, 16 वर्ष (द) 16, 14 वर्ष (ब)

30. बालिकाओं की लम्बाई अधिक बढ़ती है–
(अ) बाल्यावस्था में (ब) बाल्यावस्था के अंत में (स) किशोरावस्था के आरम्भ (द) किशोरावस्था के अंत में (ब)

31. दिवास्वप्न एवं भाषा के कूटकरण की अवस्था है–
(अ) बाल्यावस्था (ब) किशोरावस्था (स) वृद्धावस्था (द) कोई नहीं (ब)

32. सम लैंगिक मैत्री भावना पायी जाती है–
(अ) शैशवावस्था (ब) बाल्यावस्था (स) किशोरावस्था (द) परिपक्वावस्था (ब)

33. **संवेग कितने प्रकार के होते हैं–**
(अ) 12 (ब) 16 (स) 14 (द) 22 (स)

34. **मेक्डूगल ने संवेगों का वर्गीकरण किस सिद्धांत में किया है–**
(अ) बीज कोष सिद्धांत (ब) मूल प्रवृत्ति सिद्धांत (स) संज्ञानात्मक सिद्धांत (द) जैविक सिद्धांत (ब)

35. **जन्म के समय नवजात शिशु रोता है–**
(अ) भूख के कारण (ब) पीड़ा के कारण
(स) भय के कारण (द) श्वसन की तकलीफ के कारण (द)

36. **किस आयु तक बालक में सभी प्रकार के संवेग आ जाते हैं–**
(अ) 2 वर्ष (ब) 5 वर्ष (स) 16 वर्ष (द) कभी नहीं (अ)

37. **शिशु के संवेगों पर वातावरण का प्रभाव पड़ने लगता है–**
(अ) 4 वर्ष (ब) 5 वर्ष (स) 2 वर्ष (द) 16 वर्ष (ब)

38. **शैशवावस्था के अंत में किस ग्रंथी के प्रभाव के कारण बालिकाएँ अपने पिता के प्रति श्रृद्धा भाव रखती है–**
(अ) आडीप्रस (ब) टेस्टेस्टेरॉन (स) एलेस्ट्रा (द) प्रॉजेस्ट्रॉन (स)

39. **संवेगात्मक दृष्टि से अस्थाई काल माना जाता है–**
(अ) शैशवावस्था (ब) बाल्यावस्था (स) किशोरावस्था (द) प्रौढ़ावस्था (ब)

40. **बाल्यावस्था में बालक–बालिकाओं के सामाजिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका है–**
(अ) माता–पिता (ब) शिक्षक एवं विद्यालय (स) समाज एवं मित्र (द) सांस्कृतिक संस्थान (ब)

41. **क्रोध संवेग के कारण उत्पन्न प्रवृत्ति है–**
(अ) युयुत्सा (ब) आत्मगौरव (स) दण्ड (द) अधिकार (अ)

42. **बालक–बालिकाएँ अपने जीवन में किसी अन्य को आदर्श के रूप में स्वीकार करते हैं–किस अवस्था में–**
(अ) बाल्यावस्था (ब) शैशवावस्था (स) किशोरावस्था (द) सभी (स)

43. **सामाजिक प्रदर्शन के अवसरों की प्रतिकूलता के कारण बालक–बालिकाओं में कौनसी भावना उत्पन्न होती है–**
(अ) वीर पूजा (ब) क्रोध (स) विरोधी–मनोदशा (द) कोई नहीं (स)

44. **समान आयु स्तर के बालक–बालिकाओं का बौद्धिक स्तर भिन्न–भिन्न होता है–यह कथन किसका है–**
(अ) हॉरलॉक (ब) स्टेनले हॉल (स) हल (द) गैसले (अ)

45. **संवेगों को प्रशिक्षित करने की किस विधि का प्रयोग करने से बालक दमित प्रवृत्ति धारण कर लेता है–**
(अ) विरोध (ब) मार्गान्तरिकण (स) परिश्रमशीलता (द) रेचन (अ)

46. **आत्म गौरव की भावना सर्वाधिक पायी जाती है–**
(अ) जन्म से–5 वर्ष (ब) 6-12 वर्ष (स) 13-19 वर्ष (द) 20-40 वर्ष (स)

अधिगम

अधिगम जीवन पर्यन्त चलने वाली वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन आता है।

➲ **परिभाषाएँ–**

☞ **गेट्स के अनुसार**–अनुभव एवं प्रशिक्षण के द्वारा व्यवहार में परिवर्तन अधिगम है।

☞ **गिलफोर्ड के अनुसार**–व्यवहार के कारण व्यवहार में आने वाला परिवर्तन अधिगम है।

☞ **क्रो व क्रो के अनुसार**–अधिगम आदतों, ज्ञान व अभिवृतियाँ का अर्जन है।

☞ **वुडवर्थ के अनुसार**–नवीन ज्ञान एवं प्रतिक्रियाओं को अर्जित करना ही अधिगम है।

➲ **अधिगम के भेद–**

☞ **गत्यात्मक अधिगम**–जब व्यक्ति गतिशील रहते हुए अधिगम करता है अर्थात् **शारीरिक कार्यों** के द्वारा सीखता है तो इसे गत्यात्मक अधिगम कहते हैं। जैसे–**खेल खेलना, साइकिल चलाना, पियानो बजाना** इत्यादि।

☞ **वाचिक अधिगम**–शब्दों द्वारा संकेतों द्वारा सीखना वाचिक अधिगम कहलाता है। **मनुष्यों में वाचिक अधिगम सर्वाधिक होता है।**

☞ **समस्या समाधान अधिगम**–किसी भी समस्या को हल करते हुए सीखना।

➲ **अधिगम की विशेषताएँ–**

☞ अधिगम सार्वभौमिक प्रक्रिया है।

☞ अधिगम वातावरण की उपज है।

☞ अधिगम समायोजन में सहायक है।

☞ अधिगम अनुभवों का संगठन है।

☞ अधिगम व्यक्तित्व में विकास है।

☞ अधिगम जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।

☞ अधिगम समस्या समाधान की योग्यता है।

☞ अधिगम प्रक्रिया व उत्पाद दोनों है।

☞ अधिगम व्यवहार में परिवर्तन है।

☞ अधिगम अप्रत्यक्ष रूप से गर्भावस्था से प्रारम्भ हो जाता है तथा प्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति जन्म के बाद सीखता है।

☞ अधिगम प्रशिक्षण द्वारा संभव है।

1. **शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धांत / अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत / अनुबंधित अनुक्रिया सिद्धांत / प्राचीन अनुबंधन सिद्धांत / पुरातन अनुबंधन सिद्धांत / सम्बद्ध प्रतिक्रिया सिद्धांत (Conditional response theory) (C.R. Thoery)**

☞ प्रवर्तक–**इवान पैट्रोविच पावलव–1904–रूसी शरीर क्रिया शास्त्री।**

☞ पावलव को **अनुबंधन का जनक** (Father of Conditionating) कहा जाता है।

☞ पावलव ने कुत्ते की लार ग्रंथि पर प्रयोग करके अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत को स्पष्ट किया।

☞ पावलव ने कुत्ते पर **तीन चरणों** में प्रयोग किए।

1. U.C.S. (भोजन) – U.C.R. (लार)

⇨ प्रथम चरण में पावलव ने कुत्ते के सम्मुख स्वाभाविक उद्दीपन/अनानुबंधित उद्दीपन / Unconditional Stimulus भोजन प्रस्तुत किया जिसके प्रति कुत्ते ने स्वाभाविक अनुक्रिया / अनानुबंधित अनुक्रिया / Unconditional Response लार प्रवाहित की।

2. C.S. (घंटी) + U.C.S. (भोजन) = U.C.R. (लार)

⇨ दूसरे चरण में अस्वाभाविक उद्दीपन / अनुबंधित उद्दीपन / Conditional Stimulus घंटी के साथ स्वाभाविक उद्दीपन भोजन प्रस्तुत किया जिसके प्रति कुत्ते ने स्वाभाविक अनुक्रिया लार प्रवाहित की।

3. C.S. (घंटी) + C.R. (लार)

⇨ तीसरे चरण में अस्वाभाविक उद्दीपन घंटी के प्रति अस्वाभाविक अनुक्रिया / अनुबंधित अनुक्रिया / Conditional Response लार प्रवाहित की।

⇨ इस प्रयोग द्वारा पावलव ने यह निष्कर्ष निकाला कि **लम्बे समय** तक स्वाभाविक तथा अस्वाभाविक उद्दीपन को एक साथ प्रस्तुत किया जाय तो व्यक्ति अस्वाभाविक उद्दीपन के प्रति भी स्वाभाविक जैसी अनुक्रिया करने लगता है तो इसे अनुकूलित अनुक्रिया कहते हैं।

➲ **अधिगम के सिद्धांत–**

2. **उद्दीपन अनुक्रिया सिद्धांत–**

अन्य नाम–प्रयास व त्रुटि का सिद्धांत / प्रयत्न व भूल का सिद्धांत / संबंधवाद का सिद्धांत / संयोजनवाद का सिद्धांत / बंध का सिद्धांत / Stimulus Response Theory (S.R. Theory)

⇨ **प्रवर्तक–एडवर्ड एल. थॉर्नडाईक**–अमेरिका–भूखी बिल्ली का प्रयोग किया।

⇨ 1913 में इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया था।

⇨ थॉर्नडाईक प्रथम मनोवैज्ञानिक है जिन्होने **विभिन्न पशुओं पर सर्वप्रथम प्रयोग** किये। पुस्तक–**एजुकेशन साइकोलॉजी।**

⇨ थॉर्नडाईक ने **अधिगम** हेतु **उद्दीपन का होना** अनिवार्य बताया एवं एक भूखी बिल्ली पर प्रयोग करते हुए इस सिद्धांत को स्पष्ट किया।

⇨ **प्रयोग**–भूखी बिल्ली–पिंजरे में बंद–बाहर रखा उद्दीपक–भोजन प्राप्ति हेतु उछल–कूद रूपी अनुक्रिया–पुनः पुनः प्रयास व त्रुटि–उचित प्रयत्नों का चुनाव–पुनः पुनः प्रयास–त्रुटि द्वारा एक बार में दरवाजा खोलना सीखा।

⇨ इस प्रयोग द्वारा थॉर्नडाईक ने यह स्पष्ट किया कि अधिगम हेतु **उद्दीपन** का होना अत्यन्त आवश्यक है एवं उद्दीपन के आधार पर अनुक्रिया करते हुए व्यक्ति अधिगम करता है।

⇨ इस सिद्धांत में बिल्ली बार–बार प्रयास व त्रुटि करती है। अतः इसे प्रयास व त्रुटि का सिद्धांत कहते हैं।

⇨ इस सिद्धांत में **उद्दीपन तथा अनुक्रिया** के बीच उत्तेजना पूर्ण संबंध बन जाते हैं अतः इसे संबंधवाद अथवा संयोजनवाद का सिद्धांत कहते हैं। (बंध का सिद्धांत)

⇨ बिल्ली उद्दीपन को देखकर अनुक्रिया करती है अतः इसे उद्दीपन अनुक्रिया सिद्धांत भी कहते हैं।

☞ **थॉर्नडाइक के नियम–**

⇨ सन् 1913 में थॉर्नडाईक ने अधिगम के तीन मुख्य नियम प्रतिपादित किये–

1. **तत्परता का नियम**–अधिगम प्रक्रिया में किसी भी व्यक्ति में तत्परता का होना अत्यन्त आवश्यक है। जैसे–किसी भी घोड़े को पानी के तालाब के पास लेकर जा सकते है। किन्तु पानी पीने को बाध्य नहीं किया जा सकता है। इस नियम का **उपनियम–रुचि का नियम** माना जा सकता है।

2. **अभ्यास का नियम**–अधिगम प्रक्रिया में निरन्तर अभ्यास का होना अत्यन्त आवश्यक है। **रहीम** के अनुसार–'करत–करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान'

उपनियम–उपायोग व अनुपयोग का नियम।

3. **प्रभाव का नियम**–अधिगम प्रक्रिया में व्यक्ति को सफलता मिले अथवा असफलता दोनों का ही निश्चित प्रभाव पड़ता है।

सकारात्मक परिणाम संतोष व नकारात्मक परिणाम असंतोष पैदा करता है। इसलिए इसे संतोष व असंतोष का नियम भी कहते हैं।

⇨ **पाँच गौण नियम–**

1. बहुअनुक्रिया का नियम
2. आंशिक क्रिया का नियम
3. मानसिक विन्यास का नियम
4. सादृश्यता का नियम
5. साहचर्य व्यवहार का नियम

3. **पुनर्बलन सिद्धांत–**

☞ प्रवर्तक–क्लार्क एल. हल

☞ इन्होंने थॉर्नडाइक के समान ही भूखी बिल्ली पर 1915 में प्रयोग कर आवश्यकता पूर्ति का सिद्धांत दिया।

☞ इस सिद्धांत के अनुसार अधिगम प्रक्रिया में बालक को निरन्तर पुनर्बलन प्रदान करना चाहिए, क्योंकि पुनर्बलन के कारण बालक की अधिगम गति निरन्तर प्रभावित होती है।

☞ अधिगम प्रक्रिया के प्रारम्भ में **अत्यधिक पुनर्बलन** प्रदान करना चाहिए एवं अधिगम प्रक्रिया के बीच में पुनर्बलन की मात्रा कुछ कम कर देनी चाहिए।

☞ जब बालक अधिगम के अंतिम चरण में हो तो उसे **गौण पुनर्बलन** प्रदान करना चाहिए।

☞ आवश्यकता अनुसार सकारात्मक अथवा नकारात्मक पुनर्बलन प्रान करने के कारण बालक की अधिगम गति में वृद्धि होती है।

☞ पुनर्बलन में कम अथवा अधिकता के कारण इसे प्रेरणा ह्रास व पुनर्बलन सिद्धांत भी कहा जाता है।

4. अनुक्रिया उद्दीपन सिद्धांत / क्रिया प्रसूत अनुबंधन सिद्धांत / सक्रिय अनबुधंन सिद्धांत / कार्यात्मक प्रतिबद्धता सिद्धांत /–पुनर्बलन पर बल दिया (Response stimulus Theory (R.S. Theory))

☞ **प्रवर्तक**–बी. एफ. स्किनर (ब्यूरहस फ्रैडरिक स्किनर), अमेरिका से (1938)

☞ **प्रयोग**–

⇨ स्किनर ने **अनुक्रियाओं** पर सर्वाधिक बल देते हुए थॉर्नडाईक के S.R. सिद्धांत को R.S.सिद्धांत में परिवर्तित कर दिया।

⇨ स्किनर ने अनुक्रियाओं पर विशेष बल दिया तथा सन **1938** में चूहों के प्रयोग द्वार इस सिद्धांत को स्पष्ट किया।

☞ **प्रयोग**–चूहे–स्किनर बॉक्स (बार प्रेसिंग ऑपरेटर्स) में बंद–उद्दीपन प्राप्ति अज्ञात–उछलकूद रूपी अनुक्रिया–पुनः पुनः अनुक्रिया द्वारा भोजन–पुनर्बलन की प्राप्ति–पुनः पुनः अनुक्रिया द्वारा उद्दीपन प्राप्त करना सीखना।

➲ **अभिक्रमित अनुदेशन**–

1. रेखीय अभिक्रमित अनुदेशन–स्किनर–पुनर्बलन
2. भारतीय अभिक्रमित अनुदेशन–क्राउडर–निदान एवं उपचार
3. मैथेटिक्स अभिक्रमित अनुदेशन–गिलबर्ट–पाठ्य वस्तु के स्वामित्व

1. **रेखीय अभिक्रमित अनुदेशन**–के प्रतिपादक स्किनर है तथा स्किनर ने पुनर्बलन पर बल दिया।

2. **भारतीय अभिक्रमित अनुदेशन**–के प्रतिपादक क्राउडर है तथा क्राउडर ने निदान व उपचार पर बल दिया। (समस्या को जानना–निदान, समस्या को दूर करना–उपचार) कहलाता है।

3. **मैथेटिक्स अभिक्रमित अनुदेशन**–के प्रतिपादक गिलबर्ट है एवं गिलबर्ट ने पाठ्यवस्तु के स्वामित्व पर बल दिया।

☞ मैथेटिक्स अभिक्रमित अनुदेशन ने गिलबर्ट ने तीन प्रकार के नियम प्रतिपादित किए–

⇨ **शृंखला का नियम**–उद्दीपन–अनुक्रिया–उद्दीपन–अनुक्रिया

⇨ **सामान्यीकरण का नियम**–सभी उद्दीपनों हेतु एक सामान्य अनुक्रिया।
उद्दीपन–1, उद्दीपन–2, उद्दीपन–3, उद्दीपन–4 (सब के लिए एक सामान्य अनुक्रिया)

⇨ **विभेदीकरण का नियम**–समस्त उद्दीपनों हेतु भिन्न अनुक्रिया–
उद्दीपन–अनुक्रिया, उद्दीपन–अनुक्रिया, उद्दीपन–अनुक्रिया, उद्दीपन–अनुक्रिया, दिन–रात, सुबह–शाम, भाई बहिन।
नोट–रेखीय अभिक्रमित अनुदेशन में **पाठयवस्तु को लघु पदों में विभक्त** करते हुए बालक के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है।

➲ **शैक्षिक महत्त्व**–

☞ यह सिद्धांत **अनुक्रियाओं पर विशेष बल** देता है।

☞ यह सिद्धांत **कर के सीखने सिद्धांत** का समर्थन करता है। (Learning by doing) **कर के सीखने का विचार सर्वप्रथम (जॉन डीवी) ने प्रस्तुत किया** था।

☞ इस सिद्धांत के अनुसार अधिगम में क्रियाओं का होना अत्यन्त आवश्यक है। यदि उद्दीपन नहीं हो तो भी बालक सफलता पूर्वक अधिगम कर सकता है।

5. सुल्तान नामक चिंपाजी का प्रयोग कोहलर ने किया था एवं सन् 1920 में Theory of Gestalt नामक पुस्तक **कोफ्का** ने लिखी थी।

☞ गैस्टाल्वादियों ने **सुल्तान** नामक चिंपाजी पर प्रयोग किया।

➲ **प्रयोग**–

1. सुल्तान–कमरे में बंद–ऊँचाई पर लटके केले–समग्राकार निरीक्षण–सुझ–बूझ का प्रयोग–बॉक्स पर चढ़कर केलों की प्राप्ति।
2. सुल्तान–पिंजरे में बंद–बाहर रखे केले–समग्राकृति का निरीक्षण–दो छड़ियों को परस्पर जोड़कर केलों की प्राप्ति।

⇨ इस प्रयोग द्वारा गैस्टाल्टवादियों ने यह निष्कर्ष निकाला कि कोई भी व्यक्ति अधिगम हेतु प्रयास एवं त्रुटि नहीं करता है अपितु **सूझ–बूझ** अथवा **अंतदृष्टि** के प्रयोग द्वारा समस्या का समाधान करता है। यह अंत:दृष्टि व्यक्ति से मस्तिष्क में **अचानक अनुभव उत्पन्न** होता है, इसे अहा अनुभव कहते हैं।

⇨ इस सिद्धांत द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में **समस्या समाधान विधि** का जन्म हुआ।

⇨ **पूर्ण से अंश की ओर** शिक्षण सूत्र तथा **विश्लेषण विधि** का जनक यही सिद्धांत है।

➲ **शैक्षिक महत्त्व**–

☞ यह सिद्धांत **मानिसक शक्तियों** के संगठन पर बल देता है।

- ☞ इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति **समग्र आकार** को देखकर समस्या का हल ढूँढता है।
- ☞ यह सिद्धांत **यांत्रिक रूप से सीखने का विरोध** करता है।
- ☞ **विज्ञान एवं गणित** जैसे समझने वाले विषयों हेतु उपयोगी सिद्धांत है।
- ☞ यह सिद्धांत कक्षा में बालक के सम्मुख **समस्या का पूर्ण रूप** प्रस्तुत करने पर बल देता है।

6. सामाजिक अधिगम सिद्धांत–

- ☞ प्रवर्तक–**अल्बर्ट बाण्डुरा–कनाड़ा** (1962–उत्तरी अमेरिका)
- ☞ बाण्डुरा के अनुसार कोई भी व्यक्ति समाज में घटित होने वाली घटनाओं के अनुकरण द्वारा अधिगम करता है।
- ☞ बाण्डुरा ने बच्चों को फिल्म दिखाकर अपने प्रयोग सिद्ध किए एवं अनुकरण सिद्धांत हेतु **चार सोपान** प्रस्तुत किए–
- ⇨ **अवधान**–ध्यान से देखना।
- ⇨ **धारण**–जो देखा उसे दिमाग में रखना।
- ⇨ **प्रस्तुतिकरण**–जो देखा उसे वैसे ही प्रस्तुत करना।
- ⇨ **पुनर्बलन**–बुरा सुनाया नकारात्मक पुनर्बलन, अच्छा सुनाया दो सकारात्मक पुनर्बलन
- ☞ **बाण्डुरा** ने यह स्पष्ट किया कि यदि समाज में उचित कार्य होते हैं तो बालक उचित अधिगम एवं यदि अनुचित कार्य होते हैं तो अनुचित अधिगम करता है अत: बालक के सामने किसी भी शिक्षक को उचित व्यवहार करना चाहिए क्योंकि बालक शिक्षण के अनुकरण द्वारा कक्षा में सर्वाधिक अधिगम करता है।

7. क्षेत्र सिद्धांत–प्रवर्तक–कुर्त लेविन

जीवन दायरा + वातावरण = क्षेत्र

- ☞ **लेविन** के अनुसार किसी भी व्यक्ति के अधिगम हेतु उस व्यक्ति का क्षेत्र उत्तरदायी होता है। कोई भी व्यक्ति क्षेत्र के कारण ही अधिगम लक्ष्यों में कमी अथवा अधिकता करता है। यह क्षेत्र **जीवनदायरा** तथा **वातावरण** का प्रतिफल है।
- ☞ जिन विषयों को व्यक्ति जानता है, उसे जीवनदायरा में सम्मिलित किया जाता है एवं जो व्यक्ति के चारों ओर विद्यमान है, उसे वातावरण कहते हैं।
- ☞ अत: **लेविन** के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति जीवनदायरा तथा वातावरण के कारण अधिगम करता है। संक्षेप अधिगम हेतु व्यक्ति का क्षेत्र उत्तरदायी है।

नोट–मैनलो तथा कॉर्ल रोजर्स दोनों मानवतावादी वैज्ञानिक माने जाते हैं।

8. चिह्न अधिगम सिद्धांत/साईन सिद्धांत–

- ☞ प्रवर्तक–**टॉल मैन**
- ☞ चिह्न का अर्थ है–व्यक्ति के वातावरण में उपस्थित वातावरणीय उद्दीपन।
- ☞ **टॉलमैन** के अनुसार किसी भी व्यक्ति को अधिगम करवाने हेतु उसके चारों ओर वातावरणीय उद्दीपन उपस्थित करने चाहिए। व्यक्ति के अधिगम में वातावरणीय उद्दीपनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है, क्योंकि वातावरणीय उद्दीपनों के कारण बालक के मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती है। अत: चारों और उपस्थित चिह्नों को अथवा संकेतों का प्रयोग करते हुए बालक को अधिगम करवाना चाहिए।

9. संरचनात्मक अधिगम–

- ☞ प्रवर्तक–**ब्रूनर**
- ☞ इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक ज्ञान की एक **निश्चित संरचना** होती है एवं बालक को उस संरचना का अधिगम करवाना चाहिए, क्योंकि सरंचना के द्वारा बालक उस ज्ञान को पुन: निर्मित करना सीख जाता है।
- ☞ तकनीकी पाठ्यक्रमों में **संरचनात्मक अधिगम सिद्धांत** का प्रयोग किया जाता है। जिसके द्वारा बालक को पुन: निर्मित करना सीख जाता है।

- ☞ **वाटसन का प्रयोग**–वाटसन ने **1925** में **व्यवहारवाद** नामक पुस्तक लिखी एवं वाटसन को **व्यवहारवाद का जनक** (Father of B.H.) जॉन ब्रोडस वाटसन (जे.बी. वाटसन) अमेरिका।
- ⇨ वाटसन ने अपने पुत्र **अल्बर्ट** पर प्रयोग करते हुए अल्बर्ट के सम्मुख बालों वाला खिलौना तथा डरावनी ध्वनि प्रस्तुत की। परिणामस्वरूप अल्बर्ट रोने लगा। कुछ समय तक यही अनुक्रिया करने पर यह देखा गया कि अल्बर्ट प्रत्येक बालों वाली वस्तु के प्रति डरकर रोना शुरू कर देता था। इस सिद्धांत को भी अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत कहते है।

☞ **शैक्षिक महत्त्व–**

⇨ यह सिद्धांत **क्रिया की पुनरावृत्ति** पर बल देता है।

⇨ यह सिद्धांत **यांत्रिक रूप से सीखने का समर्थन** करता है।

⇨ यह सिद्धांत **रटने की प्रवृत्ति का विकास** करता है।

⇨ शिक्षण ने **दृश्य–श्रव्य साधनों के प्रयोग** पर बल देता है।

⇨ इस सिद्धांत के द्वारा बालकों में **अच्छी आदतों का विकास** संभव है।

⇨ यह सिद्धांत **भाषा एवं व्याकरण सीखने हेतु** उपयोग सिद्धांत है।

⇨ इस सिद्धांत से बालकों में भय, डर, घृणा इत्यादि के भाव विकसित किए जा सकते हैं और दूर भी किए जा सकते हैं।

⇨ बालकों के सम्मुख **अपशब्दों का प्रयोग नहीं** करना चाहिए, इससे उनमें **कुन्ठा की** भावना निर्मित होती है।

➲ **अधिगम का स्थानान्तरण / अंतरण–** अधिगम स्थानान्तरण तीन प्रकार का माना जाता है–

1. **सकारात्मक स्थानान्तरण–**जब पूर्व में सीखा गया ज्ञान नवीन ज्ञान को सीखने में सहायता उत्पन्न करे, तो इसे **सकारात्मक स्थानान्तरण** कहते हैं। जैसे–हिन्दी भाषा सीखकर संस्कृत भाषा सीखने में सहयोग मिलता है।
2. **नकारात्मक स्थानान्तरण–**जब पूर्व में सीखा गया ज्ञान नवीन ज्ञान को सीखने में बाधा उत्पन्न करे तो इसे नकारात्मक स्थानान्तरण कहते हैं। जैसे–अंग्रेजी पढ़कर संस्कृत भाषा सीखना कठिन होता है।
3. **शून्य स्थानान्तरण–**जब पूर्व में सीखा गया ज्ञान न तो सहायता प्रदान करे और न ही बाधा तो इसे शून्य स्थानान्तरण कहते हैं। जैसे–रहीम के दोहे याद करने के बाद कबीर के पढ़ना।

➲ **अधिगम के अवरोध–**

☞ **पूर्वोन्मुखी अवरोध–**पूर्व में सीखी गई सामग्री बाद में सीखी जाने वाली सामग्री के प्रति अवरोध उत्पन्न करें।

☞ **पृष्ठोन्मुखी अवरोध–**बाद में सीखी गई सामग्री पूर्व में सीखी गई सामग्री के प्रति अवरोध उत्पन्न करे तो इसे पृष्ठोन्मुखी अवरोध कहते हैं।

☞ **राबर्ट एम. गैने** के अनुसार अधिगम 8 प्रकार का होता है–1. संकेत 2. उद्दीपन–अनुक्रिया 3. शृंखला 4. शाब्दिक 5. बहुविभेदन 6. प्रत्यय 7. सिद्धांत 8. समस्या–समाधान। यह एक सोपानिकी के रूप में बतलाये गये हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्न में से जो सीखने अथवा अधिगम का नियम नहीं है-
(अ) तत्परता (ब) पढने का (स) प्रभाव व परिणाम का (द) अभ्यास का — (ब)

2. अर्न्तदृष्टि पर प्रभाव डालने वाले तत्व है -
(अ) प्रयत्न एवं त्रुटि (ब) अनुभव (स) बुद्धि (द) उपर्युक्त सभी — (द)

3. अधिगम की सफलता का मुख्य आधार माना जाता है–
(अ) दण्ड व आरोप (ब) पुरस्कार व प्रशंसा (स) लक्ष्य प्राप्ति की उत्कृष्ट इच्छा (द) अधिकारी बनने की इच्छा — (स)

4. अधिगम को प्रभावित करने वाले घटक हैं-
(अ) उचित वातावरण (ब) प्रेरणा (स) परिपक्वता (द) उपर्युक्त सभी — (द)

5. अनुबन्ध प्रयोगों में अनुबंधित अनुक्रियाओं का विलोपन किस कारण होता है।
(अ) प्रत्याशा में कमी (ब) अवरोध में वृद्धि (स) पुनर्बलन की अनुपस्थिति (द) अन्तर्नोद की कमी — (स)

6. निम्नांकित में से किस परिस्थिति में प्राणी में निष्क्रियता सबसे अधिक पायी जाती हैं।
(अ) दंड प्रशिक्षण (ब) अर्जित नि:सहायता (स) मुक्ति सीखना (द) परिवर्तन सीखना — (ब)

7. टालमैन के सिद्धान्त में किस तरह के व्यवहार की व्याख्या पर बल डाला गया है।
(अ) क्रियाप्रसूत व्यवहार (ब) उद्धेश्यपूर्ण व्यवहार (स) आण्विक व्यवहार (द) चवर्ण व्यवहार — (द)

8. पुनर्बलन के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया–
(अ) कोहलर ने (ब) पॉवलाव ने (स) फ्रायड ने (द) हल ने — (द)

9. पावलव ने अधिगम का जो सिद्धान्त प्रतिपादित किया था, वह है–
(अ) आत्मीकरण (ब) अनुकूलित अनुक्रिया (स) आंशिक क्रिया (द) बहुक्रिया — (ब)

10. निम्न में से पूर्ण कारक वाद के नियमों से जो संबंधित नहीं है , वह है-
(अ) समरूपता (ब) निरंतरता (स) समीपता (द) विरूपता (अ)

11. जब व्यक्ति असफलता , दुःख पीड़ा को बलपूर्वक भूलने का प्रयास करता है , इसे -
(अ) प्रतिगमन (ब) तादात्मीकरण (स) प्रक्षेपण (द) दमन (द)

12. सीखने के मुख्य नियमों के अतिरिक्त गौण नियम भी है , जो मुख्य नियमों को विस्तार देते है। गौण नियम हैं–
(अ) प्रभाव का नियम (ब) अभ्यास का नियम (स) निकटता का नियम (द) प्रयत्न व भूल का नियम (स)

13. एक विकलांग बालक अत्यधिक परिश्रम करके कक्षा में प्रथम आने का प्रयास करता है। इसे किस प्रतिरक्षक प्रणाली में रखेंगे-
(अ) पुष्टिकरण (ब) प्रक्षेपण (स) प्रतिगमन (द) क्षतिपूर्ति (द)

14. जब पूर्व प्राप्त अनुभव नवीन समस्या को हल करने में सहायक होता है, वह है-
(अ) एक पक्षीय स्थानान्तरण (ब) धनात्मक स्थानान्तरण (स) ऋणात्मक स्थानान्तरण (द) उपर्युक्त सभी (ब)

15. फ्रॉयड के शब्दों में विस्मरण अधोलिखित में से किसका प्रतिफल है-
(अ) उदान्तीकरण (ब) ह्रास (स) अवरोध (द) दमन (द)

16. व्यवहार के S-R सम्प्रत्ययन को अस्वीकार कर S-O-R सम्प्रत्यय किसने प्रस्तावित किया-
(अ) वाट्सन (ब) वुडवर्थ (स) गूथरी (द) हल (ब)

17. अधिगम स्थानान्तरण में सामान्य तथा विशिष्ट अंश का सिद्धान्त किस मनोवैज्ञानिक ने दिया-
(अ) बलूम (ब) सी.एच. जुड (स) स्कीनर (द) स्पीयरमैन (द)

18. गेस्टाल्ट का अर्थ है-
(अ) व्यवहार के रूप में (ब) परिवर्तन के रूप में (स) मशीनों के रूप में (द) समग्र के रूप में (द)

19. निम्नलिखित में से कौनसा सिद्धान्त 'क्रियाप्रसूत अनुबन्धन' में अन्तर्निहीत है-
(अ) नैमित्तिक अनुबंधन (ब) उपयोग का नियम (स) अनुक्रिया सामान्यीकरण (द) प्रभाव का नियम (अ)

20. थॉर्नडाइक के सीखने का नियम है-
(अ) प्रभाव का नियम (ब) मनोवृत्ति का नियम (स) आत्मसात का नियम (द) साहचर्य का नियम (अ)

21. ''सीखना आदतों , ज्ञान व अभिवृत्तियों का अर्जन है।'' कथन है-
(अ) वुडवर्थ (ब) क्रो एण्ड क्रो (स) गेट्स (द) स्कीनर (ब)

22. किस विधि में विभिन्न विषयों पर सभाओं का आयोजन किया जाता है और इन विषयों के हर पहलू का छात्रों द्वारा अध्ययन किया जाता है–
(अ) वाद-विवाद विधि (ब) विचार-गोष्ठी विधि (स) वर्कशॉप विधि (द) बेसिक विधि (स)

23. स्वामित्व अधिगम विधि का प्रतिपादन किया-
(अ) ब्लूम (ब) स्कीनर (स) हल (द) प्याजे (अ)

24. कोहलर का अधिगम-सिद्धान्त निम्नलिखित नाम से जाना जाता है -
(अ) उद्धीपन-अनुक्रिया का सिद्धान्त (ब) अर्न्तदृष्टि का सिद्धान्त (स) प्रयास एवं त्रुटि का सिद्धान्त (द) पुनर्बलन का सिद्धान्त (ब)

25. अधिगम स्थानान्तरण का सबसे पुराना सिद्धान्त है-
(अ) समतात्विक सिद्धान्त (ब) मानसिक शक्ति का सिद्धान्त (स) बहुतात्विक सिद्धान्त (द) कोई नहीं (ब)

26. शिक्षक द्वारा बालकों को किस प्रकार पाठ्य विषय के प्रति आकर्षण उत्पन्न किया जाए-
(अ) ध्यान केन्द्रित करके (ब) सामाजिक गुणों द्वारा (स) चरित्र निर्माण द्वारा (द) इनमें से कोई नहीं (अ)

27. संप्रेषण से आशय है-
(अ) मनोरंजन (ब) विचारों का आदान-प्रदान (स) इच्छा पूर्ति (द) उपर्युक्त दोनों (ब)

28. तत्परता के नियम का सम्बन्ध है -
(अ) अधिगम से (ब) खेल से (स) अभिप्रेरणा से (द) स्मृति से (अ)

29. अधिगम क्या नहीं है-
(अ) अनुभव द्वारा व्यवहार परिवर्तन (ब) विकास (स) अनुभवों का संगठन (द) सहज व्यवहार (ब)

30. पुनरावृत्ति का सिद्धान्त दिया -
(अ) केम्स ने (ब) स्किनर (स) स्टैनले टॉल (द) थॉर्नडाइक (ब)

बुद्धि

☞ बुद्धि वह योग्यता है जिसके माध्यम से व्यक्ति विचार विमर्श करता है, निर्णय लेता है, नियंत्रण करता है, सोच–समझकर उपयोगी–अनुपयोगी का चयन करता है तथा वातावरण की परिस्थिति का शिकार नहीं बनता है।

☞ **अल्फ्रेड बिने** के अनुसार बुद्धि–**ज्ञान, आविष्कार, निर्देश व आलोचना** जैसे चार शब्दों में निहित है।

➲ **बुद्धि में निम्न प्रकार की योग्यताएँ–**

1. **अधिगम की योग्यता**–बुद्धि में सीखने की योग्यता होती है।

⇨ **बकिंघम** के अनुसार–''बुद्धि में सीखने की योग्यता होती है।''

⇨ **डियर बॉर्न** के अनुसार–''बुद्धि में सीखने तथा अनुभव का लाभ उठाने की योग्यता है।''

2. **समायोजन की योग्यता**–

⇨ **स्टर्न** के अनुसार–''बुद्धि में विभिन्न नवीन परिस्थितियों में समायोजन की सामान्य योग्यता होती है।''

⇨ **क्रूज** के अनुसार–''बुद्धि में विभिन्न नवीन परिस्थितियों में अच्छे प्रकार से समायोजन की योग्यता होती है।''

3. **समस्या समाधान की योग्यता**–

⇨ **बर्ट** के अनुसार–''बुद्धि में निर्णय करने नियंत्रण करने तथा समझने की योग्यता होती है। जिसके माध्यम से समस्या का समाधान होता है।''

ध्यातव्य रहे–समस्या समाधान की योग्यता का बर्ट के साथ वैश्लर ने समर्थन किया।

4. **अमूर्त चिंतन की योग्यता**–

⇨ **टरमन** के अनुसार–''कोई व्यक्ति उसी अनुपात में बुद्धिमान होता है जिस अनुपात में उसमें अमूर्त चिंतन पाया जाता है।''

⇨ ''अमूर्त चिंतन में योग्यता का समर्थन टरमन के साथ गैरेट ने भी किया है।''

➲ **बुद्धि की विशेषताएँ (प्रकृति)**–

1. बुद्धि जन्मजात होती है। (रॉस के अनुसार)
2. बुद्धि के बिना व्यक्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती है।
3. अलग–अलग व्यक्तियों का बौद्धिक स्तर अलग–अलग होता है।
4. ज्ञान तथा बुद्धि में अंतर होता है बुद्धि का क्षेत्र व्यापक है ज्ञान का सीमित होता है। बुद्धि के माध्यम से ज्ञान अर्जित किया जाता है।
5. लिंग के आधार पर बुद्धि में कोई भेद नहीं होता है, बुद्धि में अंतर उपयोग के आधार पर उत्पन्न होता है।

➲ **बुद्धि के प्रकार**–

1. सामाजिक बुद्धि
2. मूर्त बुद्धि / गत्यात्मक या यांत्रिक
3. अमूर्त बुद्धि / शाब्दिक बुद्धि

☞ **उपर्युक्त बुद्धि के तीनों प्रकार थॉनडाइक व गैरेट** ने बताएँ हैं जो सर्वमान्य है।

1. **सामाजिक बुद्धि**–सामाजिक बुद्धि के माध्यम से व्यक्ति समाज में समायोजन स्थापित करता है, व्यक्ति का व्यवहार कौशल व्यक्तित्व तथा चारित्रित गुणों का निर्धारण सामाजिक बुद्धि के माध्यम से होता है।

व्यक्ति की मनोवृत्तियाँ तथा स्वभाव सामाजिक बुद्धि के लक्षण हैं।

2. **मूर्त बुद्धि**–बुद्धि का वह भाग जो विषय–वस्तु तथा उद्देश्य से निहित होने पर कार्य करता है। उसे मूर्त बुद्धि / गत्यात्मक तथा यांत्रिक बुद्धि भी कहा जाता है।

3. **अमूर्त बुद्धि**–व्यक्ति के विचारों को शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त करने की कला अमूर्त बुद्धि की देन है।

अमूर्त बुद्धि के माध्यम से व्यक्ति चिंतन तथा मनन द्वारा अपनी समस्या का समाधान करता है। इसे शाब्दिक बुद्धि भी कहते हैं।

➲ **बुद्धि के सिद्धांत**–

1. **बुद्धि का एक कारक सिद्धांत (बिने)**–बिने के अनुसार बुद्धि केन्द्रीय प्रवृत्ति का मान जिसके माध्यम से विभिन्न प्रकार के मानसिक कार्य किये जाते हैं।

बुद्धि के एक कारक सिद्धांत का समर्थन–**स्टर्न, टर्मन ने किया है।**

2. **बुद्धि का द्विकारक सिद्धांत (स्पीयरमैन)**–स्पीयर के अनुसार बुद्धि में दो प्रकार के कारक पाए जाते हैं।

(i) सामान्य कारक (G-Factor) (ii) विशिष्ट कारक (S-Factor)

(i) **सामान्य कारक (G-Factor)** –सामान्य कारक की पहचान व्यक्ति द्वारा अंतदृष्टि के माध्यम से किए गए कार्यों से होती है।

(ii) **विशिष्ट कारक (S-Factor)**–विशिष्ट कारकों की पहचान व्यक्तियों द्वारा किए गए अनोखे कार्यों के माध्यम से होती है, जिनके माध्यम से समाज एवं संस्कृति में व्यक्ति की पहचान बनती है।

ध्यातव्य रहे–स्पीयर मैन ने ही G + S कारक को मिलाकर तीसरा कारक बता दिया अत: इस सिद्धांत को **त्रि–कारक सिद्धांत** भी कहा जाता है।

3. **बुद्धि का बहुकारक सिद्धांत / बहुतत्व सिद्धांत–**

☞ **थार्नडाइक** के अनुसार बुद्धि में सामान्य कारक नाम की कोई सत्ता नहीं होती है।

☞ बुद्धि में **असंख्य** प्रकार के तत्व पाए जाते हैं जिनके माध्यम से बुद्धि अलग–अलग प्रकार से कार्य करती है।

☞ इस सिद्धांत को **परमाणुवाद, बालू का सिद्धांत** भी कहते हैं।

4. **बुद्धि का समूह कारक सिद्धांत–**

☞ **थर्स्टन और कैली** के अनुसार–''बुद्धि में सामान्य एवं विशिष्ट कारक नाम की कोई योग्यता नहीं पाई जाती है मानसिक कार्यों के आधार पर बुद्धि में समूह का निर्माण होता है।''

☞ इनके अनुसार **PMA** पुस्तक में 13 कारकों का उल्लेख है जिनमें से 7 महत्त्वपूर्ण है जबकि कैली ने स्वतंत्र रूप से **Cross Roads in the Mind of Man** पुस्तक में 9 समूह कारकों का उल्लेख किया है जो निम्न हैं–**संख्यात्मक, शाब्दिक, स्मृति, स्थानिक, शाब्दिक प्रवाह, तार्किक, प्रत्यक्षीकरण, साहचर्य, समस्या समाधान।**

5. **बुद्धि का पदानुक्रमिक सिद्धांत–बर्ट एवं फिलीप बर्नन** के अनुसार–व्यक्ति की बुद्धि एक क्रमिक रूप में कार्य करती है।

6. **बुद्धि का त्रि–तंत्र सिद्धांत–**

☞ रॉबर्ट एस. बर्ग ने बुद्धि की आलोचनात्मक तरीके से व्याख्या की है।

☞ बर्ग के अनुसार किसी व्यक्ति से तर्क करते समय सामने वाला व्यक्ति के विचारों को जिस प्रकार से स्वीकृति या अस्वीकृति प्रदान करता है वही उसकी बुद्धि है।

☞ व्यक्ति के विचारों के निर्माण के लिए तीन प्रकार के घटक अपनी भूमिका निभाते हैं–

1. शीर्षक / संदर्भ 2. पूर्व अनुभव 3. पात्र / घटक

7. **बुद्धि का बहु–बुद्धि सिद्धांत**–हावर्ड गार्डनर ने **सात** प्रकार की बुद्धि बताई है जो प्रत्येक व्यक्ति में अलग–अलग होती है। जिसके माध्यम से व्यक्ति अलग–अलग प्रकार के कार्य करता है।

1. भाषायी बुद्धि 2. तार्किक / गणितीय बुद्धि 3. शरीर गति बुद्धि
4. संगीत बुद्धि 5. स्थानिक बुद्धि 6. व्यक्तिक आत्म बुद्धि
7. व्यक्तिक अन्य

8. **बुद्धि का संरचनात्मक सिद्धांत / त्रि–आयामी सिद्धांत / SOI Model**–इस सिद्धांत के प्रवर्तक गिलफोर्ड के अनुसार बुद्धि में 3 आयाम पाये जाते हैं। जिनके आधार पर विभिन्न प्रकार के मानसिक कार्य किये जाते हैं।

1. प्रथम विमा (आयाम)–किसी कार्य को करते वक्त निहित विषय–वस्तु जो चार प्रकार की होती है–आकृति, संकेत, शब्द, व्यवहार

2. बुद्धि की द्वितीय विमा (आयाम)–बुद्धि की द्वितीय विमा किसी कार्य को करते वक्त निहित **मानसिक संक्रिया** जो पांच प्रकार की होती है–1. संज्ञान, 2. स्मरण, 3. परम्परागत चिंतन, 4. गैर परम्परागत चिंतन, 5. मूल्यांकन

3. तृतीय विमा (आयाम)–विभिन्न प्रकार की विषय वस्तु अलग–अलग मानसिक संक्रिया से मिलकर कार्य करती है। इस प्रकार छ: प्रकार के परिणाम व उत्पाद बनते हैं–1. इकाई 2. वर्ग 3. संबंध 4. प्रणाली 5. प्रत्यावर्तन 6. निहितार्थ

ध्यातव्य रहे–उपर्युक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष निकालकर **गिलफोर्ड** ने कहा बुद्धि में $4 \times 5 \times 6 = \mathbf{120}$ प्रकार की मानसिक योग्यताएँ होती हैं, जिनके माध्यम से व्यक्ति अलग–अलग प्रकार के कार्य करता है।

कुछ मनोविज्ञानियों का मानना है विषय–वस्तु पांच प्रकार की होती है इस आधार पर बुद्धि में मानसिक योग्यताएँ $5 \times 5 \times 6 = \mathbf{150}$ प्रकार की होती है।

➲ **बुद्धि का मापन–**

☞ बुद्धि का प्रथम परीक्षण बिने द्वारा 1905 में तैयार किया गया।

☞ 1908 में बिने ने साइमन के साथ मिलकर मानसिक आयु का सप्रत्यय (शब्द विचार) दिया।

☞ मानसिक आयु से तात्पर्य किसी वास्तविक आयु स्तर का बालक जिस स्तर के परीक्षण को अच्छी तरह सम्पन्न कर लेता है उस परीक्षण की आयु उस बालक की **मानसिक आयु** होती है।

☞ यह बालक की वास्तविक आयु से कम तथा ज्यादा हो सकती है।

☞ वास्तविक आयु मानसिक आयु के अनुपात को ध्यान में रखकर **स्टर्न** नामक मनोवैज्ञानिक ने 1912 में एक सूत्र स्थापित करने का प्रयास किया उसी के आधार पर वर्तमान सूत्र **टरमन** ने **1916** में दिया जिसे **बुद्धि लब्धि** का सूत्र कहा जाता है।

$$\text{बुद्धि लब्धि I.Q.} = \frac{\text{मानसिक आयु M.A.}}{\text{वास्तविक आयु C.A.}} \times 100$$

☞ एक 25 वर्ष का बालक 16 वर्ष के बालक के लिए बनाये गये परीक्षण को सम्पन्न कर पाता है उस बालक की बुद्धि लब्धि कितनी होगी?

$$\text{I.Q.} = \frac{16}{\cancel{25}} \times \cancel{100}^{4} = 64$$

☞ एक बालक जिसकी वास्तविक आयु 10 वर्ष तथा बुद्धि लब्धि 85 है। इस बालक की मानसिक आयु कितने वर्ष कितने माह होगी?

$$\text{मानसिक आयु} = \frac{\text{I.Q.}}{100} \times \text{C.A.} \qquad \text{M.A.} = \frac{85}{100} \times 100 = 8.5 \text{ वर्ष}$$

अर्थात् 8 वर्ष 6 माह (आधा वर्ष 5) = 6 माह

☞ **टरमन के वर्गीकरण को आधार मानकर**–भारतीय परिपेक्ष्य में डॉ. कामथ ने बुद्धि लब्धि की सारणी स्थापित की जो 11 वर्गों मे निम्न है–

क्र. सं.	I.Q.	वर्ग / श्रेणी	प्रतिशत
1. 140+	प्रतिभाशाली		2%
2. 120 - 139	प्रखर बुद्धि		7%
3. 110-119	अत्यन्त उच्च बुद्धि / तीव्र		16%
4. 90-109	सामान्य / औसत		50%
5. 80-89	पिछड़े		16%
6. 70-79	अत्यन्त पिछड़े / निर्बल		7%
7. 50-69	मूर्ख		2%
8. 25-49	महामूर्ख / मूढ़		
9. 25 से कम	जड़ बुद्धि		

☞ **बुद्धि परीक्षण**–मानसिक आयु ज्ञात करने के लिए बुद्धि परीक्षण लिए जाते हैं।

☞ **बुद्धि परीक्षण तीन प्रकार के हैं–**

1. **व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण**–एक समय में एक ही व्यक्ति की मानसिक आयु ज्ञात की जा सकती है व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण दो प्रकार का होता है–

   1. शाब्दिक एवं 2. अशाब्दिक

   अशाब्दिक परीक्षण–चिह्नों तथा आकृतियों का उपयोग करते हुए अनपढ़ व्यक्तियों की मानसिक आयु ज्ञात करने के लिए अशाब्दिक परीक्षण लिए जाते हैं।

2. **सामूहिक बुद्धि परीक्षण**–युद्ध कालीन परिस्थितियों में सैनिकों की मानसिक आयु ज्ञात करने तथा अनुसंधान के क्षेत्र में एक ही समय पर एक से अधिक व्यक्तियों की मानसिक आयु ज्ञात करने के लिए सामूहिक बुद्धि परीक्षण लिए जाते हैं।

(i) आर्मी अल्फा परीक्षण Army Alfa Test

(ii) आर्मी बीटा परीक्षण Army Bita Test

3. **निष्पादन परीक्षण**–

   1. हिली चित्र–पूर्ति परीक्षण
   2. बिने साइमन बुद्धि परीक्षण (3–5 वर्ष के लिए)
   3. सेन्युल आकृति फलक परीक्षण
   4. गुड–एनक बुद्धि परीक्षण
   5. जालोटा बुद्धि परीक्षण
   6. भाटिया बैटरी बुद्धि परीक्षण

सृजनात्मकता (Creativity)

☞ '**सृजनात्मकता**' शब्द अंग्रेजी के **क्रिएटिविटी (Creativity)** से बना है। सृजनात्मक शब्द हिन्दी के '**सृजन**' शब्द से बना है। जिसका अर्थ होता है, '**निर्माण करना**', स्वयं की प्रेरणा तथा नवीन विचारों व प्रतिभाओं के साथ किसी नई वस्तु का सृजन करना ही सृजनात्मकता है। जिसके समानान्तर **विधायकता, उत्पादन** शब्दों का प्रयोग होता है। **फादर कामिल बुल्के** ने, क्रियेटिक शब्द के समान्तर **रचनात्मक सृजक** शब्द बताया। सृजनशीलता की शुरूआत बाल्यावस्था से प्रारम्भ होकर तीस वर्ष की अवस्था तक अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती है। तीस वर्ष के बाद सृजनशीलता या तो स्थिर रहती है या इसमें गिरावट आने लगती है। प्रारम्भ में छात्राओं में सृजनात्मकता अधिक होती है। बाद में छात्रों में छात्राओं की तुलना में अधिक सृजनशीलता पाई जाती है।

☞ वेबस्टर शब्दकोश के अनुसार सृजनशीलता **Create** शब्द से बना है जिसका अर्थ '**अस्तित्व में आना या उगना**' होता है, परन्तु **Create** को जब **Verb के रूप** में काम में लेते हैं तो उसका अर्थ **उत्पन्न होना या अस्तित्व में लाना** हो जाता है।

➲ **परिभाषाएँ–**

☞ **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार, ''सृजनात्मकता मुख्यत: नवीन रचना या उत्पादन में होती है।''

☞ **क्रो एण्ड क्रो** के अनुसार, ''सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को व्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।''

☞ **कॉल और ब्रुश** के अनुसार, ''सृजनात्मकता मौलिक उत्पाद के रूप में मानव मस्तिष्क को समझने, व्यक्त करने तथा सराहना करने की योग्यता व क्रिया है।''

☞ **स्टेन** के अनुसार, ''जब किसी कार्य का परिणाम नवीन हो, जो किसी समय में समूह द्वारा उपयोगी मान्य हो, वह कार्य सृजनात्मकता कहलाता है।''

☞ **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार, ''अनिवार्य रूप से किसी नई वस्तु का सृजन करना है।''

➲ **सृजनशीलता की विशेषताएँ**

1. जिज्ञासा	2. ध्यान केन्द्रित करने की शक्ति	3. साहसी
4. मौलिकता एवं नवीनता	5. दृढ़ निश्चयी	6. संवेदनशीलता
7. स्वकेन्द्रितता	8. विचारों में व्यावहारिकता	9. कल्पनाशीलता
10. स्वप्न दृष्टि	11. अपरम्परावादी	12. दूरदर्शी
13. सार्वभौमिकता	14. जन्मजात व अर्जित	

➲ **सृजनात्मकता का मापन**

1. सृजनात्मकता का मापन किया जा सकता है।
1. सृजनात्मकता के मापन का प्रमुख प्रयास '**गिलफर्ड**' ने किया था। इसके अलावा गैटजेल, टॉरैन्स, जैक्सन आदि के द्वारा भी अनेक सृजनात्मक परीक्षणों का निर्माण किया।
2. भारत में इन्दौर के **बी. के. पासी (B.K. Passi)** के द्वारा 1972 में स्कूल बालकों की सृजनात्मकता का मापन करने के लिए सृजनात्मक परीक्षण बनाया।
3. अलीगढ़ के बाकर मेंहदी के द्वारा सृजनात्मक चिन्तन की इस परीक्षण शृंखला में दो परीक्षणों का निर्माण/प्रयोग किया।
4. ये परीक्षण कल्पनाशीलता, मौलिकता, धारा प्रवाहिता, विस्तारता का मापन करते हैं।
5. सृजनात्मकता का मापन **अपसारी चिन्तन** पर आधारित है।

➲ **शिक्षा में सृजनात्मकता का महत्त्व**–सृजनात्मकता एवं बुद्धि का सकारात्मक/धनात्मक सम्बन्ध होता है। औसत से अधिक बुद्धि वाला कोई भी बालक सृजनशील हो सकता है। सभी छात्रों को सृजनात्मकता के विकास हेतु समुचित अवसर दिये जाए, तो वे इस गुण के कारण अपनी रचनात्मक शक्ति का भी विकास कर सकेंगे। इस समय वे अपनी अन्य असफलताओं और कुण्ठाओं को भूल जाऐंगे और अपने विशिष्ट क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका समाज को दे सकते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. व्यक्ति में निर्णय लेने, तर्क करने, तथा उपयोगी–अनुपयोगी का चयन करने की योग्यता है–

(अ) अधिगम (ब) बुद्धि (स) समायोजन (द) सम्प्रत्य निर्माण (ब)

2. बुद्धि में सीखने की योग्यता होती है, यह किस मनोवैज्ञानिक का कथन है?

(अ) स्टर्न (ब) टर्मन (स) बंकिघम (द) क्रूज (स)

3. कोई व्यक्ति उसी अनुपात में बुद्धिमान होता है, जिस अनुपात में उसमें अमूर्त चिंतन पाया जाता है–किस मनोवैज्ञानिक के अनुसार–
(अ) गेरेट (ब) वेश्लर (स) टरमन (द) डियर बॉर्न (स)

4. बुद्धि को जन्मजात किस मनोवैज्ञानिक ने माना है–
(अ) मन (ब) हॉरलॉक (स) रॉस (द) पियाजे (स)

5. निम्न में से बुद्धि की विशेषता नहीं है–
(अ) लिंग के आधार पर बुद्धि में भेद होता है। (ब) बुद्धि एवं ज्ञान में अंतर होता है।
(स) बुद्धि के बिना व्यक्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती है। (द) बुद्धि का विकास वातावरण में होता है। (अ)

6. बुद्धि कितने प्रकार की होती है–
(अ) 3 (ब) 4 (स) 120 (द) कोई नहीं (अ)

7. बुद्धि के सामाजिक मूर्त एवं अमूर्त प्रकार किसने बताये है–
(अ) हावर्ड गार्डनर (ब) स्पीयैर मैन (स) थॉर्नडाइक (द) थर्स्टन (स)

8. बुद्धि का वह प्रकार जिसके माध्यम के व्यक्ति वातावरण में समायोजन स्थापित करता है–
(अ) सामाजिक (ब) मूर्त (स) गत्यात्मक (द) शाब्दिक (अ)

9. मूर्त बुद्धि को इस नाम से भी जानते हैं–
(अ) यांत्रिक बुद्धि (ब) गत्यात्मक (स) अ व ब दोनों (द) शाब्दिक (स)

10. बुद्धि के किस प्रकार के माध्यम से मोटर मैकेनिक मोटर ठीक करता है–
(अ) सामाजिक (ब) स्थानिक (स) मूर्त (द) आर्थिक (स)

11. बुद्धि के कौनसे प्रकार को मृदुल (Shoft Wear) बुद्धि कहा जाता है–
(अ) मूर्त (ब) शाब्दिक (स) सामाजिक (द) गत्यात्मक (ब)

12. बुद्धि को केन्दिय प्रवृत्ति का किस मनोवैज्ञानिक ने माना है–
(अ) स्पीयरमैन (ब) बिने (स) थॉर्नडाइक (द) थर्स्टन (ब)

13. स्पीयरमैन के सामान्य कारक (G-Factor) की पहचान होती है–
(अ) अनोखे कार्यों से (ब) मापन से (स) अंत: दृष्टि के माध्यम से किए गए कार्य से (द) परीक्षण (स)

14. इंजीनियर अपने कार्यालय में बैठकर किसी मकान का प्रारूप बनाता है बुद्धि के किस प्रकार के माध्यम से–
(अ) सामाजिक बुद्धि (ब) स्थानिक (स) मूर्त (द) अमूर्त (द)

15. किस मनोवैज्ञानिक ने बुद्धि को असंख्य तत्वों से निर्मित बताया है?
(अ) थॉनडाइक (ब) थर्स्टन (स) बर्नन (द) गार्डन (अ)

16. सृजनशीलता की विशेषता नहीं है-
(अ) मौलिकता (ब) क्रोध (स) जिज्ञासा (द) कल्पनाशील (ब)

17. ''संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त'' किसने दिया-
(अ) टरमन (ब) जीन पियाजे (स) मेरिल (द) कोहलर (ब)

18. सृजनात्मकता को किस रूप में परिभाषित नहीं किया जा सकता-सृजनात्मकता में-
(अ) मौलिकता है (ब) नवीनता है (स) बुद्धि है (द) असाधारणता है (स)

19. सृजनात्मकता की विशेषता है-
(अ) सृजनात्मकता मौलिक व नवीन हो (ब) सृजनात्मकता कार्य उपयोगी हो
(स) सृजनात्मकता कार्य को समान रूप से मान्यता मिलनी चाहिए (द) उपर्युक्त सभी (द)

20. सृजनात्मकता के परीक्षण में किसका मापन करते है-
(अ) निरंतरता का (ब) लोचनीयता का (स) मौलिकता का (द) सभी (द)

21. सृजनात्मकता व्यक्ति में होती है-
(अ) तात्कालिक स्थिति से परे जाने की योग्यता (ब) समस्या की व्याख्या की साधारण क्षमता
(स) दूसरों के विचारों को यथारूप में मानने की प्रवृत्ति (द) उपरोक्त सभी (अ)

व्यक्तित्व

☞ '**व्यक्तित्व**' शब्द अंग्रेजी भाषा के '**पर्सनेलिटी**' **(Pesonality)** का हिन्दी अर्थ है। यह शब्द **यूनानी/लैटिन भाषा** के '**परसोना**' **(Persona)** से लिया गया है, जिसका अर्थ है–**नकली चेहरा, मुखौटा, नकाब (Mask)।**

☞ सामान्यतया व्यक्तित्व से अभिप्राय शारीरिक संरचना, रंगरूप, वेशभूषा इत्यादि से लगाया जाता था। जो व्यक्ति बाह्य गुणों से जितना प्रभावित कर सकता था। वह उतना ही अधिक प्रभावशाली माना जाता था।

☞ **वारेन** के अनुसार, ''व्यक्ति का संपूर्ण मानसिक संगठन, जो उसके विकास की अवस्था में पाया जाता है, व्यक्तित्व कहलाता है।''

☞ **गिलफर्ड** के अनुसार, ''व्यक्तित्व गुणों का समन्वित रूप है।''

☞ **मन** के अनुसार, ''व्यक्तित्व एक व्यक्ति के व्यवहार के तरीकों, दृष्टिकोणों, क्षमताओं, योग्यताओं तथा अभिरुचियों का विशिष्टतम संगठन है।''

☞ **वुडवर्थ** के अनुसार, ''व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार की एक समग्र विशेषता है।''

☞ **बोरिंग** के अनुसार, ''वातावरण के साथ सामान्य एवं स्थायी समायोजन ही व्यक्तित्व है।''

☞ **वैलेण्टाइन** के अनुसार, ''व्यक्तित्व जन्मजात एवं अर्जित प्रवृत्तियों का योग है।''

☞ **ऑलपोर्ट** के अनुसार, ''व्यक्तित्व व्यक्ति में उन मनोशारीरिक अवस्थाओं का गतिशील संगठन है जो उसके पर्यावरण के साथ उसका अद्वितीय सामंजस्य निर्धारित करता है।''

➲ **व्यक्तित्व के प्रमुख सिद्धान्त**–व्यक्तित्व की प्रकृति स्पष्ट करने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के सम्बन्ध में अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है।

➲ **मनोविश्लेषण सिद्धांत–**

☞ **जनक**–सिगमण्ड फ्रायड है।

☞ सिगमण्ड फ्रायड ने अचेतन मन का अध्ययन करने के लिए इस विधि का विकास किया अचेतन मन की अध्ययन करने की निम्न प्रणालियाँ है–

1. स्वप्न विश्लेषण 2. शब्द साहचर्य

☞ प्राचीन व्यक्तियों ने मन के दो भाग बताए हैं। 1. चेतन व 2. अचेतन

☞ मन का तीसरा भाग अर्द्धचेतन मन सिगमण्ड फ्रायड ने बताया है।

1. **चेतनमन**–मन का वह भाग जो व्यक्तियों का ध्यान विषय–वस्तु पर केन्द्रित करता है उसे चेतन मन कहते हैं। मन में 9/10 भाग अचेतन व 1/10 भाग चेतन का होता है।

व्यक्तित्व का संगठन–फ्रायड के अनुसार Id, Ego, Super Ego से मिलकर व्यक्तित्व का निर्माण होता है ये तीनों घटक निम्न लक्षणों वाले होते हैं।

1. **Id (इदम) के लक्षण**

⇨ यह पशु प्रवृत्ति का होता है। नकारात्मक प्रवृत्तियों को जन्म देता है।

⇨ व्यक्तियों को अच्छे कार्यों से बुरे कार्यों की ओर लेकर जाता है।

⇨ यह काम प्रवृत्ति का केन्द्र है।

⇨ अप्राप्त वस्तु का संग्रह **Id -** (इदम) में होता है।

2. **Ego (अहम) के लक्षण**

⇨ इदम् तथा पर–अहम में ताल–मेल स्थापित करने का कार्य **Ego** करता है।

⇨ यह तार्किक प्रवृत्ति का होता है।

⇨ **Ego** को मन के वकील की संज्ञा दी गई है।

⇨ यह वास्तविकता के सिद्धांत से परिचित होता है।

⇨ व्यक्ति को अपने कार्यों के परिणाम की जानकारी **Ego** करवाता है।

3. Super Ego (परा–अहम) के लक्षण

⇨ यह नैतिक एवं आदर्श बातों का सूचक है।

⇨ व्यक्ति को अच्छे कार्यों की ओर ले जाता है।

⇨ परन्तु यह कम सक्रिय होता है।

नोट – यदि Id, Ego, Super Ego कार्य करना बंद कर दे तो व्यक्ति के शरीर का संतुलन बिगड़ जाता है।

1. **अर्द्धचेतन मन**–मन का वह भाग जिसमें पूर्व में प्राप्त अनुभव तथा अध्ययन की गई विषय–वस्तु की अस्पष्ट चेतना होती है वह पुनः स्मृति में कुछ बाधाओं के बाद आते हैं।
2. **अचेतन मन**–मन का वह भाग जो व्यक्ति का ध्यान विषय–वस्तु पर केन्द्रित करता है व्यक्ति को बाह्य वातावरण में विचरण करवाता है। व्यक्ति द्विवास्वप्न में रहता है।

➲ **शील के गुणों का सिद्धांत**–प्रत्येक व्यक्ति में दो प्रकार के शील गुण पाये जाते हैं–

1. सामान्य व 2. व्यक्तिगत

☞ **डब्ल्यू जी. ऑलपोर्ट** के अनुसार–सामान्य गुण दया प्रेम, सहानुभूति जैसे सभी लोगों में मिलते हैं जबकि विशेष गुण जिन्हें व्यक्तिगत कहते हैं, व्यक्ति की पहचान बन जाते हैं जैसे–गाँधीजी में अहिंसा का गुण।

☞ आर.बी.केटल ने 16 शील के गुण बताये हैं जो धनात्मक चरित्र से संबंधित होते हैं। इन्होंने इन्हें मापने के लिए 16 PF प्रश्नावली भी बनाई।

➲ **व्यक्तित्व के प्रकार (Types of Personality)**–

1. **क्रेश्मर** ने व्यक्तित्व के **तीन प्रकार** बताये हैं–

(A) **लम्बकाय (Asthenic)**–ऐसे व्यक्तित्व वाले व्यक्ति लम्बे तथा दुबले–पतले शरीर वाले होते है तथा अपने क्रोध को सीधे अभिव्यक्त नहीं कर पाते हैं।

(B) **सुडौलकाय (Athenic)**–ऐसे व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हृष्ट–पुष्ट तथा स्वस्थ शरीर वाले होते हैं।

(C) **गोलकाय (Picnic)**–ऐसे व्यक्तित्व वाले व्यक्ति नाटे तथा मोटे होते हैं। ये सुख व दुख, क्रियाशील व निष्क्रिय, उत्साह व निरूत्साह आदि के बीच में झूलते रहते हैं। कभी खुश, कभी दुःख, कभी क्रियाशील, कभी निष्क्रिय, कभी उत्साही, कभी उत्साह विहीन रहते हैं।

2. **शेल्डन का वर्गीकरण**

(A) **गोलाकार या एन्डोमारफिक**–मोटे, विनोदी, प्रसन्नचित

(B) **आयताकार या मीसोमारफिक**–स्वस्थ, झगड़ालू

(C) **लम्बाकार या एक्टोमारफिक**–संकोची, दुबले, बुद्धिमान

3. **जुंग** (Jung) के अनुसार–

(A) **अन्तर्मुखी** (Introvert)–ऐसे व्यक्ति संकोची, लज्जाशील, एकान्तप्रिय, मितभाषी, जल्दी घबराने वाले, आत्मकेन्द्रिय, अध्ययनशील, आत्मचिन्तक तथा असामाजिक प्रकृति के होते हैं। रचनाकार व लेखक बनने के लिए यह उचित व्यक्तित्व है।

(B) **बहिर्मुखी** (Extrovert)–ऐसे व्यक्ति व्यवहार कुशल, चिन्तामुक्त, सामाजिक, आशावादी, साहसिक, आक्रामक तथा लोकप्रिय प्रकृति के होते हैं। अच्छा शिक्षक व अच्छा नेता बनने के लिए यह उचित व्यक्तित्व है।

(C) **उभयमुखी (Ambivert)**–इस प्रकार के व्यक्तियों में कुछ गुण अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के तथा कुछ गुण बहिर्मुखी व्यक्तित्व के होते हैं। समायोजित एवं उचित व्यक्तित्व दर्शाने के लिए यह उचित व्यक्तित्व है।

4. **भारतीय दृष्टिकोण–श्रीमद्भागवत गीता** के अनुसार **कपिल मुनि** ने **तीन भागों में** बाँटा है–

(1) **सात्विकी/सतोगुणी** - ईश्वर व धर्म में विश्वास

(2) **राजसी/रजोगुणी** - कर्म में विश्वास

(3) **तामसी/तमोगुणी** - सुख प्राप्ति में विश्वास

➲ **व्यक्तित्व मापन की विधियाँ(Methods of Personality Measurement)**

☞ 1880 ई. में **फ्रांसिस गाल्टन** ने व्यक्तित्व मापन के लिए सर्वप्रथम प्रश्नावली विधि का प्रयोग किया। सर्वप्रथम परिसूची का निर्माण वुडवर्थ ने 1919 में किया। इसे इन्होंने **Personal Data Sheet** का नाम दिया। **एलिस** (Ellis) ने लिखा है, कि ''हमारे व्यक्तित्व के मनोविज्ञान ने अभी पर्याप्त प्रगति नहीं की है और इसलिए हमारे व्यक्तित्व–परीक्षण अभी तक अधिकांश रूप में जाँच की कसौटी पर है।''

☞ **शब्द साहचर्य परीक्षण**–फ्रांसिसी गाल्टन ने 1879 में 75 विशेष उद्दीपक शब्दों की सूची बनाई। वर्तमान में जुंग ने 100 शब्दों की सूची तैयार की। इस प्रकार W.A.T. में 50 से 100 शब्द हैं।

(A) आत्मनिष्ठ/व्यक्तिनिष्ठ विधियाँ

1. आत्मकथा लेखन विधि 2. प्रश्नावली विधि 3. व्यक्ति इतिहास विधि 4. साक्षात्कार विधि

1. **आत्मकथा लेखन विधि/अन्त:दर्शन विधि–यह एक प्राचीनतम विधि है।** इस विधि में जिस व्यक्ति का मापन किया जाता है उसे कुछ निर्धारित शीर्षकों के अन्तर्गत अपने जीवन की घटनाओं व संस्मरणों का वर्णन लिखने को कहा जाता है। इसके आधार पर व्यक्ति के गुणों व अवगुणों का पता लगाया जाता है।

2. **प्रश्नावली विधि/परिसूची विधि**–प्रश्नावली विधि साक्षात्कार का औपचारिक एवं लिखित रूप है। इस विधि में प्रयोग हेतु व्यक्ति के गुणों के परीक्षण हेतु प्रश्नों की एक सूची तैयार की जाती है जिसमें व्यक्ति को हाँ अथवा ना में उत्तर देना होता है। प्रश्नावली चार प्रकार की होती है।
   (अ) बन्द प्रश्नावली/प्रतिबंधित प्रश्नावली–इस प्रश्नावली में उत्तर 'हाँ' या 'ना' में देना होता है।
   (ब) खुली प्रश्नावली–इस प्रश्नावली में उत्तर लिखने की छूट होती है।
   (स) सचित्र प्रश्नावली–इस प्रश्नावली में प्रश्न के उत्तर से सम्बन्धित चित्र होते हैं।
   (द) मिश्रित प्रश्नावली–इस प्रश्नावली में उपरोक्त तीनों प्रकार के प्रश्नों का मिश्रण होता है।
   प्रश्नावली की सहायता से व्यक्ति के गुणों की परीक्षा की जाती है।

3. **जीवनवृत विधि/व्यक्ति इतिहास विधि/जीवन इतिहास विधि**–व्यक्ति इतिहास विधि का विकास ईसा से लगभग 400 वर्ष पूर्व समस्यात्मक बालकों का अध्ययन करने में किया गया था। इस विधि द्वारा परीक्षक व्यक्ति के माता-पिता, पड़ौसी, रिश्तेदार, सगे-सम्बन्धी, मित्र आदि के सम्बन्ध में उससे अनेक प्रश्न पूछता है। इस प्रकार प्राप्त सामग्री से परीक्षक इस निष्कर्ष को खोजने का प्रयास करता है कि उक्त सम्बन्धों के सन्दर्भ में व्यक्ति की किन-किन आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हुई है। इस प्रकार इस विधि द्वारा मनोवैज्ञानिक रोगों का पता लगाया जाता है (समस्या के कारणों को जानना **निदान** कहलाता है।) निदान मनोविज्ञान के द्वारा किया जाता है तथा ताकि उनका उपचार (उस समस्या के कारणों को दूर करना **उपचार** कहलाता है।) उपचार शिक्षा के द्वारा किया जाता है।

4. **साक्षात्कार विधि**–साक्षात्कार को अंग्रेजी में इंटरव्यू कहते हैं। यह शब्द इंटर तथा व्यू से मिलकर बना है। इंटर का अर्थ है आंतरिक तथा व्यू का अर्थ है अवलोकन। साक्षात्कार का अर्थ है आंतरिक अवलोकन करना। अर्थात् आपसी वार्तालाप (**जॉन जी. डार्ले** के अनुसार साक्षात्कार एक उद्देश्यपूर्ण वार्तालाप है।) जिसमें कम से कम दो व्यक्तियों का आमने-सामने होना आवश्यक है। यह व्यक्तित्व मापन की **सर्वाधिक लोकप्रिय विधि** है। साक्षात्कार विधि में साक्षात्कारकर्त्ता व साक्षात्कारदाता के मध्य वार्तालाप होता है। साक्षात्कार दो प्रकार का होता है– (1) औपचारिक (Formal), (2) अनौपचारिक (Informal)

(B) वस्तुनिष्ठ विधियाँ

1. प्रेक्षण या निरीक्षण विधि 2. निर्धारण मापनी विधि
3. समाजमिति विधि 4. निष्पादन परीक्षण विधि
5. परिस्थिति परीक्षण विधि

1. **प्रेक्षण या निरीक्षण विधि/बहिर्दर्शन विधि**–इस विधि में मनोवैज्ञानिक/शिक्षक द्वारा बालक का विभिन्न स्थितियों में सतत् प्रेक्षण/अध्ययन किया जाता है जिसके आधार पर बालक के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में निष्कर्ष निकाले जाते है। बालक (विषयी) का व्यक्तित्व कैसा है, प्रेक्षण नियन्त्रित होता है।

2. **निर्धारण मापनी विधि** (Rating Scale)–यद्यपि यह विधि पूर्णतया वस्तुनिष्ठ नहीं है फिर भी **डॉ. एस. एस. माथुर** के अनुसार, ''निर्धारण मापनी वह विधि है जो व्यक्तित्व के गुणों का अनुमान लगाने के लिए है जो कम रूप में व्यक्तिगत है और साधारण ढंगों से अधिक सही है। यह व्यक्तित्व का व्यक्तिगत ढंग से अध्ययन करती है।''

☞ निर्धारण मापनी का प्रयोग प्राय: यह जानने के लिए किया जाता है कि कोई व्यक्ति अपने साथियों अथवा अपने परिचितों के समक्ष अपने व्यक्तित्व के सम्बन्ध में क्या छवि या छाप छोड़ता है।

☞ व्यक्तित्व का मापन करने के लिए निर्धारण मापनी अपनी विश्वसनीयता, वैधता तथा सुगमता के कारण काफी प्रचलित है। **'फैक्नर'** ने इस विधि का सर्वप्रथम प्रयोग किया। **'गाल्टन' को प्रथम निर्धारण मापनी के प्रकाशन का श्रेय** दिया जाता है। उसने सन् 1883 में मानसिक बिम्ब सृष्टि से संबंधित निर्धारण मापनी का प्रकाशन किया।

☞ **निर्धारण मापनी छ: प्रकार की हो सकती हैं-**

(1) चैक लिस्ट मापनी (2) आंकिक निर्धारण मापनी (3) ग्राफिक मापनी (4) क्रमिक निर्धारण मापनी
(5) स्थिति निर्धारण मापनी (6) बाह्य चयन निर्धारण मापनी

3. **समाजमिति** (Socialgram Method)–समाजमिति विधि का प्रतिपादन **'जे.एल. मोरेनो'** ने 1934 ई. में किया। इस विधि का प्रयोग बालकों के सामाजिक गुणों के मापन हेतु किया जाता है। अर्थात् समूह में परस्पर सम्बन्धों को स्पष्ट करने हेतु होता है। किसी समूह के प्रत्येक व्यक्ति को एक या दो प्रश्न देकर उनकी प्रतिक्रिया ज्ञात करके समाजमिति का निर्माण किया जाता है। इस विधि के द्वारा परिवार, विद्यालय, कक्षा एवं कार्यालय आदि में सर्वाधिक लोकप्रिय व्यक्ति का पता लगाया जा सकता है।

4. **निष्पादन परीक्षण** (Performance Test)–इस विधि का प्रयोग **हार्टशोर्न** (Hortshorne) ने ईमानदारी का गुण मापने हेतु किया है। यह वैयक्तिक विभिन्नताओं के मापन हेतु एक व्यावहारिक विधि है। मापनकर्त्ता इस विधि में बालक या व्यक्ति को कुछ कार्य करने को देता है तथा उस कार्य को सम्पन्न करने में अभिव्यक्त अनेक व्यक्ति विशेषज्ञों का पता लगाता है। यह विधि किसी कार्य विशेष के चुनाव करने में प्रयुक्त होती है।

5. **परिस्थिति परीक्षण** (Situation Test)–यह विधि निष्पादन विधि के ही समान है, अन्तर केवल यह है कि इसमें किसी कृत्रिम परिस्थिति में बालक या व्यक्ति को रखकर उसके व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। ये कृत्रिम परिस्थितियाँ व्यक्ति के साहस, धैर्य, नेतृत्व, परिश्रम, ईमानदारी आदि गुणों के मूल्यांकन हेतु आयोजित की जाती हैं।

[C] प्रक्षेपण विधियाँ (Projective Method)

☞ प्रक्षेपण विधियों की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता व्यक्ति के अचेतन को जानना है। प्रक्षेपण से अभिप्राय अचेतन को जानने की उस प्रक्रिया से है, जिसमें व्यक्ति अपने विचारों, दृष्टिकोणों, संवेगों, गुणों, आवश्यकताओं आदि को अन्य व्यक्तियों या वस्तुओं के माध्यम से अपरोक्ष ढंग से अभिव्यक्त कर देता है।

☞ इस विधि के माध्यम से व्यक्तित्व सम्बन्धी उन बिन्दुओं की जानकारी मिलती है जिनके बारे में व्यक्ति खुद नहीं जानता है। प्रक्षेपीय विधियों में व्यक्ति के द्वारा दी जाने वाली प्रतिक्रियाओं के आधार पर प्रक्षेपीय विधियों को निम्न पाँच प्रकारों में बाँटा जा सकता है–

1. साहचर्य विधि 2. रचना विधि 3. पूर्ति विधि
4. क्रम विधि 5. अभिव्यक्त विधि

☞ यद्यपि उपरोक्त वर्णित विभिन्न प्रकार की प्रक्षेपीय प्रविधियों के आधार पर अनेक प्रक्षेपीय परीक्षणों का निर्माण किया जा चुका है प्रक्षेपीय परीक्षण निम्नांकित हैं।

➲ **रोशार्क का स्याही धब्बा परीक्षण**–व्यक्तित्व मापन के लिए मसि लक्ष्य/स्याही धब्बा परीक्षण का प्रयोग करने वाला **रोर्शा प्रथम** व्यक्ति नहीं था, फिर भी इस दिशा में उसका कार्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथा व्यापक था, जो सन् 1911 से 1921 तक लगभग दस वर्षों तक लगातार चला हरमन रोर्शा स्विट्जरलैण्ड के मनोचिकित्सक थे। उनका मानना है कि व्यक्ति का व्यवहार चेतन से अचेतन पर अवलम्बित रहता है और व्यक्ति का कोई भी कार्य जो उसके अचेतन से संचित होता है, उसके व्यक्तित्व की सहज अभिव्यक्ति दिखाई पड़ती है तथा उसके व्यक्तित्व की यथार्थ विशेषताओं का द्योतक है। रोर्शा ने कहा कि इसी तरह की अभिव्यक्ति उसके समक्ष किसी अपरम्परागत उद्दीपक के प्रति अनुक्रिया में व्यक्ति अत्यधिक क्रियाशील होता है, उस स्थिति में उसके वास्तविक लक्षणों के विषय में जानकारी अर्जित की जा सकती है।

☞ **परीक्षण सामग्री**–रोशार्क स्याही धब्बा परीक्षण में **कुल दस कार्ड** होते हैं, जिनमें से प्रत्येक पर एक सममित मसि लक्ष्य (Ink Blot) बना होता है। **पाँच कार्डों पर काले, दो कार्डों पर काले-सफेद व लाल रंग** में तथा **तीन कार्ड पर कई रंगों से स्याही के धब्बे** बने होते हैं।

☞ **उपयोगिता–**

(1) इस परीक्षण के माध्यम से परीक्षार्थी के ज्ञानात्मक, क्रियात्मक एवं भावात्मक पक्षों को मापा जाता है।
(2) मानसिक रोगों के निदान, उपचार तथा बाल निर्देशन में भी इस परीक्षण का प्रयोग होता है।

➲ **प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण/कक्षा प्रश्न परीक्षा (Thematic Apperception Test - T.A.T)**–प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण व्यक्तित्व मापन की एक प्रसिद्ध विधि है। इसकी **रचना सन् 1935 में सी. डी. मोर्गन तथा एच. ए. मुर्रे ने** की थी। इस परीक्षण में **31 कार्डों का प्रयोग** किया जाता है। ये सभी कार्ड **पुरुषों तथा स्त्रियों** के हैं। इनमें **10 कार्ड पुरुषों के लिए, 10 स्त्रियों के लिए और 10 दोनों के लिए** है तथा 1 कार्ड सामान्य होता है। व्यक्ति को कार्ड दिखाकर कहानी लिखने को कहा जाता है।

☞ यह परीक्षण 14 वर्ष की आयु से अधिक बालक-बालिकाओं के लिए विशेष उपयोगी है। परीक्षार्थी साधारणत: अपने को कार्ड का कोई पात्र मान लेता है। उसके बाद वह कहानी कहकर अपने विचारों, भावनाओं, समस्याओं आदि को व्यक्त करता है। यह कहानी स्वयं उसके जीवन की कहानी होती है। परीक्षक कहानी का विश्लेषण करके उसके व्यक्तित्व की विशेषताओं का पता लगाता है।

☞ **उपयोगिता–**

(1) इस परीक्षण से सामाजिक तथा व्यक्तिगत सम्बन्धों की जानकारी प्राप्त हो जाती है। (2) प्रौढ़ व्यक्तियों हेतु उपयोगी।

➲ **बाल अंतर्बोध परीक्षण–बालक अन्तर्बोध परीक्षण (C.A.T.)** की रचना ३ वर्ष से लेकर 10 वर्ष की आयु के बालकों के व्यक्तित्व का मापन करने हेतु **'लियोपोल्ड बैलक'** के द्वारा सन् **1948** में की गयी थी। इस परीक्षण में **दस कार्ड जिन पर जानवर के चित्र** प्रदर्शित करते हैं। इन कार्डों पर बने चित्रों को देखकर बालक से उसका कथानक पूछा जाता है।

☞ भारत में इस परीक्षण का संशोधन एवं अनुकूलन कोलकाता की **उमा चौधरी** ने किया। वैसे इस परीक्षण का विचार **सर्वप्रथम डॉ. अर्नेस्ट क्रिस्ट** ने प्रस्तुत किया था।

अभ्यास प्रश्न

1. उभयमुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति होते है-
(अ) अंतर्मुखी (ब) बहिर्मुखी (स) अ व ब (द) कोई नहीं (स)

2. व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत विभिन्नताओं को प्रभावित करने वाले तत्व हैं–
(अ) वंशानुक्रम (ब) वातावरण (स) वंशानुक्रम तथा वातावरण (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं (स)

3. बहिर्मुखी बालक की विशेषता नहीं है -
(अ) चिन्ताग्रस्त (ब) कार्य करने की दृढ़ इच्छा (स) आक्रामक (द) शान्त एवं आशावादी (स)

4. वर्तमान में सर्वोत्तम माना जाने वाला व्यक्तित्व के प्रकारों का वर्गीकरण किसकी देन है -
(अ) ऑलपोर्ट की (ब) कैटिल व अलापोर्ट की (स) जुंग की (द) उपर्युक्त सभी (स)

5. व्यक्तित्व मापन के लिए व्यक्ति की सम्पूर्ण सूचनाएँ प्राप्त करने की विधि है-
(अ) अवलोकन विधि (ब) निर्धारण मान (स) व्यक्ति इतिहास विधि (द) साक्षात्कार विधि (स)

6. व्यक्तित्व शब्द का अंग्रेजी रूपान्तरण पर्सनेलिटी शब्द मूलतः किस भाषा के शब्द से बना है -
(अ) लेटिन (ब) अंग्रेजी (स) हिन्दी (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं (अ)

7. 'संगठित व्यक्तित्व' कहते हें जिसमें निम्नांकित पक्षों का विकास हुआ हो -
(अ) सामाजिक पक्ष (ब) मानसिक पक्ष (स) संवेगात्मक पक्ष (द) उपर्युक्त सभी (द)

8. संगठित व्यक्तित्व की विशेषता नहीं है -
(अ) गतिशीलता (ब) असामाजिकता
(स) समायोजन शक्ति (द) संतोष, उच्च आकांक्षा तथा उद्धेश्यपूर्णता (ब)

9. यह वह शक्ति है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने बारे में जानता है कि वह क्या है तथा दूसरे व्यक्ति उसके बारे में क्या सोचते हैं - इस शक्ति का नाम क्या है -
(अ) गतिशीलता (ब) संकल्प शक्ति (स) सामायोजन शक्ति (द) आत्म चेतना (द)

10. अन्तर्मुखी बालक होता है -
(अ) सभी के साथ मिलकर चलाने वाला (ब) समस्याओं को पारस्परिक रूप से समझने वाला
(स) एकान्त में विश्वास रखने वाला (द) स्वंय को यथार्थ के अनुकूल ढालने वाला (स)

11. निम्न में से जो घटक व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करने वाला नहीं है, वह है -
(अ) बुद्धि (ब) स्वास्थ्य (स) लैंगिक भिन्नता (द) उपरोक्त सभी (द)

12. व्यक्तित्व मापन की कौनसी विधि में व्यक्ति का मूल्यांकन उसके संपर्क में रहने वाले लोगों से करवाया जाता है-
(अ) प्रश्नावली विधि (ब) साक्षात्कार
(स) परिसूची (द) मापदण्ड परीक्षण विधि (रेटिंग स्केल) (द)

13. वह वार्तालाप जो कि उद्धेश्यपूर्ण है, कहलाता है -
(अ) विचार-विमर्श (ब) वाद-विवाद (स) साक्षात्कार (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं (स)

14. अत्यधिक वाचाल, प्रसन्नचित्त करने वाले तथा सामाजिक प्रवृत्ति के धनी व्यक्ति का व्यक्तित्व होता है–
(अ) अन्तर्मुखी (ब) बहिर्मुखी (स) संतुलित (द) उपर्युक्त सभी (ब)

15. अचेतन मन का अध्ययन किया जाता है -
(अ) मनोविश्लेषण विधियों द्वारा (ब) अवलोकन विधि द्वारा (स) साक्षात्कार द्वारा (द) आत्मकथा द्वारा (अ)

16. निम्न में से जो व्यक्तित्व परीक्षण की विधि नही है, वह है -
(अ) निरीक्षण (ब) भ्रमण (स) शारीरिक परीक्षण (द) साक्षात्कार (ब)

17. निम्न में से, वह जो व्यक्तित्व को प्रभावित नहीं करता है–
(अ) वंशानुक्रम (ब) वातावरण (स) देखना (द) व्यायाम करना (स)

18. एक संगठित व्यक्तित्व में जो विशेषता नहीं पाई जाती है, वह है-
(अ) सामाजिकता (ब) गतिशीलता (स) संकल्प शक्ति (द) झगड़ना (द)

19. व्यक्तिगत शिक्षण में निम्नलिखित विधि नहीं आती है-
(अ) डाल्टन पद्धति (ब) सामूहिक शिक्षण (स) कान्डेक्ट पद्धति (द) प्रोजेक्ट पद्धति (द)

20. पर्सनेलिटी शब्द की व्युत्पत्ति ग्रीक (लेटिन या यूनानी) भाषा के किस शब्द से हुई-
(अ) पर्सनल (ब) परसेनी (स) परसोना (द) पसोनी (स)

21. ''व्यक्तित्व, व्यक्ति में उन मनोशारीरिक अवस्थाओं का गतिशील संगठन है, जो उसके पर्यावरण के साथ उनका अद्वितीय सामंजस्य निर्धारित करता है।'' कथन है-
(अ) बिग व हण्ट (ब) ऑलपोर्ट (स) ड्रेवर (द) मन (ब)

22. व्यक्तित्व के तीन गुणों-रजोगुण, सतोगुण व तमोगुण का वर्णन किया है-
(अ) भागवत (ब) सांख्य शास्त्र (स) मनुस्मृति (द) गीता (ब)

23. निम्न में से कौनसी व्यक्तित्व मापन प्रक्षेपी विधियाँ है-
(अ) रोर्शा स्याही धब्बा परीक्षण (ब) प्रासंगिक अंतर्बोध परीक्षण (TAT)
(स) बाल संप्रत्यन परीक्षण (CAT) (द) उपर्युक्त सभी (द)

24. 'यह करो यह न करो' कौन कहता है-
(अ) इड (इदम) (ब) ईगो (अहम) (स) सुपर ईगो (परम अहम) (द) कोई नहीं (स)

25. शरीर रचना पर आधारित व्यक्तित्व के प्रकार किसने बताए-
(अ) क्रेचमर व शैल्डन ने (ब) हिप्पोक्रेट्स (स) जुँग (द) एडलर (अ)

26. युँग या जुँग ने व्यक्तित्व के कौनसे प्रकार बताए-
(अ) कोमल (ब) आशामय
(स) खिन्न (द) अंतर्मुखी, बहिर्मुखी व उभयमुखी (द)

27. फ्रॉयड ने सबसे अधिक बल किस प्रवृत्ति पर दिया है-
(अ) काम प्रवृत्ति (ब) रचना प्रवृत्ति (स) संचय प्रवृत्ति (द) समूह प्रवृत्ति (अ)

28. व्यक्तित्व को समझने के लिए व्यक्तित्व के शील गुणों का अध्ययन किन मनोवैज्ञानिकों ने किया-
(अ) कैटिल व आलपॉर्ट (ब) गैरिट (स) आलपॉर्ट (द) जुँग (अ)

29. व्यक्तित्व मापन की सर्वाधिक पुरानी विधि-
(अ) ज्योतिष (ब) बुद्धि परीक्षण (स) मनौवेज्ञानिक (द) परीक्षा (अ)

30. व्यक्तित्व मापन की किस विधि में किसी समूह के व्यक्तियों में से पहली पसंद का व्यक्ति चुनने के लिए कहा जाता है-
(अ) रेटिंग स्केल (ब) प्रश्नावली (स) निरीक्षण (द) समाजमिती (द)

31. निम्न में से मन का कौनसा भाग फ्रायड ने बताया–
(अ) चेतन (ब) अचेतन (स) अर्द्धचेतन (द) सभी (द)

32. कक्षा में अध्यापक द्वारा विद्यार्थी से प्रश्न पूछने पर वह तुरन्त जवाब देता है–बालक मन की कौनसी अवस्था है–
(अ) चेतन (ब) अचेतन (स) अर्द्धचेतन (द) कोई नहीं (अ)

33. एक ही बालक किसी लड़की को देखकर विचार करता है, कि मैनें इसे कहीं देखा है–वह कौनसी अवस्था है–
(अ) इदम् (ब) अहम (स) अर्द्धचेतन (द) अचेतन (स)

34. अध्यापक द्वारा विद्यार्थी से प्रश्न पूछने पर वह चौंक कर कहता है, क्या सर–बालक मन की किस अवस्था में है–
(अ) चेतन (ब) अचेतन (स) अर्द्धचेतन (द) उपरोक्त सभी (ब)

35. बालक श्रेष्ठ आचरण से बुराईयों की ओर लौटता है–बालक पर मन के किस भाग का प्रभाव है–
(अ) इदम (ब) अहम (स) परा अहम (द) कोई नहीं (अ)

36. मन का कौनसा भाग समायोजन करने का कार्य करता है–
(अ) इदम (ब) अहम (स) परा–अहम (द) सभी (ब)

37. मन का वह भाग जो आदर्श एवं नैतिकता का सूचक है–
(अ) चेतन (ब) परा–अहम (स) इदम (द) अहम (ब)

38. यदि व्यक्ति के मन में इदम्, अहम, परा–अहम, कार्य करना बंद कर दे तो क्या होगा–
(अ) व्यक्ति मर जाएगा (ब) पागल हो जाएगा।
(स) शरीर का संतुलन बिगड जाएगा (द) गलत काम करेगा (स)

39. मन के कौनसे भागों में संतुलन की आवश्यकता होती है–
(अ) इदम एवं परा–अहम (ब) इदम तथा अहम (स) इदम तथा चेतन (द) परा–अहम एवं अर्द्धचेतन (अ)

40. मन का कौनसा भाग Id एवं Super Ego में संतुलन स्थापित करने का कार्य करता है, इसलिए उसे वकी की संज्ञा दी जा सकती है?
(अ) Id (ब) Ego (स) Super-Ego (द) कोई नहीं (ब)

समायोजन (Adjustment)

☞ **गेट्स व अन्य** के अनुसार–''समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने ओर वातावरण के बीच संतुलित संबंध बनाये रखने के लिए व्यवहार को बदलता है।''

☞ परिस्थितियों से तालमेल बिठाने की प्रक्रिया समायोजन कहलाती है।

☞ जब व्यक्ति की आवश्यकताएँ उचित होती हैं तथा वातावरण द्वारा उन आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है तो व्यक्ति समायोजित रहता है। परिस्थितियों से साम्राज्य स्थापित करते हुए जब व्यक्ति विभिनन कार्यों को करता है तो वह समायोजित कहलाता है।

☞ **समायोजित व्यक्ति के लक्षण–**

⇨ समायोजित व्यक्ति का दृष्टिकोण सकारात्मक होता है।

⇨ समायोजित व्यक्ति का व्यवहार सामाजिक होता है।

⇨ समायोजित व्यक्ति संवेगात्मक रूप से स्थिर होता है।

⇨ समायोजित व्यक्ति धैर्यपूर्वक आचरण करता है।

⇨ समायोजित व्यक्ति महत्त्वाकांक्षी होता है।

⇨ समायोजित व्यक्ति के लक्षण एवं उद्देश्य स्पष्ट होते हैं।

⇨ समायोजित व्यक्ति मानसिक रूप से संतुलित रहता है।

⇨ समायोजित व्यक्ति उचित माध्यमों से अपने उद्देश्यों की प्राप्ति करता है।

☞ **कुसमायोजन (Mal-adjustment)**

गेट्स व अन्य के अनुसार–''कुसमायोजन व्यक्ति और उसके वातावरण में असंतुलन पैदा करता है।''

⇨ जब व्यक्ति की आवश्यकताएँ असंगत होती हैं एवं वातावरण द्वारा उन आवश्यकताओं की पूर्ति की अनुमति नहीं दी जाती है तो व्यक्ति कुसमायोजन का शिकार हो जाता है। परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित नहीं करने की प्रक्रिया कुसमायोजन है।

⇨ **कुसमायोजित व्यक्ति के लक्षण–**

1. इनका दृष्टिकोण नकारात्मक होता है।
2. विपरीत परिस्थिति आने पर घबरा जाते हैं।
3. मानसिक रूप से असंतुलित रहते हैं।
4. दूसरों के प्रति बदले की भावना से ग्रसित होते हैं।
5. अपने उद्देश्यों की अनुचित माध्यमों से प्राप्ति करते हैं।
6. विभिन्न मानसिक रोगों जैसे तनाव, दबाव, दुश्चिन्ता इत्यादि का शिकार हो जाते हैं।
7. संवेगात्मक रूप से अस्थिर होते हैं।
8. असामाजिक व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं।

➲ **मानसिक रोग**

☞ **तनाव (Tension)**–जब व्यक्ति समय की मांग की पूर्ति नहीं कर पाता है तो वह तनाव का शिकार हो जाता है।

☞ **दुश्चिन्ता (Anxiety)**–जब व्यक्ति के **अचेतन मन** में दमित इच्छा **चेतन मन** में आकर उसे परेशान करने लगती है तो व्यक्ति दुश्चिन्ता का शिकार हो जाता है।

☞ **दबाव (Stress)**–जब व्यक्ति सफलता व असफलता के बीच अपने आत्म सम्मान एवं आत्म प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए संघर्षरत होता है तो वह दबाव का शिकार हो जाता है।

☞ **भग्नाशा/कुंठा (Frustration)**–बार-बार प्रयास करने पर भी जब व्यक्ति को सफलता नहीं मिल पाती है तो वह भग्नाशा अथवा कुंठा का शिकार हो जाता है।

☞ **अंतःद्वन्द्व/संघर्ष (Conflict)**–जब व्यक्ति के समक्ष दो समान अवसर उपस्थिति हो एवं चयन किसी एक का करना हो तो अंतःद्वन्द्व कहा जाता है।

⇨ अन्त:द्वन्द्व दो प्रकार का होता है–

1. **सकारात्मक अंत:द्वन्द्व**–दोनों अवसर लाभदायक
2. **नकारात्मक अंत:द्वन्द्व**–दोनों अवसर हानिकारक

➲ **रक्षात्मक युक्तियाँ / समायोजन तंत्र / आत्म सुरक्षा अभियांत्रिकाएँ / मानसिक मनोरचनाएँ (Defence Machanism)–**

☞ **रक्षात्मक युक्तियों का अर्थ है**–मानव मन द्वारा रचित वह **काल्पनिक युक्तियाँ** जिनका वास्तविकता से अधिक संबंध नहीं होता है किन्तु इन युक्तियों द्वारा व्यक्ति को क्षणिक संतुष्टि प्राप्त होती है एवं व्यक्ति विभिन्न मानसिक रोगों से बचता है।

☞ रक्षात्मक युक्तियाँ तनाव, दबाव, दुश्चिन्ता इत्यादि मानसिक रोगों से बचने में सहायता प्रदान करती है। जिसके द्वारा व्यक्ति समायोजन प्राप्त करता है।

☞ रक्षात्मक युक्तियों के द्वारा व्यक्ति के **अहम को संतुष्टि** प्राप्त होती है।

☞ **संक्षेप में**–मानसिक रोगों से बचाते हुए समायोजन स्थापित करने वाली युक्तियाँ रक्षात्मक युक्तियाँ हैं।

➲ **समायोजन के प्रत्यक्ष उपाय–**

☞ बाधाओं को दूर करना

☞ अन्य मार्ग खोजना

☞ लक्ष्यों का प्रतिस्थापन

☞ विश्लेषण व निर्णय

➲ **समायोजन के अप्रत्यक्ष उपाय–**

☞ **दमन (Repression)**–जब व्यक्ति अपनी अतृप्त इच्छाओं एवं आकांक्षाओं को अचेतन मन में दमित करते हुए समायोजन स्थापित करता है तो इसे दमन कहते हैं।

☞ **कल्पनाप्रवाह / दिवास्वप्न** –हकीकत में जिन इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो पाती है उन्हें कल्पनाओं के माध्यम से पूरा करते हुए क्षणिक संतुष्टि प्राप्त करना कल्पना प्रवाह अथवा दिवा–स्वप्न है।

☞ **प्रक्षेपण (Projection)**–जब व्यक्ति अपनी असफलता के लिए परिस्थितियों को दोषपूर्ण बताकर समायोजन स्थापित करता है तो इस युक्ति को प्रक्षेपण कहते हैं।
जैसे–नाच न जाने आँगन टेढ़ा।
एक क्रिकेट खिलाड़ी मैच हारने के बाद पिच पर बेट–बॉल इत्यादि को बेकार बताते हुए समायोजन स्थापित करे।

☞ **औचित्य स्थापन / युक्तिकरण / तार्कीकरण / तर्कसंगतीकरण (Rationalization)**–जब व्यक्ति अपनी असफलता के लिए पद अथवा वस्तु को दौषपूर्ण बताकर समायोजन स्थापित करता है तो इसे **औचित्य स्थापन** अथवा **तर्क संगतीकरण** कहते हैं। जैसे–अंगूर खट्टे अथवा नीबू मीठे करना।

☞ **प्रतिगमन (Regression)**–जब व्यक्ति अपनी पूर्व की परिस्थिति में लौटकर समायोजन स्थापित करता है तो इसे प्रत्यागमन कहते हैं। प्रत्यागमन का प्रयोग व्यक्ति नवीन परिस्थिति का सामना नहीं कर पाने के कारण करता है। उदाहरण–एक व्यस्क व्यक्ति का बच्चों के समान रोना प्रत्यागमन है।

☞ **विस्थापन / प्रतिस्थापन (Displacement)**–जब व्यक्ति उचित स्थान पर भावनाओं की अभिव्यक्ति करने में असमर्थ होता है तो वह किसी अन्य स्थान पर भावना अभिव्यक्ति करते हुए समायोजन स्थापित करता है।
जैसे–कक्षा में अध्यापक से डांट खाने के बाद बालक, छोटे भाई–बहिनों को मारता–पीटता है अथवा बगीचे के फूलों को तोड़ता है तो इस युक्ति को विस्थापन कहते हैं।

☞ **तादात्मीकरण / आत्मीकरण (Assimilation)**–जब व्यक्ति अपना अस्तित्व भूलकर किसी ओर के गुण–दोषों को अपनाने का प्रयास करता है तो इस युक्ति को तादात्मीकरण कहते हैं।

☞ **शोधन / मार्गान्तीकरण / उदात्तीकरण (Sublimation)**–जब व्यक्ति समाज द्वारा अमान्य प्रवृत्तियों को मान्य प्रवृत्तियों में परिवर्तित करते हुए समायोजन स्थापित करता है तो इसे शोधन अथवा मार्गान्तीकरण कहते हैं। जैसे–एक बालक जिसे अत्यधिक क्रोध आता है उसे सेना में भर्ती करवाकर उसके क्रोध का मार्गान्तीकरण किया जा सकता है।

☞ **पलायनवादी व्यवहार**–नवीन परिस्थितियों का सामना नहीं कर पाने के कारण उन परिस्थितियों से पूरी तरह से पीछा छुड़ाना अथवा भाग जाना पलायनवादी व्यवहार है।

☞ **समझौतावादी उपाय**–वास्तविक वस्तुओं के स्थान पर किसी अन्य वस्तु को उपयोग करते हुए समझौता स्थापित करना।

➲ **समायोजन के आक्रामक उपाय–**

प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष

☞ आक्रामक उपाय का अर्थ है आत्म सम्मान को ठेस पहुँचाने वाले व्यक्ति से बदला लेना।

☞ **प्रत्यक्ष आक्रामक उपाय**–जिस व्यक्ति ने जिस प्रकार से आत्म–सम्मान को ठेस पहुँचाई है उसी प्रकार ठेस पहुँचाना। जैसे–खून का बदला खून।

☞ **अप्रत्यक्ष आक्रामक उपाय**–आत्म सम्माने को ठेस पहुँचाने वाले व्यक्ति से किसी और तरीके से बदला लेना। जैसे–शिक्षक द्वारा प्रधानाचार्य की पुरानी फाइलों (महत्त्वपूर्ण) को जलाना।

➲ **समायोजन के क्षति–पूरक उपाय–**

प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष

☞ **प्रत्यक्ष क्षतिपूरक उपाय**–व्यक्ति जिस क्षेत्र में कमजोर है उसी क्षेत्र में प्रयास करते हुए क्षति–पूर्ति करे। जैसे–अंग्रेजी विषय में कमजोर बालक सर्वाधिक समय अंग्रेजी ही पढ़े।

☞ **अप्रत्यक्ष क्षति–पूरक उपाय**–व्यक्ति जिस क्षेत्र में कमजोर है उसे छोड़कर किसी अन्य क्षेत्र में प्रयास करे। जैसे–1. पढ़ने–लिखने में कमजोर छात्र क्रिकेट के मैदान में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करे। 2. विकलांग बालक कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करे।

➲ **मानसिक स्वास्थ्य–**

मानव में शारीरिक स्वास्थ्य के साथ ही **मानसिक स्वास्थ्य** का भी विशेष महत्त्व है क्योंकि स्वस्थ शरीर व स्वस्थ मस्तिष्क होने पर ही अधिगम संभव है तथा मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति ही समायोजित रह सकता है।

⇨ इस संदर्भ में मनोवैज्ञानिक **ल्यूकन** ने लिखा है–''मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति वह है जो स्वयं सुखी रहता है, दूसरों को सुखी रहने देता है, अपने बच्चों को सुनागरिक बनाता है और इसके बाद बची हुई ऊर्जा को जनकल्याण में लगाता है।''

⇨ **लाडेल** के अनुसार–''मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति सामाजिक वातावरण के धरातल में जीना पंसद करता है।''

⇨ एक विद्यालय में शिक्षक व विद्यार्थी होते हैं इनका मानसिक स्वास्थ्य ठीक रहने पर ही सही शैक्षिक उद्देश्य पूरे होते हैं। इनके स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक निम्न हैं–

1. **शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक**–कार्य का अधिभार, वेतन विसंगति, पद का भय, आपसी संघर्ष, शिक्षण सामग्री का अभाव, निरंकुश प्रशासक।
2. **विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक**–परिवार का वातावरण, विद्यालय का वातावरण, समुदाय का वातावरण, आर्थिक स्थिति, शिक्षकों का व्यवहार, वंश क्रम, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य।

☞ **मानसिक रूप से स्वस्थ** व्यक्ति **नियमित दिनचर्या, आत्म विश्वास, सहनशीलता, समायोजन योग्यता, नेतृत्व कौशल, निर्णय शक्ति, कार्य संतुष्टि, वास्तविकता का जीवन, संवेग स्थिरता** एवं **उच्च आकांक्षा स्तर** का धनी होती है।

अभ्यास प्रश्न

1. सामयोजन की प्रक्रिया है -

(अ) गतिशील (ब) स्थिर (स) स्थानापन्न (द) मानसिक (अ)

2. व्यक्तित्व का कुसमायोजन प्रकट करता है -

(अ) झगड़ालु प्रवृत्तियों में (ब) पलायनवादी प्रवृत्तियों में (स) आक्रमणकारी के रूप में (द) उपर्युक्त सभी में (द)

3. कल्पना की अधिकता के कारण दिवास्वप्न देखने वालों को कहते हैं -

(अ) समायोजित व्यक्ति (ब) असमायोजित व्यक्ति (स) बुद्धिमान व्यक्ति (द) उपर्युक्त सभी (ब)

4. समायोजन दूषित होता है -

(अ) कुण्ठा से (ब) संघर्ष से (स) उपर्युक्त दोनों से (द) धन से (स)

5. समायोजन नहीं कर पाने का कारण है -

(अ) द्वन्द्व (ब) तनाव (स) कुण्ठा (द) उपर्युक्त सभी (द)

6. विचलनात्मक व्यवहार समायोजन के लिए होता है-

(अ) अच्छा (ब) बुरा (स) सहयोगी (द) ये सभी (ब)

7. विद्यालय में शिक्षक बालकों के समायोजन के लिए कार्य नहीं करेगा -

(अ) व्यक्तिगत शिक्षण की व्यवस्था करना (ब) संवेगात्मक स्थिरता लाने का प्रयास करना

(स) कठोर दण्ड देकर कार्य करवाना (द) सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना (स)

8. किसी इच्छा या आवश्यकता में बाधा पड़ने से उत्पन्न होने वाला संवेगात्मक तनाव कहलाता है -

(अ) भग्नाशा (ब) संघर्ष (स) तनाव (द) उपर्युक्त सभी (अ)

9. मनस्तापी बालकों की समस्या नहीं है -

(अ) सीखने की धीमी गति (ब) अमूर्त चिन्तन का अभाव

(स) मौलिकता (द) शारीरिक दोष (स)

10. व्यक्तित्व के समायोजन में निम्न मे से जो तत्व बाधक हैं, वह है-

(अ) भग्नाशा (ब) आशा (स) उत्साह (द) खेल (अ)

11. निम्न में से वह कारक जो असामाजित बालक की पहचान कराने वाला है -

(अ) अस्थिर संवेग (ब) उत्साह (स) चतुराई (द) विद्वता (अ)

12. निम्न में से समायोजन का तरीका नहीं है, वह है -

(अ) मनोविश्लेषण (ब) कुशिक्षा (स) पुनर्शिक्षा (द) मनोअभिनय (ब)

13. समायोजन की प्रक्रिया है-

(अ) स्थिर (ब) गतिशील (स) मानसिक (द) स्थानापन्न (ब)

14. विद्यालय में शिक्षक बालकों के समायोजन के लिए कार्य नहीं करेगा-

(अ) कठोर दण्ड देगा (ब) सहानुभूति पूर्ण व्यवहार

(द) व्यक्तिगत शिक्षण (द) संवेगात्मक स्थिरता लाने का प्रयास करेगा (अ)

15. व्यक्तित्व का कुसमायोजन प्रकट करता है-

(अ) झगड़ालु प्रवृत्ति (ब) पलायन वादी प्रवृत्ति (स) आक्रमणकारी प्रवृत्ति (द) सभी (द)

16. ''किसी इच्छा या आवश्यकता में बाधा पड़ने से उत्पन्न होने वाला संवेगात्मक तनाव'' कहलाता है-

(अ) भग्नाशा (ब) संघर्ष (स) तनाव (द) सभी (अ)

17. कुसमायोजित व्यक्तित्व के लक्षण है-

(अ) मन व बुद्धि स्थिर (ब) मन व बुद्धि अस्थिर (स) प्रसन्नता (द) कोई नहीं (ब)

18. ''भग्नाशा का अर्थ है- किसी इच्छा या आवश्यकता में बाधा पड़ने से उत्पन्न होने वाला संवेगात्मक तनाव।'' कथन है-

(अ) गुड (ब) गैरेट (स) गेट्स (द) मन (अ)

19. समायोजन करने वाले व्यक्ति का लक्षण है-

(अ) संतुलन (ब) संतुष्टि व सुख

(स) समाज के अन्य व्यक्तियों का ध्यान (द) सभी (द)

20. बालकों के कुसमायोजित होने के कारण होते हैं-

(अ) आनुवंशिक कारण (ब) स्वभावगत या संवेगात्मक (स) शारीरिक (द) सभी (द)

अभिप्रेरणा (Motivation)

☞ **मोटीवेशन** (Motivation) शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के **मोटम** (Motum) शब्द से मानी जाती है जिसका अर्थ है **मूव** (To Move) तथा **मोशन** (Motion) अर्थात् ऐसी प्रक्रिया जिसके बाद व्यक्ति गतिशील या सक्रिय हो जाता है।

☞ मनोवैज्ञानिक अर्थ में '**अभिप्रेरणा**' से हमारा अभिप्राय केवल **आन्तरिक उत्तेजना** से होता है जिनके कारण व्यक्ति कोई कार्य या व्यवहार करता है। इस अर्थ में बाहरी उत्तेजनाओं को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता है।

☞ दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि अभिप्रेरणा एक **आन्तरिक शक्ति** होती है, जो व्यक्ति को कार्य करने के लिए सदैव प्रेरित कर सकती है अर्थात् **अभिप्रेरणा ध्यानाकर्षण या लालच की कला है** जो व्यक्ति में किसी कार्य को करने की इच्छा एवं जिज्ञासा उत्पन्न करती है। यह एक अदृश्य शक्ति मानी जाती है, जिसको देखा नहीं जा सकता है। इस प्रकार हम आधारित व्यवहार को देखकर केवल इसका अनुमान लगा सकते हैं। इस प्रकार **अभिप्रेरणा वह कारक है जो किसी कार्य को गति प्रदान करती है।**

➲ **मुख्य परिभाषाएँ**

☞ **स्किनर** के अनुसार, ''अभिप्रेरणा अधिगम का सर्वोच्च राजमार्ग है।''

☞ **गुड** के अनुसार, ''अभिप्रेरणा, कार्य को आरम्भ करने, जारी रखने और नियमित करने की प्रक्रिया है।''

☞ **ब्लेयर, जोन्सन एवं सिम्पसन** के अनुसार, ''प्रेरणा एक प्रक्रिया है जिसमें सीखने वाले की आन्तरिक शक्तियाँ या आवश्यकताएँ उसके वातावरण में विभिन्न लक्ष्यों की ओर निर्देशित होती है।''

➲ **अभिप्रेरणा चक्र**–अभिप्रेरणा एक चक्र के रूप में काम करती है जिसमें निम्न तीन चरण होते हैं–

(1) **आवश्यकताएँ (Need)**–प्रत्येक प्राणी की कुछ आधारभूत आवश्यकताएँ (जल, वायु, भोजन) होती हैं, जिनके बिना जीवन सम्भव नहीं है। आवश्यकता की पूर्ति न होने पर शरीर में तनाव व असंतुलन होता है। फलस्वरूप प्राणी क्रियाशील होता है। **उदाहरणार्थ**–जब शरीर की कोशिकाओं में पानी की कमी हो जाती है, तो शरीर को पानी की आवश्यकता महसूस होती है।

(2) **चालक/अर्न्तनोद/प्रणोदन (Drive)**–आवश्यकताएँ उनसे सम्बन्धित चालक को जन्म देती है। **उदाहरणार्थ**–शरीर को पानी की आवश्यकता होने पर प्यास लगती है।

(3) **उद्दीपन/प्रोत्साहन (Incentive)**–उद्दीपन द्वारा आवश्यकता की पूर्ति होती है। आवश्यकता उत्पन्न होने के कारण–चालक की उत्पत्ति। जिस वस्तु से यह आवश्यकता पूर्ण होती है वह उद्दीपन है तथा इसकी पूर्ति के लिए प्रोत्साहन देना होता है। **उदाहरणार्थ**–प्यास लगने पर पानी पीना।
इस प्रकार से एक अभिप्रेरणा चक्र पूरा होता है।

☞ **गेट्स व अन्य** के अनुसार, ''प्रेरक, प्राणी के भीतर की वे शारीरिक और मनोवैज्ञानिक दशाएँ है, जो उसे निश्चित विधियों के अनुसार कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं।''

➲ **अभिप्रेरणा के घटक**–

जॉन पी. डिसैको ने अभिप्रेरणा के चार घटक बताये हैं–

1. **उत्तेजना (सचेत/चौंकना)**–किसी प्राणी की उत्तेजित होने की सामान्य अवस्था उत्तेजना कहलाती है। इसके तीन स्तर होते हैं उच्च, मध्य, निम्न। **उदाहरणार्थ**–उच्च स्तर–व्यक्ति का उतावला या चिन्तित होना। मध्य स्तर–व्यक्ति का सतर्क होना। निम्न स्तर–एक व्यक्ति सो रहा है।
2. **आकांक्षा**–ब्रूम के अनुसार, आकांक्षा एक क्षणिक विश्वास है कि ऐसा करने से, ऐसा होगा।
उदाहरणार्थ–यदि किसी विद्यार्थी को विश्वास है कि किसी पुस्तक से, आने वाले प्रश्न पत्र में उस पुस्तक से चार प्रश्न मिलने की संभावना है तो वह उस पुस्तक को पूरी पढ़ना चाहेगा।
3. **प्रोत्साहन**–प्रोत्साहन लक्ष्य तक पहुँचने का एकमात्र पूर्ण साधन होता है।
उदाहरणार्थ–किसी छात्र को किसी परीक्षा में 100 छात्रों में से प्रथम स्थान प्राप्त करने पर उसे उसकी प्रशंसा की जाये तो वह अगली कक्षा में भी प्रथम स्थान प्राप्त करने की कोशिश करेगा।
4. **दण्ड**–थार्नडाइक के अनुसार, बालक को दण्ड देते समय उसको उसका अपराध बता देना चाहिए दण्ड केवल उसी स्थिति में ही दिया जाना चाहिए जब धनात्मक तरीकों से काम न चले।

➲ **प्रेरकों का वर्गीकरण (Classification of Motives)**

1. मैसलो के अनुसार -

(A) जन्मजात प्रेरक–ये प्रेरक व्यक्ति में जन्म से पाये जाते हैं। इन्हें **जैविक या शारीरिक प्रेरक** भी कहते हैं। जैसे–भूख लगना, प्यास लगना, काम, निन्द्रा, विश्राम आदि।

(B) अर्जित प्रेरक–यह प्रेरक अर्जित (सीखे जाते) किये जाते हैं। जैसे–रुचि, आदत, सामुदायिकता की भावना आदि।

2. थॉमसन के अनुसार -

(A) स्वाभाविक प्रेरक–ये प्रेरक व्यक्ति में स्वभाव से ही पाये जाते है। जैसे–खेल, अनुकरण, सुझाव, प्रतिष्ठा, सुख-प्राप्ति आदि।

(B) कृत्रिम प्रेरक–यह स्वाभाविक प्रेरक के पूरक के रूप में कार्य करते है तथा व्यक्ति के कार्य व व्यवहार को नियंत्रित व प्रोत्साहित करते हैं। जैसे–दण्ड, पुरस्कार, सहयोग, व्यक्तिगत व सामूहिक कार्य की प्रेरणा।

3. गैरेट के अनुसार -

(A) जैविक/दैहिक प्रेरक–ये प्रेरक व्यक्ति में जन्म से ही रहते हैं। इन्हें जैविक या शारीरिक प्रेरक भी कहते हैं। ये संवेग होते हैं। जैसे–भूख, प्यास, काम, निद्रा, विश्राम।

(B) सामाजिक प्रेरक–ये प्रेरक सामाजिक आदर्शों, स्थितियों, सम्बन्धों आदि से जुड़े होते हैं। ये व्यक्ति के व्यवहार पर असाधारण प्रभाव डालते हैं, ये मूल प्रवृत्तियाँ होती है। जैसे–आत्मसुरक्षा, प्रदर्शन, जिज्ञासा आदि।

(C) मनोवैज्ञानिक प्रेरक–ये प्रबल मनोवैज्ञानिक दशाओं के कारण उत्पन्न होते हैं। गैरेट ने इनके अंतर्गत संवेगों को स्थान दिया है। जैसे क्रोध, भय, प्रेम, दु:ख, आनन्द।

➲ **अभिप्रेरणा के सिद्धान्त (Theories of Motivation)**

1. मूल प्रवृत्ति सिद्धान्त (Instinct Theory of Motivation)–अभिप्रेरणा के मूल प्रवृत्ति सिद्धान्त का प्रतिपादन सन् **1908** में **विलियम मैक्डूगल** ने किया था। वस्तुत: यह सिद्धान्त यह मानता है कि किसी भी की गई परिस्थिति में किसी विशेष प्रकार का व्यवहार मानव क्यों करता है, इस प्रश्न का सबसे पुराना स्पष्टीकरण अथवा प्राचीन हल है। चार्ल्स इरविन की मान्यता थी कि प्राणी कुछ मूलभूत क्रियाओं को अपनी पहली पीढ़ी से सीखता है, जैसे–किसी बालक की नाखून कुतरने की आदत।

☞ **मैक्डूगल** के अनुसार–14 मूल प्रवृत्तियाँ होती है। जिनका जन्म संवेगों से होता है।

2. अभिप्रेरणा का आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धान्त–इस सिद्धान्त का प्रतिपादन 1954 ई. में **अब्राहम मैस्लों** ने किया। इन्होंने आत्म सिद्धि प्रत्यय का उल्लेख किया तथा उसकी पूर्ति के लिए निम्न आवश्यकताओं को पदानुक्रम में बतलाया–

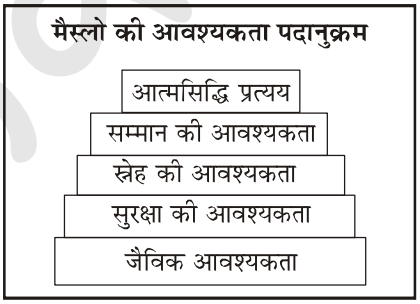

3. अभिप्रेरणा का चालक का सिद्धान्त (Drive-Reducation Theory of Motivation)– अभिप्रेरणा के चालक का सिद्धान्त का प्रतिपादन **सन् 1943** में **क्लार्क लियोनार्ड हल** के द्वारा किया गया था। अनुक्रिया प्रारम्भ करने तथा बनाये रखने में हल ने भूख, प्यास, यौन क्रिया, दर्द से मुक्ति जैसे जैवकीय प्रणोदों की भूमिका पर अत्यधिक बल दिया गया। उसके अनुसार यह जैवकीय प्रणोद व्यक्ति में आन्तरिक तनाव उत्पन्न करते हैं जिसे दूर करने के लिए प्राय: व्यक्ति क्रियाशील हो जाता है। कालान्तर में इस सिद्धान्त का महत्त्व धीरे-धीरे कम होता गया। वर्तमान में यह पूर्णत: निरर्थक बन चुका है।

4. मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त (Psychoanalytic Theory)– इस सिद्धान्त के प्रतिपादक **सिगमण्ड फ्रायड** के अनुसार अभिप्रेरणा के प्रमुख रूप से दो मूल प्रवृत्तियाँ होती है जिनमें से एक इरोज (जन्म से संबंधित / निर्माणात्मक) तथा दूसरी थनेटोस (मृत्यु से संबंधित / विध्वंसात्मक) होती है।

5. उद्दीपन अनुक्रिया का सिद्धान्त :-यह मत व्यवहारवादियों द्वारा प्रतिपादित किया गया है। मुख्यत: स्कीनर प्रतिपादक हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार मानव का समस्त व्यवहार शरीर द्वारा उद्दीपन के परिणामस्वरूप होने वाली अनुक्रिया से माना जाता है।

6. उपलब्धि अभिप्रेरणा का सिद्धान्त :-इस सिद्धांत का प्रतिपादन डेविस मेक्लीएण्ड तथा एटकिन्सन द्वारा किया गया। इनके अनुसार जब व्यक्ति को आवश्यकता के समय अवसर उपलब्ध होता है तो वह कार्य करके सकारात्मक परिणाम प्राप्त करते हुए अगले कार्यों के लिए प्रेरित होता है।

मैक्डूगल के अनुसार संवेग व मूलप्रवृत्तियाँ

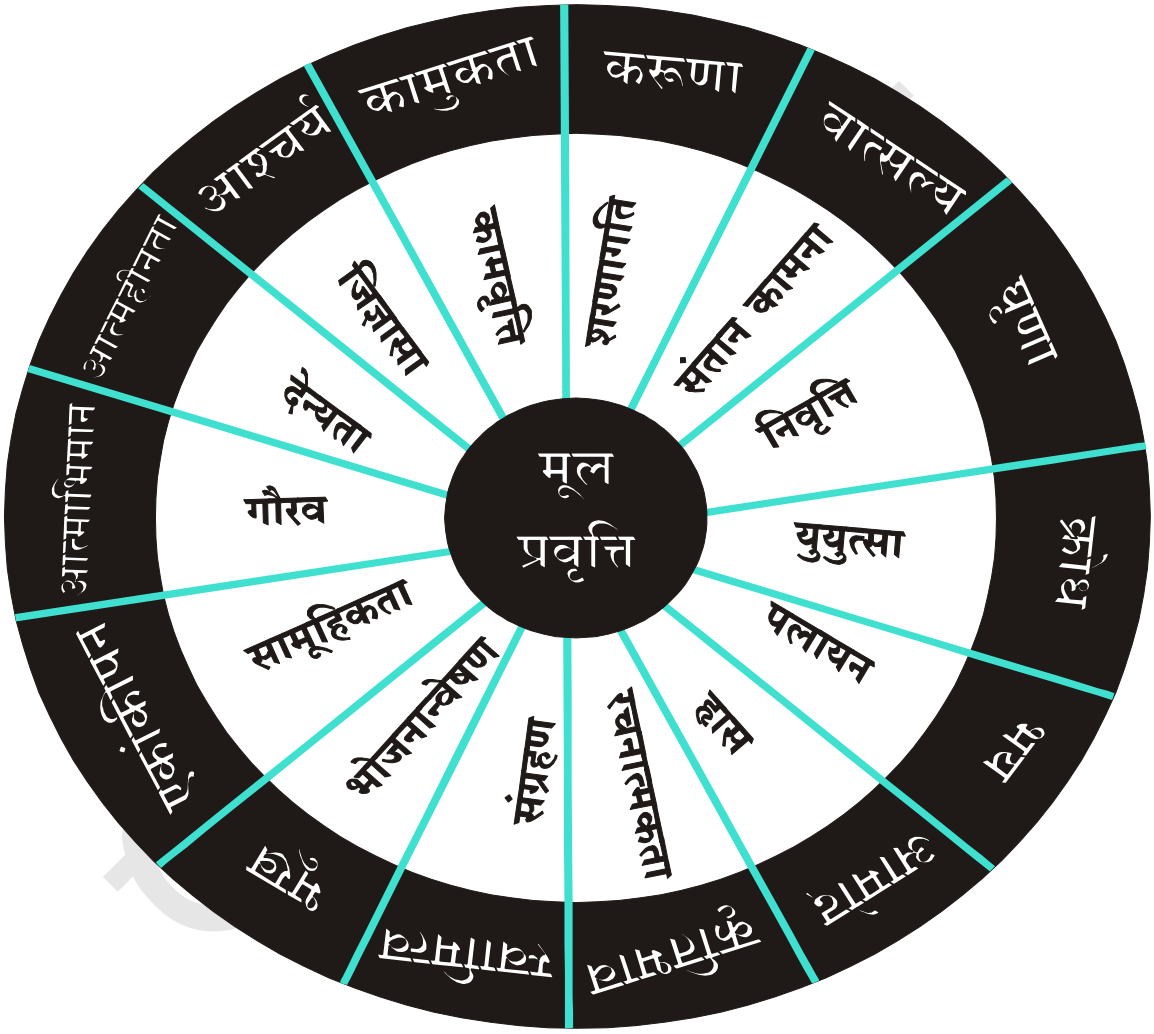

अभ्यास प्रश्न

1. अभिप्रेरणा से सम्बन्धित व्यवहार का लक्षण है-
(अ) उत्सुकता (ब) दिवास्वप्न (स) भग्नाशाएँ (द) कुसमायोजन (अ)

2. स्वधारणा अभिप्रेरक है -
(अ) सामाजिक (ब) चेतावनीपूर्ण आन्तरिक धारणा (स) बाह्य (द) व्यक्तिगत (ब)

3. स्वाभाविक प्रेरक है-
(अ) दण्ड (ब) पुरस्कार (स) अनुकरण (द) प्रशंसा (स)

4. अभिप्रेरणा को प्रभावित करने वाले कारक है-
(अ) आवश्यकताएँ (ब) आकांक्षा स्तर एवं रूचि (स) संवेगात्मक स्थिति (द) उपर्युक्त सभी (द)

5. ऐसे प्रेरक जो विभिन्न व्यक्तियों के विभिन्न परिस्थितियों में पलने के कारण विकसित होते हैं, वे कहलाते हैं -
(अ) सामाजिक प्रेरक (ब) जन्मजात प्रेरक (स) व्यक्तिगत प्रेरक (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं (स)

6. वह कारक जो व्यक्ति को कार्य करने के लिए उत्साह बढ़ाता या घटाता है, उसे कहते हैं–
(अ) अधिगम (ब) स्वधारणा (स) अभिप्रेरणा (द) कोई नहीं (स)

7. ऐसे प्रेरक जो व्यक्ति जन्म के साथ ही लेकर आता हैं, वह है
(अ) जन्मजात प्रेरक (ब) प्राकृतिक प्रेरक (स) सामाजिक प्रेरक (द) अर्जित प्रेरक (अ)

8. अर्जित प्रेरक के अन्तर्गत आते हैं -
(अ) जीवन लक्ष्य व मनोवृतियाँ (ब) मद-व्यसन (स) आदत की विवशता (द) उपर्युक्त सभी (द)

9. कौन सा प्रेरक अर्जित प्रेरक नहीं है -
(अ) मद-व्यसन (ब) आदत की विवशता (स) आकांक्षा स्तर (द) क्रोध (द)

10. 'अभिप्रेरणा अधिगम का सर्वोत्कृष्ठ राजमार्ग है' अभिप्रेरणा के बारे में यह कथन है -
(अ) गिल्फोर्ड का (ब) स्किनर का (स) गुड का (द) बर्नाडे का (ब)

11. प्यास एक तरह की -
(अ) चक्रीय आवश्यकता है (ब) अचक्रीय आवश्यकता है (स) विशिष्ट आवश्यकता है (द) सामान्य आवश्यकता है (अ)

12. मैकक्लिएण्ड का योगदान निम्नांकित में से किस क्षेत्र में सबसे प्रमुख है।
(अ) संबंध की आवश्यकता (ब) आक्रमकता अभिप्रेरण (स) उपलब्धि अभिप्रेरक (द) शक्ति अभिप्रेरक (स)

13. 'मूल प्रवृत्ति अभिप्रेरणा सिद्धान्त' के प्रवर्तक कौन कहलाते है-
(अ) फ्रायड व जुँग (ब) कुर्ट लेविन (स) मैक्डूगल (द) स्किनर (स)

14. ''मोटीवेशन'' शब्द की उत्पत्ति किस भाषा के शब्द से हुई है-
(अ) फ्रेंच (ब) जर्मन (स) लेटिन (द) कुई (स)

15. ऐसा कौनसा अभिप्रेरणा का सिद्धान्त है जो कि संकल्प शक्ति पर बल देता है-
(अ) ऐच्छिक सिद्धान्त (ब) क्षेत्रीय सिद्धान्त (स) शारीरिक सिद्धान्त (द) सभी (अ)

16. निम्न में से अभिप्रेरणा का कौनसा स्त्रोत है-
(अ) आवश्यकता (ब) चालक (स) उद्दीपन (द) सभी (द)

17. किस विद्वान के अनुसार प्रेरकों का वर्गीकरण ''जन्मजात व अर्जित'' है-
(अ) मैस्लो (ब) थॉमसन (स) गैरेट (द) गेट्स (अ)

18. मैस्लों के अतिरिक्त किन विद्वानों ने प्रेरकों का वर्गीकरण किया-
(अ) गैरेट व थॉमसन (ब) स्किनर (स) वुडवर्थ (द) हीथकोट (अ)

19. ''उपलब्धि अभिप्रेरक'' अभिप्रेरणा को सर्वाधिक महत्त्व दिया-
(अ) गैरेट (ब) मैक्लिलेण्ड व एट किन्सन
(स) लॉरेन्स (द) कोई नहीं (ब)

20. किस अभिप्रेरणा को ''बाह्य प्रेरणा'' भी कहते हैं-
(अ) सकारात्मक प्रेरणा (ब) नकारात्मक प्रेरणा (स) जन्मजात प्रेरणा (द) कोई नहीं (ब)

व्यैक्तिक विभिन्नताएँ

☞ व्यैक्तिक भिन्नता का सर्वप्रथम अध्ययन गाल्टन ने 1879 ई. में प्रारम्भ किया। इस दिशा में वैज्ञानिक कार्य कैटिल ने 1890-99 ई. में किया। प्रत्येक व्यक्ति की शारीरिक व मानसिक योग्यताएँ समान न होकर भिन्न-भिन्न होती हैं। इस दृष्टि से व्यैक्तिक भिन्नता प्रकृति द्वारा प्रदत्त स्वाभाविक गुण है। मनोविज्ञान के युग में 19वीं शताब्दी में टर्मन, पियर्सन, गाल्टन, कैटेल जैसे विद्वानों ने व्यैक्तिक भिन्नताओं के बारे में पता लगाया। मानसिक विकास का मापन करने के लिये अल्फर्ड बिने ने बुद्धि परीक्षण का निर्माण करके वैयक्तिक भिन्नताओं को सबसे पहले निर्धारित करने में बहुत ही सराहनीय कार्य किया।

☞ **स्किनर** के अनुसार-''व्यैक्तिक विभिन्नता में सम्पूर्ण व्यक्तिगत कोई भी ऐसा पहलू सम्मिलित हो सकता है, जिसका माप किया जा सकता है।''

➲ **व्यैक्तिक भिन्नताओं के प्रकार**

1. शारीरिक विभिन्नता-Physical Difference
2. मानसिक विभिन्नता-Mental Difference
3. संवेगात्मक विभिन्नता-Emotional Difference
4. रुचियों में विभिन्नता-Interests Difference
5. सीखने में विभिन्नता-Difference in Learning
6. चरित्र में विभिन्नता-Difference in Character
7. गत्यात्मक योग्यताओं में विभिन्नता-Difference in Motor Activites
8. व्यक्तित्व में विभिन्नता-Difference in Personality
9. विशिष्ट योग्यता में विभिन्नता-Difference in Special Ability

➲ **व्यैक्तिक भिन्नताओं को प्रभावित करने वाले तत्व/कारक**

1. **वंशानुक्रम/आनुवांशिकता**-वंशानुक्रम व्यैक्तिक विभिन्नता का प्रमुख कारण है। रूसों, पियरसन, टर्मन, गाल्टन, आदि इसके प्रमुख समर्थक है। माता-पिता के जीन्स (गुण एवं विशेषताएँ) मिले-जुले रूप में बच्चों को मिलते है। अत: बच्चों की शारीरिक, सामाजिक और चारित्रिक विभिन्नताओं का मुख्य कारण वंशानुक्रम/आनुवांशिकता है।

2. **वातावरण/पर्यावरण**-व्यक्ति जिस प्रकार के पर्यावरण/वातावरण में रहता है, उसी के अनुसार व्यक्ति रहन-सहन, आचार-विचार एवं व्यवहार में परिवर्तन कर लेता है।

3. **जाति, प्रजाति व देश/समाज**-जिस प्रकार की जाति, प्रजाति व देश होगा उसी प्रकार से बालकों का विकास होगा। जाति, प्रजाति व देश में धर्म, संस्कृति, आचार संहिताएँ, नियम, विश्वास एवं विभिन्न रीति-रिवाज मिलकर व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करके व्यक्तिक भिन्नताओं को जन्म देते है।

4. **परिपक्वता**-परिपक्वता भी बालक के व्यक्तिगत विभिन्नता का कारण है। छोटे बालक की समझ व कार्य तथा बड़े बालक की समझ व कार्य में अन्तर परिपक्वता के कारण ही होता है।

5. **आयु**-जैसे-जैसे आयु बढ़ती है उसी के साथ व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं संवेगात्मक विकास होता है जिनसे व्यक्तिक भिन्नताओं को जन्म होता है।

6. **शिक्षा एवं आर्थिक दशा**-शिक्षा व्यक्ति को शिष्टाचार का पाठ पढ़ाती है। जिससे व्यक्ति गंभीर एवं विचारशील बनकर अशिक्षित व्यक्ति से अलग पहचान बनाता है। आर्थिक स्थिति से पिछड़े बालक तथा उच्च वर्ग के बालकों में व्यक्तिगत विभिन्नता देखी जा सकती है।

7. **लिंग भेद**-व्यक्तिक भिन्नता का एक प्रमुख कारण लिंगभेद है। लड़के व लड़कियों में सदैव भिन्नता रहती है। जिसके कारण बालक व बालिकाओं की शारीरिक बनावट, संवेगात्मक विकास में काफी अन्तर पाया जाता है। उदाहरण-बालक साहसी व परिश्रमी होते हैं जबकि बालिकाएँ कोमल, दयालु व लज्जाशील होती हैं।

8. **बुद्धि**-बुद्धि एक जन्मजात गुण है जिसके कारण कुछ बालक तीव्र बुद्धि वाले तो कुछ बालक मंद बुद्धि के होते हैं।

➲ **प्रतिभाशाली बालक (Gifted Children)**— जिन बालकों की बुद्धि लब्धि 140 या अधिक होती है, उन्हें **प्रतिभाशाली बालक** कहा जाता है। किसी भी राष्ट्र अथवा समाज की प्रगति उस राष्ट्र अथवा समाज के प्रतिभा शाली बालकों के ऊपर ही निर्भर करती है। प्रतिभाशाली बालकों में विकास की संभावनाएँ अधिक होती है।

☞ **स्किनर एवं हैरीमैन** के अनुसार, '**प्रतिभाशाली**' शब्द का प्रयोग उन **एक प्रतिशत बालकों** के लिए किया जाता है जो सबसे अधिक बुद्धिमान होते हैं।''

☞ **क्रो एवं क्रो** के अनुसार, प्रतिभाशाली बालक दो प्रकार के होते हैं–

(1) वे बालक जिनकी **बुद्धि लब्धि-130** से अधिक होती है।

(2) वे बालक जो गणित, कला, संगीत, अभिनय आदि में एक या अधिक में विशेष योग्यता रखते हैं।

➲ **प्रतिभाशाली बालकों की विशेषताएँ**

1. पढने लिखने में अधिक रूचि
2. शब्द भण्डार व्यापक
3. कठिन विषयों में अधिक रूचि
4. ज्ञानेन्द्रियों का विकास तीव्रता से
5. सामान्य ज्ञान अधिक अच्छा
6. अमूर्त विषयों में अधिक रूचि
7. विद्यालयी परीक्षाओं में अधिक अंक
8. बुद्धि परीक्षाओं में अधिक अंक
9. अर्न्तदृष्टि अधिक होना
10. क्रियाकलापों में भिन्नता
11. समस्या समाधान में शीघ्रता
12. तीव्र तर्कशक्ति
13. विद्यालयी कार्य व गृहकार्य करने में शीघ्रता

➲ **मन्द बुद्धि बालक (Mentally Retarded Children)**—मन्द बुद्धि बालकों से तात्पर्य उन बालकों से हैं जिनकी **मानसिक योग्यता सामान्य बालकों से कम** तथा सीखने की गति धीमी होती है। 1913 ई. तक मन्द बुद्धि एवं पिछड़े बालकों में कोई अन्तर नहीं किया जाता था, परन्तु **1913 ई. में इंग्लैण्ड में 'Mental Deficiency atc.'** बनाकर मन्द बुद्धि व पिछड़े बालकों में अन्तर के बारे में बताया गया।

मानसिक मन्दता पर **अमेरिका एसोशिएसन** के विचार–

☞ ''मानसिक पिछड़ेपन से तात्पर्य सार्थक रूप में औसत से कम सामान्य बौद्धिक कार्यपरकता से है जो अनुकूलन व्यवहार में कमी के सहगामी के रूप में विद्यमान होती है तथा विकासात्मक अवस्था में परिलक्षित होती है।''

☞ **क्रो एवं क्रो** के अनुसार–''जिन बालकों की **बुद्धि लब्धि 70 से कम** होती है, उनको मन्द बुद्धि बालक कहते हैं।''

☞ **स्किनर** के अनुसार–''प्रत्येक कक्षा के छात्रों को एक वर्ष में शिक्षा का एक निश्चित कार्यक्रम पूरा करना पड़ता है जो छात्र उसे पूरा कर लेते हैं, उनको सामान्य छात्र कहा जाता है। जो छात्र उसे पूरा नहीं कर पाते है, उनको मन्द बुद्धि छात्र की संज्ञा दी जाती है।''

☞ मानसिक रूप से विकलांग बालक को विमंदित बालक/ अधिगम निर्योग्य बालक भी कहते हैं। इन बालकों में अवधान अर्थात् ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता कम पाई जाती है। तार्किक क्षमता का अभाव जीवन के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण पाया जाता है। ये बालक दैनिक कार्य करने में भी पूर्ण रूप से सक्षम नहीं होते हैं।

☞ **मन्द बुद्धि बालकों की विशेषताएँ**

1. बालकों में आत्मविश्वास की कमी
2. ऐसे बालकों की **बुद्धि लब्धि 80-89** से कम
3. सीखने की गति मन्द
4. जटिल परिस्थितियों में सीखने में असफल
5. केवल अपनी चिन्ता करत हैं।
6. सीखी गई बात को अभिव्यक्त नहीं कर सकते
7. कार्य व कारण के सम्बन्ध में अजीबोगरीब धारणाएँ
8. समायोजन का अभाव
9. विभिन्न प्रकार के व्यवहार करना
10. अन्धानुकरण की प्रवृत्ति

➲ **पिछड़े बालक (Backward Children)**—पिछड़े बालक से तात्पर्य उन बालकों से हैं जो **शिक्षा प्राप्त करने में सामान्य बालकों से पिछड़ जाते** है।, अत: जो बालक अपनी कक्षा में अन्य बालकों से अध्ययन की दृष्टि से पिछड़ जाते है, उन्हें **पिछड़े बालक** कहते हैं।

☞ **पिछड़े बालक का मन्द बुद्धि होना आवश्यक नहीं है।** एक प्रतिभाशाली बालक भी पिछड़ा हो सकता है। औसत बुद्धि बालक अथवा तीव्र बुद्धि बालक भी पिछड़ा बालक हो सकता है यदि वह कक्षा के औसत छात्रों से शैक्षिक दृष्टि से कम होता है।

☞ पिछड़ेपन का उपचार सम्भव है। पिछड़ेपन के अनेक कारण हो सकते हैं। शारीरिक कारणों के अतिरिक्त परिवार के कलहपूर्ण वातावरण, परिवार की निर्धनता, बुरे मित्रों की संगति, अयोग्य व निष्ठुर अध्यापक, निर्देशन का अभाव आदि।

☞ **बर्ट** के अनुसार, ''जिस बालक की **शैक्षिक लब्धि 85 से कम** होती है, उसे पिछड़ा बालक कहा जा सकता है।''

☞ **पिछड़े बालकों की विशेषताएँ**

1. ऐसे बालकों में सीखने की गति मन्द एवं जीवन के प्रति निराशा रहती है इसलिए वह असमायोजित व्यवहार करते है।
2. पिछड़े बालक की बुद्धि लब्धि 80-89 होती है। ऐसे बालक कक्षा कार्य व गृहकार्य समुचित ढंग से करने में असमर्थ रहते हैं तथा ऐसे बालकों की विद्यालयी शैक्षिक उपलब्धि तथा परीक्षा उपलब्धि उनकी बुद्धि की तुलना में प्राय: कम होती है।
3. ऐसे बालक मानसिक रूप से अस्वस्थ रहते हैं, अत: उनमें समाज विरोधी कार्यों को करने की प्रवृत्ति होती है।

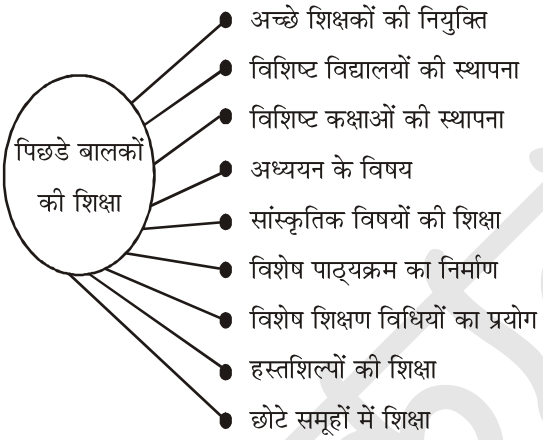

➲ **बाल अपराधी बालक (Juvenile-Delvinquency Children)**

☞ **बाल-अपराध का अर्थ**- सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने के लिए कुछ कानून होते हैं। इन कानूनों का पालन करना सबके लिए अनिवार्य होता है, चाहे वह वयस्क हो या बालक। यदि वयस्क उन कानूनों की अवहेलना करके समाज विरोधी कार्य करता है तो उसका '**अपराधे**' (Crime) कहलाता है। यदि **बालक या किशोर इस प्रकार का कार्य करता है, तो उसका कार्य बाल-अपराध कहलाता है और ऐसा बालक बाल अपराधी कहलाता है।** बाल अपराध विज्ञान के जनक '**सीजर लाम्ब्रोसो**' को माना जाता है।

☞ **स्किनर** के अनुसार-''बाल-अपराध की परिभाषा किसी कानून के उस उल्लंघन के रूप में की जाती है, जो किसी वयस्क द्वारा किये जाने पर अपराध होता है।''

☞ **हीली** के अनुसार-''वह बालक जो समाज द्वारा स्वीकृत आचरण का पालन नहीं करता, अपराधी कहा जाता है।''

☞ **बाल-अपराध उपचार (Treatment of Delinquency)**-बाल-अपराध का उपचार करने के लिए दो प्रकार की विधियों का प्रयोग किया जा सकता है-

(1) मनोवैज्ञानिक (2) वैधानिक।

बाल अपराध को रोकने के लिए परिवार, विद्यालय, व समाज का कर्तव्य है कि वे-

1. उचित वातावरण प्रदान करे
2. बालकों के निर्देश की व्यवस्था करें
3. अनैतिक कार्यों पर रोक
4. बालकों की आवश्यकताओं की पूर्ति
5. बालकों की राजनीति से पृथकता
6. सामाजिक दृष्टिकोण का विकास
7. अच्छी आदतों का निर्माण
8. व्यक्ति विभिन्नताओं का विकास
9. योग्य शिक्षकों की नियुक्ति
10. बालकों के प्रति अच्छा व्यवहार
11. आत्म निर्भरता का विकास

अभ्यास प्रश्न

1. सीखने की दर व ग्रहण करने की दर की क्षमता के आधार पर आधारित वर्गीकरण में कौनसा नहीं है-

(अ) मंदबुद्धि (धीमी गति से सीखने वाले) (ब) शिक्षण योग्य मंद बुद्धि बालक

(स) प्रशिक्षण योग्य मंद बुद्धि बालक (द) शिक्षा पाने में पूर्णत: अयोग्य बालक (अ)

2. प्रतिभाशाली बालक की विशेषताएँ है-

(अ) मानसिक प्रक्रिया की तीव्रता (ब) दैनिक कार्यों में विभिन्नता (स) पाठ्य विषयों में अत्यधिक रूचि (द) उपरोक्त सभी (द)

3. पिछड़े बालक की विशेषताएँ है-

(अ) सीखने की धीमी गति (ब) जीवन में निराशा का अनुभव (स) समाज विरोधी कार्यों की प्रवृत्ति (द) सभी (द)

4. विशिष्ट बालक का अर्थ है-

(अ) सामान्य बालकों की अपेक्षा कम या अधिक गुण वाला (ब) मन्द मुद्धि बालक

(स) प्रतिभाशाली बालक (द) समस्यात्मक (अ)

5. प्रतिभाशाली बालकों का समायोजन -

(अ) समायोजन में ऋणात्मकता अधिक होती है। (ब) सामान्य से अच्छा

(स) सामान्य (द) श्रेष्ठ (द)

6. सामान्य प्रतिभाशाली व विशिष्ट प्रतिभाशाली बालक में किस आधार पर अंतर किया जा सकता है-

(अ) बुद्धि लब्धि (ब) विशिष्ट योग्यता (स) उच्च निष्पत्ति (द) शारीरिक गठन (ब)

7. कक्षा में ऊँचा सुनने वाले तथा कमजोर नजर के छात्रों को बैठाना चाहिए-

(अ) आगे की पंक्ति में (ब) बीच की पंक्ति में (स) पीछे की पंक्ति में (द) अलग पंक्ति में (अ)

8. ''बाल अपराध की परिभाषा किसी कानून के उस उल्लंघन के रूप में की जाती है, जो किसी वयस्क द्वारा किए जाने पर अपराध होता है।'' कथन है-

(अ) गुडविल (ब) स्किनर (स) वेलेण्टाइन (द) गुड (ब)

9. कौनसा बाल अपराध है-

(अ) यौन अपराध (ब) चुनौती देने की प्रवृत्ति (स) धूम्रपान (द) सभी (द)

10. बालापराध के उपचार की विधि नहीं है-

(अ) मनोविश्लेषण विधि (ब) मनोभिनय विधि (स) कारावास (द) अधिगम (स)

11. विकलांग बच्चों की सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या है-

(अ) समायोजन की (ब) कुरूपता (स) मानसिक असंतुलन (द) शारीरिक न्यूनता (अ)

12. ''किशोरावस्था अपराध प्रवृत्ति के विकास का नाजुक समय है'' कथन है-

(अ) वेलेण्टाइन (ब) मिंरो (स) कांट (द) हरबर्ट (अ)

13. स्कूल से भागने वाले बालक के अध्ययन की सर्वाधिक उपयोगी विधि है-

(अ) प्रश्नावली विधि (ब) प्रयोगात्मक विधि (स) सर्वेक्षण विधि (द) केस स्टडी (द)

14. ऐसे बालक जिनका प्रमुख कार्य शिक्षक तथा छात्रों को परेशान करना है, वे है-

(अ) मंद बुद्धि बालक (ब) प्रतिभाशाली (स) पिछड़े बालक (द) समस्यात्मक (द)

15. ''स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण ही शिक्षा है'' कथन है-

(अ) फ्रेंडसन (ब) चानलाके (स) शोनेल (द) अरस्तु (द)

16. ''एक बालक प्रतिदिन कक्षा से भाग जाता है'' वह बालक है-

(अ) सामान्य बालक (ब) विकलांग बालक (स) समस्यात्मक बालक (द) असमायोजित (स)

17. ''बाल अपराध विज्ञान का जनक'' किसे माना जाता है-

(अ) सीजर लॉम्ब्रोसो (ब) स्किनर (स) वुडवर्थ (द) फ्रायड (अ)

18. मंद बुद्धि (DULL) बालक की बुद्धि लब्धि होती है-

(अ) 50 से 70/75 तक (ब) 90 से 110 तक (स) 140 से अधिक (द) 120 से 140 (अ)

19. बालापचार का कौनसा कारण नहीं है-

(अ) मंद बुद्धि होना (ब) पारिवारिक कलह (स) घर में विमाता/पिता का होना (द) समायोजन (द)

शिक्षण अधिगम की प्रक्रियाएँ

☞ शिक्षा शब्द का पर्याय '**एडूकेशन**' शब्द लैटिन भाषा के '**एडूकेटम**' शब्द से निकला है, इसमें दो शब्द शामिल हैं। '**ई**' (E) और '**डूको**' (Duco)। '**ई**' (E) का अर्थ है, '**अन्दर से बाहर की ओर**', '**डूको**' (Duco) का अर्थ '**आगे बढ़ाना**'। इस प्रकार शाब्दिक रूप में '**एडूकेशन**' का अर्थ है- '**अन्दर से बाहर की ओर बढ़ना या विकसित होना**'। अर्थात् शिक्षा व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों को विकसित करने की प्रक्रिया है।

➲ **शिक्षा एक प्रक्रिया**

(क) शिक्षा एकद्विमुखी प्रक्रिया–शिक्षा को द्विमुखी प्रक्रिया के रूप में भारतीय शिक्षाशास्त्री स्वीकार करते हुए, एक पक्ष पर अंत:वासी (छात्र) तथा दूसरे पर अध्यापक को स्वीकार किया है तथा यह भी स्वीकार किया गया है कि दोनों ही पक्ष महत्त्वपूर्ण हैं।

(ख) शिक्षा त्रिमुखी प्रक्रिया–पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री जॉन डी.वी. ने शिक्षा को त्रिमुखी प्रक्रिया माना है। शिक्षा में क्या पढ़ाना है? उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जितना कि किसी को पढ़ाना। अत: छात्र व शिक्षक के साथ तीसरा पक्ष विषयवस्तु या पाठ्यक्रम को भी स्वीकार किया गया है। और यह विषयवस्तु प्रदान करता है, '**समाज**'।

➲ **लक्ष्य एवं उद्देश्य**–सर्वप्रथम '**बौबित महोदय**' ने 1918 ई. में उद्देश्य शब्द का प्रयोग किया तथा **थर्नर** और **कोलेटी** ने उद्देश्यों के चुनाव हेतु व्यावहारिकता, अनुकूलता, उपयोगिता, समयबद्धता व समुचितता का होना आवश्यक मानदण्ड बताया। इस सम्बन्ध में **बी.डी. भाटिया** ने ठीक ही लिखा है, ''**लक्ष्य के ज्ञान के अभाव में शिक्षक उस नाविक के समान है, जो अपने साध्य अथवा मंजिल को नहीं जानता है और बालक उस पतवार विहिन नौका के समान है, जो लहरों के थपेड़े खाकर किसी तट पर जा लगेगी।**''

☞ **ब्लूम के अनुसार शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण**–ब्लूम ने शिक्षण पद्धति में अपने **मूल्यांकन उपागम** के माध्यम से क्रांति उत्पन्न कर दी थी। उसने शिक्षण तथा मूल्यांकन को उद्देश्य आधारित बनाने का सफल प्रयास किया। उसका वर्गीकरण मानसिक जीवन के तीन मूलभूत पक्षों पर आधारित है।

☞ **ब्लूम (1956 ई.)** के बाद ***आर.एफ. मैगर, डी.आर. क्रेथवाल*** ने भी इस क्षेत्र में कार्य किया, लेकिन ब्लूम का वर्गीकरण सर्वोत्तम माना जाता है।

(A) संज्ञानात्मक पक्ष–इस क्षेत्र में बौद्धिक पक्ष आता है, जिसका महत्त्व अधिक माना जाता है। इस क्षेत्र में समाहित क्रियाओं को छ: भागों में विभाजित किया जाता है।

(1) ज्ञान–यह संज्ञानात्मक क्षेत्र की सबसे छोटी इकाई है। यह स्मृति भ्रामक मनोवैज्ञानिक क्रिया पर आधारित है। इसमें सूचनाओं तथ्यों तथा आँकड़ों का प्रत्यास्मरण, प्रत्याभिज्ञान, परिभाषिकरण, स्मरण करना सम्मिलित हैं। **जैसे**–छात्र मौलिक अधिकारों का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे, छात्र संविधान का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे, इत्यादि।

(2) अवबोध–ज्ञान प्राप्त उद्देश्य की प्राप्ति के बाद अवबोधात्मक उद्देश्य की प्राप्ति होती है। छात्रों में अवबोध स्तर का विकास जब होता है जब वह किसी तथ्य से सम्बन्धित ज्ञानात्मक प्राप्य उद्देश्य प्राप्त कर चुके हों। इस उद्देश्य के अन्तर्गत परिभाषा देना, अनुवाद करना, प्रतिपादन करना वर्गीकरण करना, उदाहरण देना, तुलना करना इत्यादि क्रियाएँ सम्मिलित हैं। **जैसे**–छात्र नागरिकों के मूल अधिकारों और कर्त्तव्यों की तुलना कर सकेंगे।

(3) ज्ञानोपयोग–यह स्मरण की गई व समझी गई विषय वस्तु को नवीन परिस्थितियों में प्रयुक्त करने की योग्यता है। इससे छात्रों में आलोचनात्मक एवं तार्किक चिन्तन की योग्यता का विकास होता है। इसमें छात्र में प्रयोग करना, प्रदर्शन करना, जाँच करना, पूर्व कथन देने की योग्यता का विकास होता है। **जैसे**–छात्र नागरिकों के अधिकारों सम्बन्धी एवं संवैधानिक संशोधनों की समीक्षा कर सकेगा।

(4) विश्लेषण–यह विषय वस्तु को विभिन्न अंगों में विभक्त करके उसमें निहित संरचना को समझने की योग्यता है। छात्रों में सामाजिक अध्ययन से व्यावहारिक कौशल उत्पन्न होते हैं। इसके अन्तर्गत छात्रों में गणना करना, मानचित्र पढ़ना, चार्ट बनाना, मॉडल बनाना आदि क्षमताओं का विकास होता है।

(5) अभिरुचि–इस प्राप्य उद्देश्य की प्राप्ति से छात्र का सामाजिक अध्ययन विषय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है वह इस विषय के महत्व को समझ पाता है।

(6) मूल्यांकन–इसमें अधोलिखित क्रियाओं को रखा गया है।

☞ आंतरिक प्रमाण के रूप में आंकलन

☞ बाह्य प्रमाण के रूप में आंकलन

यह विषयवस्तु के महत्त्व का आंकलन करने की योग्यता है।

(B) **भावात्मक पक्ष**–ब्लूम द्वारा वर्गीकृत भावात्मक पक्ष के अंतर्गत सम्मिलित उद्देश्यों को निम्नलिखित स्थूल वर्गों में विभक्त किया गया है।

(1) **स्वीकार करना या प्राप्ति अथवा ग्रहण करना**–यह भावात्मक क्षेत्र का प्रारंभिक या निम्नतम स्तर है। इसमें सीखने वाले उद्दीपक के प्रति संवेदनशीलता प्रदर्शित करता है।

(2) **अनुक्रिया**–इसके अंतर्गित अधिक उत्प्रेरणा तथा अवधान में अधिक नियमितता की अपेक्षा की जाती है। व्यावहारिकता की दृष्टि से इसे **'अभिरुचि'** भी कहा जा सकता है।

(3) **मूल्य निर्धारण**–इसके अन्तर्गत व्यवहार की उत्प्रेरणा आती है, जो व्यक्ति की किसी मूल्य के प्रति प्रतिबद्धता पर आधारित होती है। इसे **'अभिवृत्ति'** कहा जा सकता है।

(4) **संगठन या व्यवस्था**–व्यक्ति का व्यवहार सामान्यतया किसी एकाकी अभिवृत्ति से उत्प्रेरित न होकर अभिवृत्ति समूह से होता है। ऐसे समूह के संगठित रूप को **'व्याख्या'** कहते हैं।

(5) **मूल्य का लक्षण वर्णन**–मूल्यों को निरंतर आत्मसात् करने से कार्य प्रभावित होते हैं। जब व्यक्ति इस प्रक्रिया से एक ऐसे स्तर पर पहुँच जाता है, जो **'जीवनदर्शन'** कहलाने लगते हैं।

(C) **मनोक्रियात्मक पक्ष**–इसे पाँच श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है–

(1) **अनुकरण**–व्यक्ति किसी भी कार्य को होते देख स्वयं करना प्रारंभ करता है।

(2) **परिचालन**–इस कार्य में शुद्धता लाने के लिए निर्देशों का पालन करता है।

(3) **शुद्धता**–धीरे-धीरे नियन्त्रण द्वारा कार्य को शुद्ध/सही करना प्रारंभ करता है।

(4) **संयोजन/संधिबद्ध करना**–वह क्रमबद्ध रूप से कार्य को करते हुए कार्य में सामंजस्य बैठाता है।

(5) **स्वाभाविककरण**–धीरे-धीरे वह कार्य व्यक्ति का स्वभाव बन जाता है व आदत या कौशल के रूप में दर्शाया जाता है।

➲ **शिक्षण के सिद्धान्त एवं शिक्षण सूत्र**–शिक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन लाना है, जिससे वे अधिकाधिक समाजोपयोगी बन सके। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमें शिक्षण को सफलीभूत बनाना आवश्यक है। सफल शिक्षण कुछ मूलभूत या सामान्य सिद्धान्तों एवं शिक्षण सूत्रों पर आधारित है, अत: प्रत्येक शिक्षक के लिए इनकी जानकारी अनिवार्य है। शिक्षक को शिक्षण करते समय निम्नांकित सिद्धान्तों को प्रमुख रूप से ध्यान में रखना चाहिए–

☞ **प्रमुख शिक्षण सिद्धान्त–**

(i) **जीवन से सम्बन्ध स्थापित करने का सिद्धान्त**–इस सिद्धान्त का अर्थ है, कि विषयवस्तु का छात्रों के वास्तविक जीवन से सम्बन्ध स्थापित किया जावे। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि छात्रों के सामाजिक, भौतिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि पर्यावरणों का उपयोग किया जावे। विषय वस्तु का सम्बन्ध वास्तविक जीवन से जोड़ना, इसलिए आवश्यक है, क्योंकि जीवन से सम्बन्ध स्थापित किए बिना मानवीय सम्बन्धों को समझना कठिन है।

(ii) **रुचि का सिद्धान्त**–शिक्षण को सफल एवं प्रभावशाली बनाने के लिए यह आवश्यक है कि विषयवस्तु में छात्रों की रुचि उत्पन्न की जाए। **रिवलिन** के अनुसार ''बालक की सक्रिय रुचि अधिगम को बढ़ाती है।''

(iii) **प्रेरणा का सिद्धान्त**–प्रेरणा व्यक्ति की वह आंतरिक शक्ति है, जो उसे ऐसी क्रियाशीलता उत्पन्न करती है, जो लक्ष्य की प्राप्ति तक चलती रहती है। प्रेरित हो जाने पर बालक स्वयं क्रियाशील हो जाता है। जिससे वह अपने आप कार्य में रुचि लेने लगता है।

(iv) **क्रियाशीलता का सिद्धान्त**–बालक स्वभाव से क्रियाशील होते हैं। वे हर समय कुछ-न-कुछ करते रहते हैं। अत: उसे करके सीखने का अवसर देना चाहिए। शिक्षक को इस मूलभूत एवं मनोवैज्ञानिक आधार की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। इस सिद्धान्त के महत्व को **रायबर्न** ने इन शब्दों में व्यक्त किया है–***''छात्र की क्रियाशीलता का सिद्धान्त सम्पूर्ण शिक्षण में सर्वप्रथम महत्त्व रखता है।''***

(v) **चयन का सिद्धान्त**–इस सिद्धान्त का अर्थ है कि ज्ञान अति विस्तृत है। अत: छात्रों की योग्यता, रुचि एवं आवश्यकता के अनुसार उसमें केवल उपयोगी एवं लाभप्रद बातों का ही चयन करना चाहिए।

(vi) **नियोजन का सिद्धान्त**–अतिविस्तृत ज्ञान से चुनी हुई प्रमुख बातों को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करने से पूर्व उनको नियोजित करना अनिवार्य है, क्योंकि **नियोजन अपव्यय को रोकता** है। यह शिक्षक को व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध होने में सहायता देता है। अत: किसी भी पाठ को पढ़ाने से पूर्व सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों को यह निश्चित कर लेना चाहिए कि उसे उसमें क्या पढ़ाना है और किस विधि को अपनाना है व किस सहायक सामग्री का उपयोग करना है।

(vii) **विभाजन का सिद्धान्त**–इस सिद्धान्त का अर्थ यह है कि शिक्षक को अपनी विषयवस्तु को सुगम बनाने के लिए उसका प्रस्तुतीकरण क्रमिक सोपानों या पदों में करना चाहिए।

(viii) **लोकतन्त्रिक व्यवहार का सिद्धान्त**–शिक्षक को शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए कक्षा में लोकतन्त्रिय व्यवहार करना चाहिए तथा छात्र केन्द्रित वातावरण बनाना चाहिए।

(ix) **आवृत्ति का सिद्धान्त**–आवृत्ति ज्ञान को स्थायी बनाने के लिए सीखे गये ज्ञान को समयानुसार दोहराना चाहिए, नहीं तो बालकों के स्मृति चिह्न वक्त के अनुसार धुंधले हो जावेंगे तथा दोहरान के अभाव में बालक सीखा गया ज्ञान भुला देंगे।

☞ **प्रमुख शिक्षण सूत्र**–शिक्षण शास्त्र में हमको अनेक सूत्र प्राप्त होते हैं। इनका आविष्कार नहीं किया गया, वरन् इनको खोजा गया है। इस कार्य में कमेनियस, रूसो, पेस्टोलॉजी, हर्बर्ट स्पेन्सर आदि का बहुत योगदान रहा है। वे सूत्र उन शिक्षण मार्ग की सुगम उक्तियाँ बनाते हैं, जिनसे शिक्षण और सीखना आगे बढ़ते हैं। इन शिक्षण सूत्रों का अनुसरण करने में शिक्षक अपने कार्य में सफलता प्राप्त **करता है। अधिगम के क्षेत्र में शिक्षण की प्रभावशीलता और सफलता के लिए** कुछ शिक्षण सूत्रों की चर्चा पर ध्यान दिया जाना चाहिये। शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए निम्न शिक्षण सूत्रों का पालन करना चाहिए–

(i) **ज्ञात से अज्ञात की ओर**–यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि मस्तिष्क को जानी हुई बात पसंद होती है और इस पसंद का सब बातों तक जिनका उससे सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है, स्वयं ही विस्तार हो जाता है। शिक्षा मनोविज्ञान में यह बात सर्वविदित है कि **बालक अपने पूर्वज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान को ग्रहण करता** है। अत: अध्ययन के लिए आवश्यक है कि किसी पाठ को पढ़ाने से पहले वह इस बात का पता लगा ले, कि बालक को उस विषय का कितना ज्ञान है। शिक्षक को प्रत्येक प्रकार पाठ में इस शिक्षण सूत्र का प्रयोग करना चाहिए।

(ii) **सरल से जटिल की ओर**–इस सूत्र का अर्थ यह है कि बालकों का पहले विषय की सरल बातें बताई जावें, उसके बाद ही जटिल बातों का ज्ञान कराया जाना चाहिएँ। **हर्बर्ट स्पेन्सर** ने लिखा है, कि *''यदि ज्ञान प्रदान करने में इस क्रम का अनुसरण नहीं किया गया तो बालक शब्दों के अतिरिक्त और कुछ नहीं सीख पायेगा और शीघ्र ही उसे विषय से घृणा व अरुचि हो जायेगी।''* परंतु इस सम्बन्ध में यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि सरल बालक के दृष्टिकोण से हो न कि शिक्षक के, क्योंकि जो बात बालक के दृष्टिकोण से कठिन है, हो सकता है कि शिक्षक के दृष्टिकोण से सरल हो।

(iii) **विशिष्ट से सामान्य की ओर**–इस शिक्षण सूत्र को **आगमन से निगमन की ओर** भी कहा जाता है। इसके माध्यम से छात्र किसी भी सैद्धान्तिक विषय का निर्माण कर एक नियम तैयार कर लेते हैं। यह नियमीकरण उन्हें अध्ययन में सहजता एवं सरलता प्रदान करता है। **एक अच्छा शिक्षक अपने शिक्षण का प्रारंभ आगमन से करके निगमन में समाप्ति का संकेत देता है।** इस शिक्षण सूत्र को **उदाहरण से नियम की ओर** भी कहते हैं।

(iv) **पूर्ण से अंश की ओर**–यह एक नैसर्गिक प्रवृत्ति है कि बालक प्रथमत: समग्र वस्तु का दर्शन करता है, तद्नन्तर उसके विभिन्न भागों, प्रभागों एवं उपभेदों को जानता है। अत: ज्ञान प्रदान करने की रीति में पहले पूर्ण वस्तु पर ध्यान दिया जाता है, पश्चात् वस्तु विशेष के उस अंश या हिस्से पर अवधान केन्द्रित होता है।

(v) **अप्रत्यक्ष से प्रत्यक्ष की ओर**–बालक के सामने उपस्थित प्रत्यक्ष साधनों अथवा वस्तुओं के बारे में उसे बतलाकर तद्उपरान्त अप्रत्यक्ष साधनों के माध्यम से ज्ञान प्रदान करना चाहिए। इसका मूल कारण यह है कि प्रत्यक्ष साधनों के द्वारा बालक शीघ्र विषय को समझ लेता है। द्वितीय मत यह है कि **प्रत्यक्ष ज्ञान के माध्यम से** बालक पूर्व में अपना विश्वास बना लेता है।

(vi) **स्थूल से सूक्ष्म की ओर**–सामान्यत: सभी छात्रों को स्थूल वस्तुओं का ज्ञान होता है। यह ज्ञान वस्तु के दर्शन में निहित होता है। स्थूल ज्ञान के उपरान्त वस्तु के सूक्ष्म अवयवों का परिचय प्राप्त किया जाता है। इसका दूसरा नाम **'मूर्त से अमूर्त'** की ओर शिक्षण है। कठिन विषयों के स्पष्टीकरण के लिए शिक्षक जब यही मार्ग अपनाता है तब सूक्ष्म का प्रयोग स्थूल के उपरान्त होता है।

(vii) **विश्लेषण से संश्लेषण की ओर**–शिक्षण कार्य के दौरान विश्लेषण एवं संश्लेषण दोनों की ही आवश्यकता होती है। विश्लेषण से संश्लेषण की क्रिया में वस्तु का पहले अध्ययन किया जाता है। इसके उपरान्त प्रत्येक तत्व व अवयव के अध्ययन पर बल दिया जाता है। विश्लेषण का तात्पर्य तत्वों को संयोजित करके पुन: उनका विभाजन करना है। उसी प्रकार संश्लेषण से आशय अवयवों का परस्पर सम्बन्ध कायम करना है।

(viii) **अनिश्चित से निश्चित की ओर**–प्रारम्भिक अवस्था के दौरान बालक का ज्ञान अनिश्चित और अस्पष्ट होता है। इसी शिक्षण सूत्र के आधार पर शिक्षक उनके ज्ञान को धीरे-धीरे पुष्पित और पल्लिवित करता है। इस प्रकार के ज्ञान के द्वारा छात्र कालांतर में प्रौढ़ हो जाते हैं।

(ix) **अनुभव से तर्क की ओर**–बालक देखकर और अनुभव करके ज्ञान प्राप्त करता है। देखने से जो अनुभव उसके मस्तिष्क से संचित होता है, वह तर्कशक्ति को बढ़ाने में बालक की मदद करता है। ***'हरी घास पर क्षण भर'*** नामक पाठ पढ़ाने के दौरान बालक को हरी घास का प्रत्यक्ष अनुभव होना चाहिए, तदुपरान्त वह हरी घास के गुणों को जानने का प्रयास कर सकेगा।

(x) **मनोवैज्ञानिकता से तार्किकता की ओर**–इस सूत्र के अनुसार बालक की शिक्षा को उनकी रुचियों, रुझानों आदि के अनुसार प्रारंभ करना चाहिए और जैसे-जैसे उसका ज्ञान बढ़ता जाये, वैसे-वैसे उसे तार्किक बनाइए।

➲ **शिक्षण विधियाँ व व्यूह रचना**–शिक्षण कार्य करने से पूर्व शिक्षक अपने मस्तिष्क में जो मनोरचनाएँ तैयार करता है। उनका उद्देश्य शिक्षण कार्य में सफलता प्राप्त करना होता है। इसमें वह विभिन्न प्रकार के तथ्य एवं विचार सम्मिलित करता है। इसे व्यूह रचना कहते हैं। एक सफल शिक्षक व्यूह रचना करते समय निम्न प्रतिमानों का ध्यान रखता है–

1. सूचना प्रक्रम 2. अग्रिम संगठन प्रतिमान 3. पृच्छा प्रतिमान 4. सहगामी अधिगम

☞ **शिक्षण कार्य कला तथा विज्ञान दोनों हैं।** वर्तमान में **बाल केन्द्रित शिक्षा** को ध्यान में रखते हुए, एक शिक्षक को किसी भी शिक्षण विधि का चयन करते समय निम्नांकित तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए–

1. शिक्षण विधि शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक होनी चाहिए।
2. वैज्ञानिक दृष्टिकोण से युक्त वैज्ञानिक विधि का ही प्रयोग हो।
3. शिक्षण विधि मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को पालन करने वाली हो अर्थात् विद्यार्थी की योग्यता, उसका स्तर, रुचि तथा उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करती हो।
4. समस्त विधियाँ बाल-केन्द्रित हों अथवा प्रजातान्त्रिक नियमों पर आधारित हो अर्थात् शिक्षक एक तानाशाह के रूप में अपना ज्ञान विद्यार्थियों पर नहीं थोपे।
5. शिक्षण विधि, क्रियाशीलता पर आधारित हो अर्थात् फ्रॉबेल के **'करके सीखने'** (Learning by Doing) के सिद्धान्त पर आधारित हो।
6. शिक्षण विधि द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास अर्थात् **संवेगात्मक, भावात्मक व क्रियात्मक** तीनों पक्षों का समुचित विकास हो।
7. शिक्षण विधियाँ सहायक सामग्री का समुचित उपयोग करें। **'सहायक सामग्री'** (Audio-Visual Aids) के प्रयोग से बालकों कि सभी ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग होता है, जिससे **बालक का ज्ञान स्थायी** हो जाता है।

➲ **शिक्षण विधियाँ**–शिक्षा मनोविज्ञान में आज अनेक विधियाँ प्रचलित हैं जिनको निम्नलिखित विभागों में विभाजित किया जा सकता है–

☞ **परम्परागत विधियाँ**–इसके अन्तर्गत **पाठ्यपुस्तक पद्धति** को रखा जाता है। इस विधि में पाठ्यपुस्तक को परम्परागत रूप से एक साधन के रूप में प्रयोग किया जाता है।

☞ **शिक्षक केन्द्रित विधियाँ**–इसके अन्तर्गत **व्याख्यान पद्धति** तथा **कहानी पद्धति** आदि को रखा जाता है। इनमें **शिक्षक की भूमिका** प्रधान होती है, जिसमें बालक एक निष्क्रिय मूक श्रोता के रूप में होता है। आज के मनोवैज्ञानिक युग में **इन विधियों को नकार** दिया गया है।

☞ **बालक केन्द्रित विधियाँ**–इन विधियों में **बालक की भूमिका प्रमुख** होती है और शिक्षक एक मार्गदर्शक एवं वातावरण के निर्माता के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करता है। इन विधियों में **बालक सक्रिय होकर सीखता** है। इन विधियों के अन्तर्गत **योजना विधि, समस्या समाधान विधि, प्रयोगशाला विधि, विचार-विमर्श विधि, निरीक्षित या पर्यवेक्षित अध्ययन विधि** आदि को रखा जाता है।

☞ आधुनिक मनोवैज्ञानिक युग में शिक्षा बालक को शिक्षण एवं सीखने की प्रक्रिया में प्रमुख स्थान प्रदान करने का समर्थन करती है, **अतः इन कारणों से इन बालक प्रधान विधियों को आधुनिक विधियों** की भी संज्ञा दी गई है।

प्रमुख शिक्षण विधियाँ

- ◈ किंडर गार्टन विधि
- ◈ समस्या समाधान विधि
- ◈ विवेचन विधि
- ◈ व्याख्यान विधि
- ◈ मस्तिष्क उद्वेलन विधि
- ◈ दत्तकार्य विधि
- ◈ समवाय विधि
- ◈ प्रयोगशाला विधि
- ◈ डाल्टन विधि
- ◈ सुकराती (प्रश्नोत्तर) विधि
- ◈ पाठ्यपुस्तक विधि
- ◈ ह्यूरिस्टिक विधि
- ◈ प्रदर्शन विधि
- ◈ बुनियादी विधि
- ◈ पर्यवेक्षित अध्ययन विधि
- ◈ मान्टेसरी या साहचर्य विधि
- ◈ योजना विधि

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या-2005

☞ **NCF-2005 अर्थात् National Curriculum Framework-2005** के प्रारम्भिक अध्याय में देश की आजादी के बाद किये गये पाठ्यचर्या में जितने भी सुधार हुए है उनके प्रयासों की चर्चा की गई है। संशोधित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या दस्तावेज का प्रारम्भ प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री नोबल पुरस्कार विजेता तथा राष्ट्रीय गान के निर्माता **'रवीन्द्रनाथ टैगोर'** के निबंध **'सभ्यता और प्रगति'** के एक उद्धरण से होता हे।

☞ **NCF-2005** अर्थात् राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा हेतु **प्रोफेसर यशपाल के नेतृत्व** वाली एक राष्ट्रीय संचालन समिति ने **21 राष्ट्रीय फोकस के समूहों का गठन** किया गया। इसमें उच्च शिक्षा संस्थानों के प्रतिनिधि, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् के अकादमिक सदस्य, गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि, विद्यालयों के अध्यापक आदि को सदस्यों के रूप में बुलाया गया अथवा शामिल किया गया।

☞ राष्ट्रीय पाठ्यचर्या को शिक्षा की राष्ट्रीय व्यवस्था विकसित करने का एक साधन होना चाहिए जो भारतीय संविधान में राष्ट्रीय के **'दर्शन'** को अपनी आधार भूमि मानते हैं।

☞ अभिभावकों को संतुष्टि प्रदान करने हेतु।

NCF-2005 का मुख्य सूत्र = *Learning without burden*

➲ **NCF-2005 के शिक्षा सम्बन्धी सुझाव**

☞ **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005** के प्रथम अध्याय में शिक्षा सम्बन्धी निम्नलिखित कमियों व सुझावों को सम्मिलित किया गया है-

☞ प्राय: यह देखा जाता है कि अगर विद्यार्थियों को निष्क्रय रहने को मजबूर न किया जाये तो आदान-प्रदान में शिक्षक भी कुछ न कुछ अवश्य सीखता है क्योंकि बड़ों के मुकाबले में बच्चों की अवलोकन क्षमता तथा अनुभूति में अधिक गहराई मिलती है। अत: ज्ञान के सृजन के रूप में उनकी सम्भावनाओं की हमें अधिक कदर करनी चाहिए।

☞ शिक्षा किसी प्रकार की कोई भौतिक वस्तु नहीं है जिसको अध्यापक या डाक के जरिये कहीं पहुँचा दिया जाए।

☞ प्राय: हमें यह सुनने को मिलता है कि उर्वरक तथा ऊर्जादायी शिक्षा की जड़े सदैव ही बालकों की भौतिक एवं सांस्कृतिक जमीन में गहरे पैठे में होती है तथा उन्हें सहपाठियों व समुदायों के साथ पारस्परिक क्रियाओं से पोषण मिलता है।

☞ ज्ञान के सृजन में सदैव ही पारस्परिकता अंतर्निहित होती है। इनमें कोई शंका नहीं है।

➲ **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या-2005 में शिक्षा सम्बन्धी उद्देश्य**

1. बालकों में विचार तथा कर्म की स्वतंत्रता देने का उद्देश्य।
2. दूसरों की भलाई के प्रति तत्परता।
3. लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी की प्रवृत्ति।
4. नवीन परिस्थितियों से सामना करने की क्षमता विकसित करना।
5. बालकों को सामाजिक बदलाव के लिए तत्पर रखना।

➲ **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या-2005 के पाँच सिद्धान्त**

1. बालकों की परीक्षा प्रणालियों को लचीलेपन से युक्त करना तथा कक्षागत गतिविधियों से जोड़ना।
2. बालकों के सम्पूर्ण ज्ञान को विद्यालय/पाठशाला के बाहरी जीवन से जोड़ना।
3. बालकों की शिक्षण प्रक्रिया रटन्त पद्धति से मुक्त होनी चाहिये।
4. बालकों का चहुँमुखी विकास पर आधारित पाठ्यचर्या हो।
5. बालक में एक ऐसी अधिभावी पहचान का विकास हो जिसमें प्रजातांत्रिक राज्य व्यवस्था के अन्तर्गत राष्ट्रीय समस्याएँ शामिल हो।

➲ **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 की शिक्षण अधिगम की नवीन विधियाँ**

1. मिश्रित विधि
2. परीक्षण करके सीखने वाली विधि
3. करके सीखने वाली विधि
4. सामूहिक विधि
5. निरीक्षण करके सीखना

मापन व मूल्यांकन

☞ मापन से हमारा तात्पर्य मानसिक मापन से लिया जाता है। प्राय: मापन मूल्यांकन का ही एक अंग माना जाता है। अत: मूल्यांकन के लिए मापन आवश्यक माना जाता है। निम्न परिभाषाओं से हम मापन को जान सकते है।

☞ **क्लासमेयर एवं गुडविन** के अनुसार, ''शैक्षिक मापन विद्यार्थी अधिगम, शिक्षण प्रभावशीलता या किसी अन्य शैक्षिक पक्ष की मात्रा, विस्तार और कोटि के निर्धारण से सम्बन्धित है।''

☞ **कारलिंगर** के अनुसार, ''मापन, नियमानुसार वस्तुओं या घटनाओं को संख्या प्रदान करना है।''

➲ **मापन के क्षेत्र**

1. बुद्धि परीक्षण 2. उपलब्धि परीक्षण 3. अभिक्षमता परीक्षण 4. रुचि परीक्षण 5. व्यक्तित्व परीक्षण

➲ **मूल्यांकन का तात्पर्य**–यह पता लगाना कि कोई वस्तु मात्रा में कितनी अधिक या कितनी कम है, कितनी बड़ी है या छोटी। यह बात हर प्रकार के मूल्यांकन के सम्बन्ध में कहीं जा सकती है चाहे आप गेहूँ का एक बोरा तोल रहे हों या कक्षा में बालकों की योग्यता का मूल्यांकन कर रहे हो। गेहूँ के बोरे को तो आप क्विंटल या किलोग्राम में तोल लेते है, परन्तु योग्यता का मूल्यांकन करने के लिए हमें एक परीक्षण में प्राप्त अंकों की ओर देखना पड़ता है।

☞ **दूसरे शब्दों में हम मूल्यांकन का अर्थ मूल्य निर्धारण से हैं। अर्थात् सीखने के अनुभवों से बालक में जो व्यवहारगत परिवर्तन हुए है उनका परीक्षण करना, निर्णय लेना या निष्कर्ष निकालना ही मूल्यांकन है।**

मूल्य + अंकन = मूल्यांकन

☞ **थॉर्नडाइक** का कहना है कि, ''जिस वस्तु का भी अस्तित्व है, उसका किसी-न-किसी मात्रा में अस्तित्व होता है और जो कुछ भी किसी मात्रा में उपस्थित है, उसे मापा जा सकता है।''

☞ **जैरीलीमेक** के अनुसार, ''मूल्यांकन वह पद्धति है जिसके द्वारा हम पूर्व निर्धारित उद्देश्यों, ध्येयों तथा लक्ष्यों की प्राप्ति की मात्रा को निर्धारित करते हैं। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा शिक्षण के मूल्यों तथा उद्देश्यों के मध्य तुलना की जाती है।''

☞ **कोठारी कमीशन** के अनुसार, ''मूल्यांकन एक क्रमिक प्रक्रिया है जो कि सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक अंग है, जो शिक्षा के उद्देश्यों से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है।''

➲ **मूल्यांकन की भूमिका**–अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में मूल्यांकन की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। नए उद्देश्यों को तय करने, अधिगम अनुभव प्रस्तुत करने और विद्यार्थी की संप्राप्ति की जाँच करने में मूल्यांकन-अधिगम काफी योगदान देता रहता है। इसके अतिरिक्त शिक्षण और पाठ्य विवरण सुधारने में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

1. **शिक्षण**–मूल्यांकन से शिक्षण विधियाँ, शिक्षण तकनीकें आदि कितनी प्रभावित हुई हैं, यह पता लग सकता है। इससे अध्यापकों को अपने अध्यापन और अध्येताओं को अपने सीखने के बारे में पता चल सकता है।
2. **पाठ्यचर्या**–मूल्यांकन की सहायता से पाठ्य पुस्तकों व विषय-सामग्री में सुधार लाया जा सकता है।
3. **समाज**–मूल्यांकन से बाजार की माँग और आवश्यकता के अनुरूप समाज के प्रति उत्तरदायित्व का हिसाब पता चलता है।
4. **अभिभावक**–मूल्यांकन के द्वारा अभिभावाकों को अपने बच्चों के प्रगति का विवरण स्पष्ट रूप से मिल जाता है।

इन सभी लाभों से, शिक्षा की कार्यप्रणाली के लिए मूल्यांकन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इससे शिक्षा के अनेक उद्देश्य पूरे होते हैं। जैसे–गुणवत्ता पर नियंत्रण, उच्च कक्षा में प्रवेश, अन्य क्षेत्रों के चयन में सहायता। मूल्यांकन की सहायता से भविष्य के विषय में सोचना और निर्णय लेना सरल हो जाता है। इन सब से यह निर्णय करने में दिशाज्ञान आसान हो जाता है, कि ***'छात्र को भविष्य में कौन-सा कोर्स लेना चाहिए अथवा कौन-सा पेशा अपना चाहिए।'***

➲ **अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया और मूल्यांकन**

शैक्षिक प्रक्रिया के **तीन मुख्य बिंदु हैं–उद्देश्य, अधिगम-अनुभव क्रियाएँ और विद्यार्थी का मूल्य निर्धारण**। शैक्षिक प्रक्रिया को सामान्य रूप से इस चित्र के माध्यम से समझा जा सकता है–

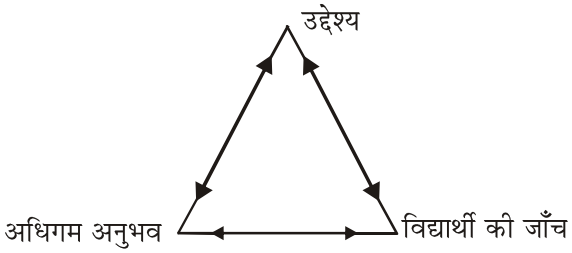

☞ **उद्देश्य** यह निर्धारित करते हैं कि विद्यार्थी को कौन से वांछित व्यवहार को प्राप्त करने की दिशा में चलना चाहिए। **अधिगम अनुभव** वे क्रियाएँ और अनुभव हैं जो वांछित व्यवहार प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी को करने चाहिए। विद्यार्थियों में उल्लेखनीय अधिगम होने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षण प्रभावी हो। विद्यार्थियों में विषय सामग्री के अधिक आदान-प्रदान के लिए अध्यापक उचित विधियों और माध्यम को अपनाएँ। इस प्रकार प्रभावशाली अध्यापन वही है जो ज्ञान को उचित और सफल अधिगम अनुभवों की ओर ले जाए।

☞ अध्यापन के अतिरिक्त शैक्षिक अनुभव प्राप्त करने के लिए और भी साधन अपनाए जा सकते हैं। जैसे–लाइब्रेरी, प्रयोगशाला, रेड़ियो, फिल्में, विज्ञान क्लब और भ्रमण जैसे या अन्य वास्तविक जीवन से सम्बन्धित सीखने की परिस्थितियाँ।

➲ **मूल्यांकन की विशेषताएँ**–एक अच्छे मूल्यांकन की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

1. **वैधता**–वैधता का अर्थ, मूल्यांकन की वह मात्रा है जहाँ उसकी **शुद्धता, योग्यता, विशेषता** या **तथ्य का मापन** करता है जिसके लिए उसकी रचना की गयी है। मूल्यांकन की वैधता के निर्धारण करने के लिए कसौटी का चुनाव करना पड़ता है। कोई भी मूल्यांकन तथ्य तभी वैध माना जाता है, जब वह विश्वसनीय भी होगा। यदि उसकी विश्वसनीयता **शून्य** है, तो उसे किसी अन्य परीक्षण से सह-सम्बन्धित नहीं किया जा सकता।
2. **विश्वसनीयता**–विश्वसनीयता परीक्षण का वह गुण है जिसके कारण हम परीक्षण पर विश्वास करते हैं और विश्वास इसलिए करते हैं क्योंकि वह उसी तथ्य का समानता से मापन करती है जिसके माप हेतु वह परीक्षण निर्मित हुआ था।
3. **व्यावहारिकता**–प्रयोग की स्थिति, लिये गये समय, लागत की दृष्टि से मूल्यांकन को वास्तविक, व्यावहारिक और ठीक होना चाहिए। कोई मूल्यांकन आदर्शात्मक हो सकता है, परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि वह व्यावहारिक हो।
4. **पक्षपातरहित**–सभी छात्रों के लिए मूल्यांकन पक्षपातरहित होना चाहिए। मूल्यांकन की स्पष्टता बनाये रखने के लिए छात्रों को यह ज्ञात होना आवश्यक है कि मूल्यांकन किस प्रकार किया जा रहा है। मूल्यांकन में प्रयोग होने वाली सामग्री, परीक्षा का रूप एवं रचना, परीक्षा की अवधि और कोर्स के प्रत्येक अवयव आदि की उन्हें जानकारी होनी चाहिए।
5. **उपयोगिता**–मूल्यांकन छात्रों के लिए उपयोगी होना भी आवश्यक है। इससे छात्रों को प्रतिपोषण मिलना चाहिए और उनकी वर्तमान क्षमता और कमजोरियों में भी सुधार होना चाहिए।

➲ **मूल्यांकन की आवश्यकता**–हम जो कुछ भी शिक्षा देते है, उसके कुछ उद्देश्य होते हैं। उद्देश्य जितने स्पष्ट रूप में होते हैं, उतनी सफलता हमें शिक्षा देने में मिलती है। इसी प्रकार किसी विषय को पढ़ाने में जो हमारा प्रयोजन होता है, उसे हमें पूर्णरूप से समझना आवश्यक होता है। प्रयोजन बनाकर या उद्देश्य समझ कर हम शिक्षा दे सकते हैं, परन्तु उद्देश्य अथवा प्रयोजन किस सीमा तक हम अपने शिक्षण द्वारा प्राप्त करने में सफल होते हैं। इसके लिए विद्यार्थी द्वारा ग्रहण की हुई शिक्षा का मूल्यांकन आवश्यक है।

1. मूल्यांकन द्वारा शिक्षा के उद्देश्य किस सीमा तक प्राप्त हो चुके हैं, इसका पता लगता है।
2. विभिन्न विषयों में जो प्रयोजन हमारे सम्मुख आते है, उनकी प्राप्त की हुई सीमा भी हमें मूल्यांकन द्वारा पता लगती है।
3. कक्षा-शिक्षण में जो अनुभव प्रदान किए गये, वे कितने प्रभावशाली थे, इसका भी परीक्षण मूल्यांकन द्वारा होता है।

➲ **मूल्यांकन के उद्देश्य**–मूल्यांकन के निम्नलिखित उद्देश्य माने जाते हैं-

1. मूल्यांकन का प्रथम उद्देश्य बालकों के संर्वागीण विकास को गति प्रदान करने में सहायक।
2. अध्यापकों की कुशलता व सफलता का मापन मूल्यांकन के द्वारा ही संभव है।
3. शैक्षिक उद्देश्यों में स्पष्टता लाने हेतु।
4. वैज्ञानिक मूल्यांकन एवं शैक्षिक उद्देश्यों के संशोधन में सहायक।
5. विद्यार्थियों के वर्गीकरण हेतु मूल्यांकन की महत्ता।
6. विद्यार्थी की कठिनाइयों, विफलताओं एवं सफलताओं का निर्धारण करना तथा दोषों को दूर करना।
7. मूल्यांकन शिक्षा पाठ योजना के पुनरावलोकन, पुनर्गठन के विकास में सहायक।

➲ **मापन तथा मूल्यांकन में अन्तर**

1. मापन का ज्ञान अपूर्ण है जबकि मूल्यांकन का ज्ञान पूर्ण है।
2. मापन के लिए उद्देश्य जानना आवश्यक है जबकि मूल्यांकन उद्देश्य पर आधारित होता है।
3. मापन में सार्थक भविष्यवाणी नहीं की जा सकती जबकि मूल्यांकन में संभव है।
4. मापन में किसी एक गुण अथवा चर का मापन किया जा सकता है जबकि मूल्यांकन में व्यापक क्षेत्र का मापन किया जाता है।
5. मापन में समय, धन, श्रम कम लगता है जबकि मूल्यांकन में ये सब अधिक लगते हैं।

RTE-2009

- 6-14 वर्ष के सभी बालक-बालिकाओं को नि:शुल्क व अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने हेतु भारतीय संसद में एक कानून बनाया गया जिसे **शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009** के रूप में **राज्य सभा द्वारा 20 जुलाई, 2009 को पारित** किया गया तथा **लोकसभा द्वारा 4 अगस्त, 2009 को 'द् राइट ऑफ चिल्ड्रन टू फ्री एण्ड कंपलसरी एजुकेशन बिल'** पारित किया गया।
- इस **अधिनियम के तहत** संविधान के **अनुच्छेद 21-ए** के अन्तर्गत **बच्चों को नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के मूल अधिकार को क्रियान्वयन का प्रावधान** किया गया।
- **निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम 1 अप्रैल, 2010 से सम्पूर्ण देश में लागू किया गया - जम्मू कश्मीर को छोड़कर।**
- भारत **'शिक्षा'** को बच्चों के लिए मौलिक अधिकार के रूप में घोषित करने वाला **विश्व का 135वाँ देश** है। राजस्थान राज्य में धारा-38 का लाभ उठाते हुए वर्ष-2011 में 29 मार्च को नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम के रूप में लागू किया गया।
- **शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के अन्तर्गत विद्यालयों एवं अध्यापकों के संबंध में प्रावधान**
- **धारा 3 के अन्तर्गत** सभी बच्चों को **अनिवार्यत: प्रारम्भिक शिक्षा प्रदान** की जाती है। किसी भी बच्चे से कोई शुल्क अथवा राशि नहीं ली जायेगी।
- **धारा 4 के अन्तर्गत** चिह्नित शाला से बाहर बच्चों को सर्वप्रथम उनकी आयु के अनुरूप कक्षा में दर्ज कराया जायेगा।
- **धारा 5 के अन्तर्गत** बालकों द्वारा विद्यालय छोड़ने पर उसे स्थानान्तरण प्रमाण पत्र तुरन्त प्रदान करने का दायित्व शाला/विद्यालय के प्रधानाध्यापक का होगा।
- **धारा 14 (2) के अन्तर्गत** जन्म प्रमाण पत्र नहीं होने पर भी किसी भी बच्चे को विद्यालय में प्रवेश से इन्कार नहीं किया जा सकता है।
- **धारा 16 के अन्तर्गत** किसी भी बच्चे को किसी कक्षा में रोका नहीं जायेगा तथा न ही शाला से बाहर किया जायेगा।
- **धारा 17 के अन्तर्गत** विद्यालय में बच्चे को शारीरिक व मानसिक रूप से प्रताड़ित नहीं किया जायेगा।
- **धारा 24 के अन्तर्गत** विद्यालय के अध्यापकों के लिए भी अधिनियम में अकादमिक उत्तरदायित्व निर्धारित किया गया है। इसकी पूर्ति न करने पर अध्यापक के विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जा सकेगी।
- **धारा 30 के अन्तर्गत** अध्यापक को बच्चे का लर्निंग रिकार्ड रखना अनिवार्य होगा।
- इस अधिनियम की अनुसूची में पठन पाठन के घण्टे भी निर्धारित किये गये जो सारणी में प्रदर्शित है।

न्यूनतम कार्य दिवस/शिक्षण के घण्टे

न्यूनतम कार्य दिवस-प्राथमिक स्तर - 200 दिवस

न्यूनतम कार्य दिवस-माध्यमिक स्तर- 220 दिवस

न्यूनतम शैक्षिक घण्टे-प्राथमिक स्तर - 800 शैक्षिक घण्टे

न्यूनतम शैक्षिक घण्टे-माध्यमिक स्तर - 1000 शैक्षिक घण्टे

- शिक्षण के लिए एक सप्ताह में न्यूनतम कार्य के 45 घण्टे होते हैं। अध्यापक को विद्यालय में बच्चों के आने के समय से एक घण्टे पहले आना एवं बच्चों के जाने के एक घण्टे बाद जाना होता है।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 के अन्तर्गत पाठ्यक्रम व मूल्यांकन

- शिक्षा प्राधिकारी, उपधारा (1) के अधीन पाठ्यक्रम और मूल्यांकन प्रक्रिया निश्चित करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

1. शिक्षा का माध्यम, जहाँ तक हो सके बालक की मातृभाषा रहेगी।
2. बालक को समझने/जानने की शक्ति तथा उपयोग करने की उसकी योग्यता का सतत् मूल्यांकन होना चाहिए।
3. बालक का सर्वांगीण विकास।
4. बच्चे के ज्ञान, अन्य शक्ति योग्यता का निर्माण करना।
5. बालक को चिन्तामुक्त बनाना।
6. बालकेन्द्रित क्रियाकलापों के प्रकटीकरण तथा खेल द्वारा शिक्षण।
7. शारीरिक व मानसिक योग्यता का विकास करना।

सृजनीशील बालक

☞ सृजनशील बालक ऐसा बालक होता है जो अनुपयोगी वस्तुओं का उपयोग करते हुए उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करता है। नवीन विचारों के प्रति जागरूक होता है तथा तत्काल प्रतिक्रियाएँ प्रस्तुत करता है। सृजनात्मकता के लिए औसत बुद्धि स्तर का होना आवश्यक है लेकिन एक प्रतिभाशाली बालक सृजनशील बालक हो ऐसा आवश्यक नही है।

☞ सृजनात्मकता सार्वभौमिक होती है। प्रत्येक बालक अपनी बाल्यावस्था में किसी न किसी प्रकार से सृजनात्मकता का प्रदर्शन करता है लेकिन इसका विकास वातावरण पर अधिक निर्भर करता है।

सृजनात्मकता बालकों की पहचानः

☞ सृजनशील बालक की पहचान निम्न व्यवहार या विशेषताओं से की जा सकती है-

1. विचारों तथा अभिव्यक्ति में मौलिकता
2. अन्वेषणात्मक तथा जिज्ञासु प्रवृत्ति
3. स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता
4. गैर-परंपरागत विचारों में रूचि
5. अभिव्यक्ति में प्रवाह
6. सृजन गौरव
7. जोखिम उठाने को तत्पर
8. अभिव्यक्ति में विविधता
9. रचनात्मक आलोचना
10. आमूल-चूल परिवर्तनवादी

सृजनशील बालकों की शिक्षाः

☞ सृजनशील बालकों को उचित शिक्षा प्रदान करके उनकी सृजनात्मकता का विकास करवाया जा सकता है तथा देश की उन्नति में योगदान दिया जा सकता है। क्योंकि सृजनशील व्यक्ति राष्ट्र की अमूल्य निधि है। सृजनात्मकता के विकास के लिए शिक्षा व्यवस्था निम्न प्रकार से की जानी चाहिए-

1. **सृजनात्मक प्रवृत्ति वाले अध्यापकों की नियुक्तिः** सृजनात्मक प्रवृत्तियों वाला शिक्षक ही बालकों में सृजनात्मकता का विकास करने में समर्थ होता है। अतः सृजनशील बालकों के लिए साहित्य, विज्ञान, कला आदि विभिन्न क्षेत्रों में तरह-तरह के सृजनात्मक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने वाले अध्यापकों की नियुक्ति की जानी चाहिए।
2. **सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए उचित अवसर एवं वातावरण प्रदान करनाः** सृजनशील बालकों में सृजनात्मक चिंतन का विकास किया जाये। बालकों को अपनी सृजनात्मकता को प्रदर्शित करने के लिए उचित अवसर प्रदान किया जाना चाहिए।
3. **कल्पना का सम्मान करना :** बालक द्वारा अभिव्यक्त किसी कल्पना का उपहास नही किया जाना चाहिए अपितु उसका सम्मान कर विकसित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। क्योंकि कल्पना एवं सृजनात्मकता में घनिष्ठ संबंध है।
4. **मौलिक एवं लचीलेपन को प्रोत्साहनः** शिक्षक द्वारा बालकों को विभिन्न नवीन कार्य करने तथा पुराने कार्यों में अपेक्षित सुधार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
5. **छात्रों को प्रतिक्रिया देने के लिए प्रोत्साहित करनाः** अध्यापकों को छात्रों के समक्ष समस्यात्मक प्रश्नों अथवा परिस्थितियों को प्रस्तुत करने उनकी प्रतिक्रियाओं को आमंत्रित करना चाहिए। छात्रों के द्वारा दिए जानेवाले मौलिक सुझावों का उचित मूल्यांकन किया जाना चाहिए।
6. **पाठ्यक्रम का उचित आयोजनः** विद्यालय में पाठ्यक्रम का आयोजन इस प्रकार किया जाये कि वह बालकों में अधिकाधिक सृजनात्मकता का विकास कर सके। सैद्धांतिक पाठ्यक्रम की अपेक्षा व्यवहारिक पाठ्यक्रम को अपनाया जाये।
7. **सृजनात्मक कार्यों से संबंधित सूचनाओं के संकलन को प्रोत्साहनः** अध्यापकों को अपने छात्रों में सृजनात्मक कार्यों से संबंधित नवीनतम सूचनाओं को संकलित करने की प्रवृत्ति विकसित करनी चाहिए। साथ ही छात्रों को इस हेतु प्रर्याप्त अवसर एवं सुविधायें भी उपलब्ध करवानी चाहिए।

वंचित एवं अलाभान्वित बालक

☞ प्रत्येक बालक को अपनी सर्वांगीण विकास करने के लिए उचित सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक वातावरण की आवश्यकता होती है, इस वातावरण के अभाव में कोई भी बालक अपना सर्वांगीण विकास कर पाने में असमर्थ होता है।

☞ वंचित बालकों का अभिप्रार्य उन बालकों से है जो सामाजिक एवं आर्थिक पिछड़े वर्ग से जुड़े हुए है। इन बालकों में दूर-दराज के अनुसूचित जातीय, जनजातीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों के बालक शामिल है जिन्हें शहरों के बालको के समान शैक्षिक सुविधायें उपलब्ध नही हो पाती है। इस प्रकार के बालकों में वे बालक भी शामिल होते है जो ग्रामीण एवं कच्ची बस्तियों के गैर-सुविधायुक्त विद्यालयों में अध्ययनरत है। इस प्रकार पारिवारिक वातावरण एवं संस्थागत वातावरण इन बालकों की शैक्षिक न्यूनताओं को और बढ़ा देता है।

☞ निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि वंचित वर्ग के बालक वे बालक है जिन्हे सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवेश से जुड़े आवश्यक एवं अपेक्षित अनुभव उद्दीपक नही मिलते, जिसके परिणामस्वरूप ऐस बालकों का वांछित विकास नही हो पाता है।

वंचित बालकों की पहचानः

☞ वंचित एवं अलाभान्वित बालक निम्न प्रकार का व्यवहार प्रदर्शित करते है जिसके द्वारा इनकी पहचान की जा सकती है-

1. अल्प भाषात्मक विकास
2. बाहरी दुनिया एवं उसमें होनेवाले परिवर्तनों के प्रति अनभिज्ञ एवं उदासीन
3. निम्न अभिव्यक्ति स्तर
4. निम्न स्तरीय शैक्षिक उपलब्धि
5. वाचन एवं अधिगम संबंधी निर्योग्यतायें
6. रूढ़ीवादी, निराशावादी, शर्मीले एवं अन्तर्मुखी
7. पूर्वाग्रह से ग्रसित
8. पहल शक्ति का अभाव
9. चिंता एवं भय की अधिक मात्रा
10. निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर
11. शिक्षा के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति

वंचित एवं अलाभान्वित बालकों की शिक्षाः

☞ वंचित एवं अलाभान्वित बालकों के व्यवहार एवं विशेषताओं से इनकी शिक्षा हेतु दिशा प्राप्त होती है। इनकी वंचना को दूर करने के लिए निम्न प्रकार की शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिए-

1. अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में संशोधन
2. भाषा संवर्धन कार्यक्रम
3. शिक्षा के उद्देश्यों का जीवन से जुड़ाव
4. अभिभावकों की शिक्षा
5. अनुदेशन कार्यक्रमों का आयोजन बालकों की आवश्यकताओं एवं योग्यताओं के अनुरूप।
6. पर्याप्त अभ्यास कार्य।
7. त्वरित अधिगम कार्यक्रम
8. अधिगम सामग्री का प्रतिमाओं व सहायक सामग्री के द्वारा प्रस्तुतीकरण।
9. वंचित वर्ग के बालकों की जीवन शैली में परिवर्तन।
10. कक्षा के सामाजिक-भावात्मक वातावरण में परिवर्तन।

☞ उपरोक्त कदम उठा कर वंचित बालकों को उचित सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक वातावरण उपलब्ध करवाया जा सकता है तथा उनके सर्वांगीण विकास को सही दिशा प्रदान की जा सकती हैं

अधिगम की कठिनाईयाँ

☞ प्रभावशाली अधिगम का मुख्य आधार अभिप्रेरणा होता है। अभिप्रेरणा प्रदान कर शिक्षार्थियों को अधिगम के लिए तैयार किया जाता है। अधिगम प्रक्रिया में कुछ तत्व या कारक बाधा उपस्थित करते है जिन्हें अधिगम अवरोधक या अधिगम कठिनाईयाँ कहा जाता है। यह प्रमुख अवरोधक निम्न प्रकार से है-

1. **अभिप्रेरणा की अनुपस्थितिः** अभिप्रेरणा का अभाव होने पर अधिगम प्रक्रिया में अवरोध आ जाता है क्योंकि अभ्रिपेरणा ही है जो बालक को सीखने के लिए गतिमान बनाती है।

2. **सीखने की परिस्थिति** : सीखने की परिस्थिति का अभिप्रार्य उचित वातावरण एवं साधन सामग्री से है जिसके अभाव में अधिगम कठिन हो जाता है।
3. **उद्देश्यहीनता** : उद्देश्यों की स्पष्टता होनेपर अधिगम सही गति एवं सही दिशा में होता है, इसके विपरीत उद्देश्यहीनता होने पर अधिगम दिशा विहीन हो जाता है।
4. **शिक्षक की अदूरदर्शिता** : दूर दृष्टि रखने वाला शिक्षक ही सफल शिक्षण करवाने में समर्थ होता है। वह छात्रों को बदलते परिदृश्य के अनुसार शिक्षा प्रदान करता है, जबकि अदूरदृष्टि रखने वाला परंपरागत शिक्षण करवाता है।
5. **परिणाम से परिचित न करवानाः** शिक्षार्थी अधिगम में तभी सक्रिय रूप से भाग लेते है जब उन्हें परिणाम की जानकारी होती है। परिणाम की जानकारी के अभाव में वे अधिगम के प्रति गंभीर नही होते है।
6. **अव्यवहारिकताः** शिक्षण या अधिगम जब जीवन से जुड़ा होता है तो शिक्षार्थी सक्रिय रूप से भाग लेते है, जबकि अव्यवहारिक एवं सैद्धांतिक होने पर अधिगम बोरियत पैदा करता है।

क्रियात्मक अनुसंधान

☞ अनुसंधान एक प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य मौलिक समस्याओं का अध्ययन करके नवीन तथ्यों की खोज करना, जीवन सत्य की स्थापना करना तथा नवीन सिद्धान्तों का प्रतिपादन करना है। अनुसंधान एक सोद्देश्य प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मानव ज्ञान में वृद्धि की जाती है।

☞ **रेड़मेन एवं मोरी** ने अनुसंधान को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है– ''नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिये व्यवस्थित प्रयास की अनुसंधान है।''

क्रियात्मक अनुसंधान का अर्थ एवं परिभाषाएँ–

क्रियात्मक अनुसंधान का अर्थ हैः

☞ विद्यालय से संबंधित व्यक्तियों द्वारा अपनी और विद्यालय की समस्याओं का वैज्ञानिक अध्ययन करके अपनी क्रियाओं और विद्यालय की गतिविधियों में सुधार लाना।

☞ **उदाहरणार्थः–** क्रियात्मक अनुसंधान से निरीक्षक अपने प्रशासन में प्रबन्धक विद्याालय की व्यवस्था में प्रधानाचार्य अपने विद्यालय के संचालन में और शिक्षक अपने शिक्षण कार्य में सुधार ला सकते हैं।

क्रियात्मक अनुसंधान के संबंध में कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्न प्रकार है–

1. **स्टीफेन एम. कोरे** के अनुसार, ''शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान, कार्यकत्ताओं द्वारा किया जानेवाला अनुसंधान है ताकि वे अपने कार्यों में सुधार कर सकें।''
2. **मेक ग्रेथटे** के अनुसार, ''क्रियात्मक अनुसंधान व्यस्थित खोज की क्रिया है जिसका उद्देश्य व्यक्ति समूह क्रियाओं में रचनात्मक सुधार तथा विकास लाना है।''
3. **रिसर्च इन एज्यूकेशन** के अनुसार, ''क्रिया अनुसंधान वह अनुसंधान है, जो एक व्यक्ति अपने उद्देश्यों को अधिक उत्तम प्रकार से प्राप्त करने के लिए करता है।''
4. **गुड़** के अनुसार, ''क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षकों, निरीक्षकों और प्रशासकों द्वारा अपने निर्णयों और कार्यों की गुणात्मक उन्नति के लिए प्रयोग किया जानेवाला अनुसंधान है।''
5. **मौले** के अनुसार, ''शिक्षक के समक्ष उपस्थित होनेवाली समस्याओं में से अनेक तत्काल ही समाधान चाहती है। मौके पर किये जानेवाले ऐसे अनुसंधान जिसका उद्देश्य तात्कालिक समस्या का समाधान होता है, शिक्षा में साधारणतः क्रियात्मक अनुसंधान के नाम से प्रसिद्ध है।''

क्रियात्मक अनुसंधान का ऐतिहासिक परिदृश्यः

☞ क्रियात्मक अनुसंधान वर्तमान लोकतांत्रिक युग की देन है। इसे प्रतिपादित करने का श्रेय अमरीका को ही। क्रियात्मक अनुसंधान शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरीका में **कोलियार** द्वारा किया गया था। कोलियार के बाद **लेविन** ने 1964 में मानव–संबंधों को अच्छा करने के लिए **सामाजिक विज्ञानों** के खेत्र में क्रियात्मक अनुसंधान के प्रयोग की सिफारिश की।

☞ **अमेरीका के राइटस्टोन** ने – 'पाठ्यक्रम ब्यूरो' के कार्यों के विवरण में क्रियात्मक अनुसंधान शब्द का प्रयोग किया।

☞ इसी प्रकार **टूबा, ब्रैडी और रॉबिन्सन** ने समस्या समाधान के रूप में क्रियात्मक अनुसंधान को प्रमुखता प्रदान की।

☞ शिक्षा के क्षेत्र में क्रियात्मक अनुसंधान को स्थाई रूप से प्रतिष्ठित करने का श्रेय अमेरीका के कोलंबिया विश्वविद्यालय स्टीफेन एम. कोरे को है जिन्होंने 1953 में यह कदम उठाया। 1953 में कोरे की पुस्तक 'विद्यालय की कार्यपद्धति में सुधार करने के लिए क्रियात्मकः अनुसंधान' का प्रकाशन हुआ जिसके बाद क्रियात्मक अनुसंधान की लोकप्रियता तेजी के साथ बढ़ी।

क्रियात्मक अनुसंधान के उद्देश्य–

☞ क्रियात्मक–अनुसंधान के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है–

1. विद्यालय की कार्य प्रणाली में सुधार तथा विकास करना।
2. छात्रों तथा शिक्षकों में प्रजातन्त्र के वास्तविक गुणों का विकास करना।
3. विद्यालय के कार्य–कत्ताओं, शिक्षक, प्रधानाचार्य, प्रबन्धक तथा निरीक्षकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना।
4. विद्यालय के कार्यकर्त्ताओं में कार्य कौशल का विकास करना।
5. शैक्षिक प्रशासकों तथा प्रबन्धकों को विद्यालयों की कार्य प्रणाली में सुधार तथा परिवर्तन के लिये सुझाव देना।
6. विद्यालय की परम्परागत रूढ़िवादिता तथा यान्त्रिक वातावरण को समाप्त करना।
7. विद्यालय की कार्य प्रणाली को प्रभावशाली बनाना।
8. छात्रों के निष्पत्ति स्तर को ऊँचा उठाना।

क्रियात्मक अनुसंधान के लिए क्षेत्र–

☞ क्रियात्मक–अनुसंधान को विद्यालय की कार्य प्रणाली के अधोलिखित क्षेत्रों में प्रयोग किया जाता है–

1. कक्षा शिक्षण विधियों एवं युक्तियों में सुधार लाना है।
2. शिक्षण में प्रयुक्त होनेवाली सहायक सामग्री जिसकी उपयोगिता के संबंध में निर्णय लेने के लिये इसका प्रयोग करते हैं।
3. छात्रों की अभिरूचि, ध्यान, तत्परता तथा जिज्ञासा में वृद्धि के लिये इसे प्रयुक्त करते हैं।
4. शिक्षकों द्वारा विभिन्न विषयों में दिये जानेवाले गृहकार्यों की प्रणाली को प्रभावशाली बनाने के लिए इसे प्रयोग करते हैं।
5. छात्रों की अनुसन्धान संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए इस प्रयुक्त करते हैं।
6. भाषा शिक्षण में वर्तनी (Spelling) तथा वाचन की समस्याओं के लिये भी क्रियात्मक–अनुसंधान को प्रयुक्त किया जाता है।
7. छात्रों की अनुपस्थिति तथा विद्यालय विलम्ब से आने की समस्याओं के समाधान में इसे प्रयोग करते हैं।
8. छात्रों एवं शिक्षक संबंधी समस्याओं तथा छात्रों में परस्पर आदान–प्रदान की समस्याओं के लिये प्रयुक्त करते हैं।
9. परीक्षा में छात्रों के नकल करने की समस्याओं के समाधान में प्रयोग करते हैं।
10. विद्यालय के संगठन एवं प्रशासन से संबंधित समस्याओं के समाधान हेतु प्रयोग करते हैं।

क्रियात्मक अनुसंधान के चरण/पदः

1. **पहला सोपान : समस्या का ज्ञान :** क्रिया–अनुसंधान का पहला सोपान है– विद्यालय में उपस्थित होने वाली समस्या को भली–भाँति समझना। यह तभी संभव है, जब विद्यालय के शिक्षक, प्रधानाचार्य आदि उसके संबंध में अपने विचार व्यक्त करें। ऐसा करके ही वे वास्तविक समस्या को समझाकर अपने कार्य में आगे बढ़ सकते हैं।
2. **दूसरा सोपानः कार्य के लिए प्रस्तावों पर विचार–विमर्शः** क्रिया–अनुसंधान का दूसरा सोपान है– समस्या को भली–भाँति समझने के बाद इस बात पर विचार करना कि उसके कारण क्या हैं और उसका समाधान करने के लिए कौन–से कार्य किये जा सकते हैं। शिक्षक, प्रधानाचार्य, प्रबन्धक आदि इन कार्यों के संबंध में अपने–अपने प्रस्ताव या सुझाव देते हैं। उसके बाद वे अपने विश्वासों, सामाजिक मूल्यों, विद्यालयों के उद्देश्यों आदि को ध्यान में रखकर उप पर विचार–विमर्श करते हैं।
3. **तीसरा सोपानः योजना का चयन व उपकल्पना का निर्माणः** क्रिया–अनुसन्धान का तीसरा सोपान है– विचार–विमर्श के फलस्वरूप समस्या का समाधान करने के लिए एक योजना का चयन और उपकल्पना का निर्माण करना। इसके लिए विचार–विमर्श करनेवाले सब व्यक्ति संयुक्त रूप से उत्तरदायी होते हैं।

☞ उपकल्पना में तीन बातों का सविस्तार वर्णन किया जाता है– (अ) समस्या का समाधान करने के लिए अपनाई जानेवाली योजना, (2) योजना का परीक्षण (3) योजना द्वारा प्राप्त किया जानेवाला उद्देश्य। उदाहरणार्थ, एक उपकल्पना इस प्रकार हो सकती है– ''यदि प्रत्येक कक्षा में विभिन्न प्रकार की शिक्षण : सामग्री का प्रयोग किया जाय, तो बालकों को अधिक और अच्छी शिक्षा दी जा सकती है।''

4. **चौथा सोपानः तथ्य संग्रह करेन की विधियों का निर्माण** : क्रिया-अनुसंधान का चौथा सोपान है- योजना को कार्यान्वित करने के बाद तथ्यों या प्रमाणों का संग्रह करने की विधियाँ निश्चित करना- इन विधियों की सहायता से जो तथ्य संग्रह किये जाते हैं, उनसे यह अनुमान लगाया जाता है कि योजना का क्या प्रभाव पड़ रहा है।
5. **पाँचवाँ सोपानः योजना का कार्यान्वयन व प्रमाणों का संकलनः** क्रियाःअनुसंधान का पाँचवाँ सोपान है- निश्चित की गई योजना को कार्यान्वित करना और उसकी सफलता या असफलता के संबंध में प्रमाणों या तथ्यों का संकलन करना-योजना से सम्बन्धित सभी व्यक्ति चौथे सोपान में निश्चित की गई विधियों की सहायता से तथ्यों का संग्रह करते हैं। वे समय-समय पर एकत्र होकर इन तथ्यों के विषय में विचार-विमर्श करते हैं। इसके आधार पर वे योजना के स्वरूप में परिवर्तन करते हैं, ताकि उद्देश्य की प्राप्ति संभव हो सके।
6. **छठा सोपानः तथ्यों पर आधारित निष्कर्षः** क्रिया-अनुसंधान का छठा सोपान है- योजना की समाप्ति के बाद संग्रह किए हुए तथ्यों या प्रमाणों से निष्कर्ष निकालना।
7. **सातवाँ सोपानः दूसरों को परिणामों की सूचनाः** क्रिया-अनुसंधान का सातवाँ और अन्तिम सोपान है- दूसरे व्यक्तियों को योजना के परिणामों की सूचना देना।

गुणः

1. इससे शिक्षक अपनी कक्षा के वातावरण, अपनी कार्यप्रणाली में सुधार तथा प्रगति करता है।
2. शिक्षक शोध के पदों से परिचित होता है।
3. शिक्षकों में वैज्ञानिक-प्रवृत्ति, शोध कार्य के लिए जाग्रत लाया जाता है।
4. इसके द्वारा विद्यालय के प्रशासन में सुधार तथा परिवर्तन लाया जाता है।
5. यह विद्यालय से संबंधित व्यक्तियों की विभिन्न दैनिक समस्याओं का व्यावहारिक एवं तथ्यपूर्ण समाधान करता है।
6. यह विद्यालय को आधुनिक तथा समयानुकूल बनाने का प्रयास करता है।
7. इसके द्वारा प्राप्त निष्कर्ष व्यवहारिक रूप से काफी सफल होते हैं।

दोषः

1. यह स्थानीय महत्व का होता है। इसके निष्कर्षों का सामान्यीकरण नहीं किया जा सकता।
2. इसके निष्कर्षों का सामान्यीकरण नहीं किया जा सकता।
3. यह गुणात्मक रूप से कम महत्व का होता है।
4. क्रियात्मक अनुसंधान की प्रकृति मूलतः व्यक्तिनिष्ठ होती है।
5. शिक्षक कभी-कभी समस्या का वस्तुनिष्ठ तथा वैज्ञानिक निरीक्षण करने में असमर्थ रहता है।

अभ्यास प्रश्न

1. ''भारत का भविष्य उसकी कक्षाओं में निर्मित हो रहा है।'' यह मत किस आयोग का है?
(अ) मुदालियर आयोग (ब) सैंडलर आयोग (स) डॉ. राधाकृष्णन आयोग (द) कोठारी शिक्षा आयोग (द)

2. अध्यापक की सर्वाधिक उपयुक्त उपमा दी जा सकती है–
(अ) अभिभावक से (ब) समाज-सुधारक से (स) माली से (द) राष्ट्रनायक से (स)

3. इकाई योजना को किसमें विभक्त कर बनाते हैं?
(अ) दैनिक पाठ-योजना (ब) मासिक-योजना (स) वार्षिक योजना (द) साप्ताहिक-योजना (स)

4. प्रायोजना विधि की रूपरेखा सर्वप्रथम प्रस्तुत की थी–
(अ) किलपैट्रिक (ब) जॉन ड्यूवी (स) मोन्टेसरी (द) स्किनर (अ)

5. परम्परागत शिक्षण विधि है–
(अ) व्याख्यान विधि (ब) प्रायोजना विधि (स) पर्यवेक्षण विधि (द) खेल विधि (अ)

6. अच्छे प्रश्न-पत्र में गुण होना चाहिए–
(अ) वैधता (ब) विश्वसनीयता (स) वस्तुनिष्ठता (द) सभी (द)

7. किण्डर गार्टन पद्धति का संस्थापक कौन था?
(अ) फ्रीमैन (ब) मारिया मोन्टेसरी (स) फ्रेडरिक फ्रोबेल (द) स्टीवेन्सन (स)

8. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 की कार्यशाला आयोजित की गई–
(अ) SCERT जयपुर (ब) NHRD दिल्ली (स) NCERT नई दिल्ली (द) SCERT उदयपुर (स)

9. NCERT जोर देती है -
(अ) बाल केन्द्रित शिक्षा पर (ब) अध्यापक केन्द्रित शिक्षा पर
(स) समाज आधारित शिक्षा पर (द) व्यक्ति आधारित शिक्षा पर (अ)

10. राष्ट्रीय-पाठ्यचर्या-2005 के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण का सबसे उपर्युक्त सिद्धान्त है -
(अ) बाल केन्द्रियता का सिद्धान्त (ब) लचीला पाठ्यक्रम (स) क्रियाशीलता का सिद्धान्त (द) उपर्युक्त सभी (द)

11. पाठ्यचर्या-2005 के अनुसार अध्यापक के गुणों को वर्गीकृत किया गया है।
(अ) चार वर्गो में (ब) छः वर्गो में (स) दो वर्गो में (द) तीन वर्गो में (स)

12. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या-2005 के अनुसार अध्यापक की भूमिका है-
(अ) शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति (ब) शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाना
(स) प्रभावी मूल्यांकन (द) उपर्युक्त सभी (द)

13. शिक्षण करते समय अध्यापक को ध्यान नहीं रखना चाहिए-
(अ) छात्र-केन्द्रित शिक्षण का (ब) व्यक्तिगत विभिन्नताओं का
(स) जातिगत भेदभाव का (द) बालकों की सीखने की जाति का (स)

14. मूल्यांकन का उद्देश्य है–
(अ) निरपेक्ष (ब) सापेक्ष (स) एकांगी (द) बहुमुखी (ब)

15. किसी वस्तु या प्रक्रिया का मूल्य निश्चित करना मूल्याकंन है। ये कहा है-
(अ) क्रानबेक (ब) टारगर्सन तथा एडम्स (द) रेल्फ टॉयलर (द) कोई नहीं (ब)

16. रेल्फ टॉयलर ने मूल्यांकन को बताया है -
(अ) शैक्षिक उद्धेश्य निर्धारण की प्रक्रिया (ब) शिक्षण प्रक्रिया
(स) शैक्षिक उद्धेश्यों की प्राप्ति की सीमा निर्धारण प्रक्रिया (द) इनमें से कोई नहीं (स)

17. किंडर गार्टन पद्धति में शिक्षक की भूमिका होती है -
(अ) पथ प्रदर्शक (ब) निर्देशक (स) नियंत्रक (द) इनमें से कोई नहीं (अ)

18. सीखने का सर्वोत्तम तरीका है -
(अ) करना (ब) पढ़ाना (स) सुनना (द) देखना (अ)

19. खेल पद्धति पर आधारित शिक्षण विधि नहीं है -

(अ) डाल्टन (ब) मॉन्टेसरी (स) व्याख्यान (द) किन्डर गार्टन (स)

20. शिक्षा के क्षेत्र में क्रियात्मक अनुसंधान को व्यवहारिक बनाने का श्रेय है-

(अ) डाल्टन का (ब) फ्रोबेल का (स) जान डिवी का (द) स्टीफेन एम.कोरे (द)

21. क्रियात्मक अनुसंधान के प्रवर्तक हैं–

(अ) जॉन डब्ल्यू. वेस्ट (ब) स्टीफन एम. कोरे (स) कर्टलीविन (द) कोई नहीं (ब)

22. क्रियात्मक अनुसंधान किया जाता है -

(अ) शिक्षण कार्य करते समय (ब) शिक्षण पूर्व (स) शिक्षण उपरान्त (द) किसी भी समय (अ)

23. क्रियात्मक अनुसंधान उपयोगी है -

(अ) अध्यापकों व प्रधानाध्यापकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास में (ब) विद्यालय कार्यविधि में सुधार के लिए

(स) छात्रों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं को हल करने में (द) उपर्युक्त सभी में (द)

24. शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अन्तर्गत केन्द्र और राज्यों सरकारों के मध्य कोष का साझेदारी अनुपात है–

(अ) 25 : 75 (ब) 50 : 50 (स) 55 : 45 (द) 45 : 55 (स)

25. नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009 के अनुसार, 200 बालकों पर शिक्षकों की संख्या होगी?

(अ) 5 (ब) 4 (स) 7 (द) 2 (अ)

26. नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009 को लोकसभा में पारित किया गया-

(अ) 4 अगस्त, 2009 (ब) 6 अगस्त, 2009 (स) 3 अगस्त, 2009 (द) 5 अगस्त, 2009 (अ)

27. 25% आरक्षित सीटों पर 6-14 वर्ष के बच्चों से फीस वसूलने पर निजी स्कूलों पर जुर्माना लगेगा-

(अ) फीस का 20 गुना (ब) फीस का 15 गुना (स) फीस का 10 गुना (द) उपरोक्त में कोई नहीं (स)

28. आरईटी-2009 के तहत आम नागरिक को क्या अधिकार दिये गये हैं?

(अ) ऐसे स्कूलों की शिकायत का अधिकार जो बच्चों को शिक्षा देने से मना कर रहे है।

(ब) अध्यापकों को भला-बुरा कहने का अधिकार

(स) विद्यालय बन्द करवाने का अधिकार

(द) उपर्युक्त में कोई नहीं (अ)

29. बिना आरईटी-2009 के तहत बिना सरकारी मान्यता वाले स्कूलों के लिए क्या सजा निर्धारित है?

(अ) स्कूल बंद करना (ब) 50 हजार जुर्माना

(स) मान्यता प्रदान करना (द) पहली बार एक लाख रुपये जुर्माना (द)

30. किसी ग्रामीण या शहरी क्षेत्र में विद्यालय नहीं हैं तो बच्चों को शिक्षा की जिम्मेदारी होगी -

(अ) माता-पिता की (ब) छात्रों की स्वंय की (स) सरकार की (द) समाज की (स)

31. आरईटी-2009 के तहत अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए मानको का विकास व लागू करने का अधिकार किसे होगा?

(अ) राज्य सरकार (ब) स्थानीय निकाय (स) केन्द्र सरकार (द) कोई भी (स)

32. नवीकरण, अनुसंधान योजना निर्माण हेतु राज्य सरकार को तकनीकी व संसाधन कौन उपलब्ध करवायेगा?

(अ) स्थानीय निकाय (ब) विद्यालय (स) समाज (द) केन्द्रीय सरकार (द)

33. आरईटी-2009 के तहत सरकार के कर्तव्य है -

(अ) 6 से 14 वर्ष के प्रत्येक बालक को नि:शुल्क व अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराना।

(ब) आसपास में विद्यालय की उपलब्धता कराना

(स) सरकार धारा 4 में विनिर्दिष्ट विशेष प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध कराना

(द) उपर्युक्त सभी (द)

34. आरईटी-2009 के अनुसार विद्यालय प्राप्त अनुदान का कितना प्रतिशत नि:शुल्क व अनिवार्य शिक्षा पर व्यय करेगा?

(अ) 50% (ब) 30% (स) 25% (द) 10% (स)

35. आरईटी-2009 के अन्तर्गत प्रवेश रोकने एवं निष्कासन सम्बन्धी प्रतिषेध है।

(अ) किसी बालक की आयु का सबूत नहीं होने के कारण विद्यालय प्रवेश से वंचित नहीं किया जा सकेगा।

(ब) प्रवेश प्राप्त विद्यार्थी को किसी कक्षा में रोका नहीं जायेगा ना ही प्राथमिक शिक्षा पूरी होने तक निष्कासित किया जा सकेगा।

(स) उपरोक्त दोनों

(द) उपरोक्त में से कोई नहीं (स)

36. आरईटी-2009 में शारीरिक दण्ड एवं मानसिक उत्पीड़न का क्या प्रतिषेध है।

(अ) शारीरिक एवं मानसिक उत्पीडन पूर्ण रूप से प्रतिबंधित है। (ब) शारीरिक एवं मानसिक उत्पीडन आंशिक प्रतिबंधित है।

(स) ऐसा कोई प्रावधान नहीं है। (द) उपर्युक्त सभी सत्य है। (अ)

37. आरईटी-2009 से पूर्व प्रारम्भ विद्यालय को मान और मानकों को पूरा करने की अवधि निर्धारित की गई है –

(अ) प्रारम्भ की तारीख से 5 वर्ष (ब) प्रारम्भ की तारीख से 4 वर्ष (स) प्रारम्भ की तारीख से 3 वर्ष (द) प्रारम्भ की तारीख से 2 वर्ष (स)

38. आरईटी-2009 के तहत गठित होने वाली विद्यालय प्रबंध समिति के लिए क्या-प्रावधान है-

(अ) समिति में 3/4 सदस्य माता-पिता या संरक्षक होंगे। (ब) समिति की 50% सदस्य महिलाएँ होगी।

(स) उपरोक्त दोनों (द) दोनों में से कोई नहीं (स)

39. विद्यालय प्रबंध समिति के कार्य है-

(अ) विद्यालय के कार्यकरण को मॉनीटर करना (ब) विकास योजना तैयार करना व उसकी सिफारिश

(स) ऐसे अन्य कृत्यों का पालन करना जो विहित किये जाये (द) उपरोक्त सभी (द)

40. आरईटी-2009 के तहत अध्यापकों के कर्तव्य है -

(अ) विद्यालय में नियमित व समय पर उपस्थित होना (ब) पाठ्यक्रम संचालन और उसे पूरा करना

(स) ऐसे अन्य कर्तव्यों का पालन करना जो विहित किये जायें। (द) उपरोक्त सभी (द)

BEST OF LUCK